हिन्दी चेतना

हिन्दी प्रचारिणी सभा, कैनेडा की त्रैमासिक पत्रिका
Hindi Chetna ● Quarterly Magazine of Hindi Pracharini Sabha, Canada

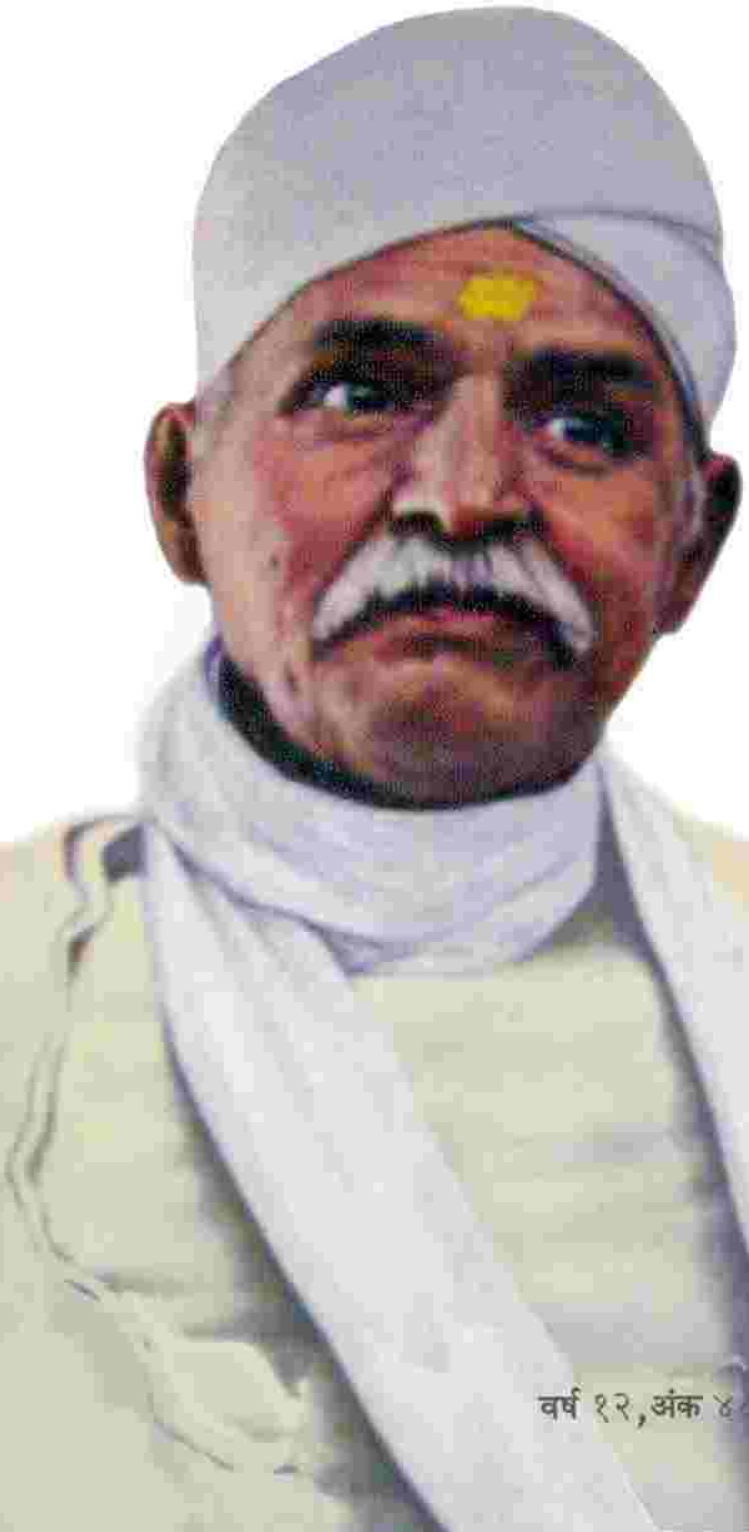

महामना मालवीय विशेषांक

वर्ष १२, अंक ४८ अक्टूबर २०१० ● Year 12, Issue 48, October 2010

जितना आप सोच सकते हैं उससे कम में अपने अपने देश के साथ जुड़ें

Bell TV के साथ , केबल से 55% से भी अधिक कम कीमत पर[1], अपने देश से भी अधिक क्रिकेट देखने को अपना लक्ष्य बना सकते हैं। इस मौसम, खेल में शामिल हो जाओ।

दक्षिण एशियाई कोम्बो

$10/MO.[2] 12 महीने के लिए

Bell TV बल्ले बाजी करने जा रहा है बड़ी विशेषताओं के साथ जैसे
. 500 से अधिक डिजिटल चैनल चुनाव के लिए अधिकाँश HD में मिलाकर
. उत्कृष्ट पिक्चर क्वालिटी नियमित केबल से 10 गुणा बेहतर
. शामिल करें चिन्ता मुक्त पूरा होम सेटप[3]

ICT North: 1 888 735-9777

Bell TV देखना अब हुआ बेहतर

Offer ends June. 30, 2010. Available where access and line of sight permit. Digital service fee ($3/mo. per account) extra. Upon early termination, price ajustment charges apply. Subject to change without notice. Taxes extra. Other conditions apply. (1) As of April. 1, 2010. Compared to Rogers' South Asian combo billed $24.95/mo. (2) With new account on a min. 2-yr. contract and subscription to South Asian combo at time of activation. Regular rates apply at the end of the promotional period. (3) Details at bell.ca/installationincluded.

इस अंक में

सम्पादकीय		03
पाती		10
स्मरण.....		
महामना का हिन्दी प्रेम	• *चन्द्रमौलि मणि*	15
महामना एक विलक्षण..	• *गिरिधर मालवीय*	19
महामना मदन मोहन...	• *ओमलता अखौरी*	23
राष्ट्रशिक्षक पंडित...	• *डॉ. चन्द्र सूद*	27
मनुष्य में पशुत्व...	• *वीरभद्र मिश्र*	31
मानस सुत अथक़...	• *वेद प्रकाश वटुक*	33
अत्यंत पवित्र था...	• *डॉ. शंकरदयाल शर्मा*	35
वे बातें, वे छवियां...	• *राजकुमारी सिन्हा*	39
वह युवक	• *गोपालदास नागर*	41
मालवीय जी और हिन्दी	• *डॉ. दिग्विजय सिंह*	42
प्यार की सौगात	• *डॉ. अफरोज ताज*	45
सबसे बड़ा भिक्षुक	• *शीला मालवीय*	48
मेरे परिवार जैसे	• *डॉ. आनंद सुंदरम*	49
उन्होंने पत्थर में...	• *अखिलेश शुक्ल*	52
अमन की आशा	• *डॉ. ग़ुलाम मुर्तजा शरीफ*	72
हिन्दी के पितामह..	• *महाकवि प्रो. हरिशंकर आदेश*	73
कविताएं.....		
शत्-शत् प्रणाम	• *श्रीनाथ प्रसाद द्विवेदी*	50
कुल गीत	• *राजकुमारी सिन्हा*	51
महात्मा मालवीय	• *अमित कुमार सिंह*	51
कुछ शब्द	• *मैथिलीशरण गुप्त*	51
यश सुरभि	• *मैथिलीशरण गुप्त*	54
दोहांजलि	• *संजीव सलिल*	54
अन्य		
चित्रकाव्य कार्यशाला		55
प्रेरक प्रसंग	• *सीताराम चतुर्वेदी*	57
रोचक प्रसंग	• *श्रीकांत कुलश्रेष्ठ*	60
वचनामृत		63
विलोम चित्रकाव्य शाला		65
आखिरी पन्ना	• *सुधा ओम ढींगरा*	78

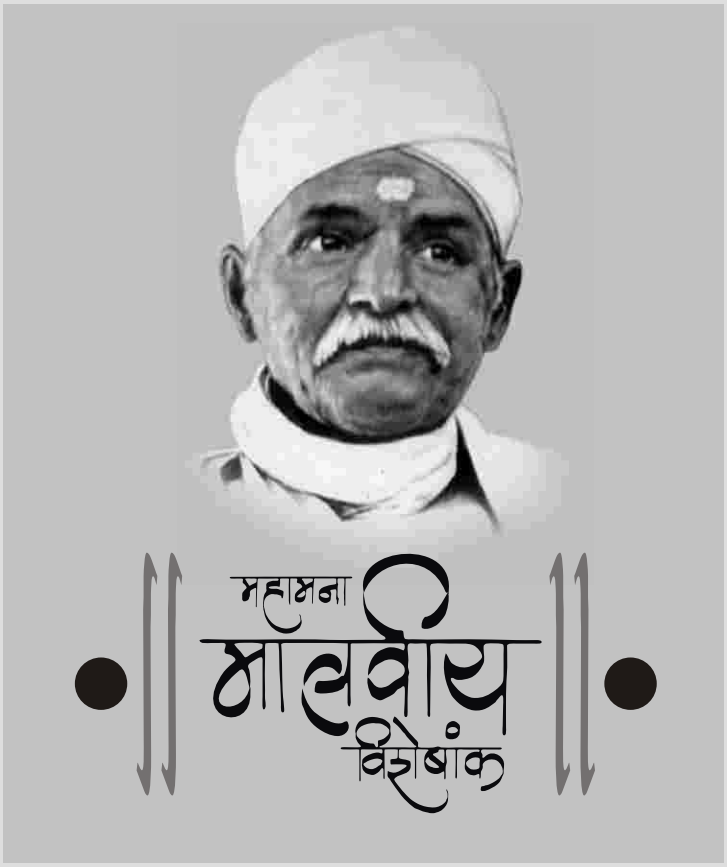

''हिन्दी चेतना'' सभी लेखकों का स्वागत करती है कि आप अपनी रचनायें प्रकाशन हेतु हमें भेजें. सम्पादकीय मण्डल की इच्छा है कि ''हिन्दी चेतना'' साहित्य की एक पूर्ण रूप से संतुलित पत्रिका हो, अर्थात साहित्य के सभी पक्षों का संतुलन. एक साहित्यिक पत्रिका में आलेख, कविता और कहानियों का उचित संतुलन होना आवश्यक है, ताकि हर वर्ग के पाठक पढ़ने का आनन्द प्राप्त कर सकें. इसीलिए हम सभी लेखकों को आमंत्रित करते हैं कि हमें अपनी मौलिक रचनाएँ ही भेजें. अगले अंक के लिए अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भेज दें. अगर संभव हो तो अपना चित्र भी साथ अवश्य भेजें.

रचनाएँ भेजते हुये निम्नलिखित नियमों का ध्यान रखें :

1. हिन्दी चेतना अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर तथा जनवरी में प्रकाशित होगी.
2. प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा.
3. पत्रिका में राजनैतिक तथा विवादास्पद विषयों पर लिखित रचनाएँ प्रकाशित नहीं की जायेंगी.
4. रचना के स्वीकार या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार संपादक मंडल का होगा.
5. प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जायेगा.
6. पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं. संपादक तथा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

•

संरक्षक एवं प्रमुख सम्पादक

श्री श्याम त्रिपाठी, कैनेडा

•

सम्पादक

डॉ. सुधा ओम ढींगरा, अमेरिका

•

सहयोगी सम्पादक

डॉ. निर्मला आदेश, कैनेडा
अभिनव शुक्ल, अमेरिका
आत्माराम शर्मा, भारत
अमित कुमार सिंह, भारत

•

परामर्श मंडल

पद्मश्री विजय चोपड़ा, भारत
मुख्य सम्पादक, पंजाब केसरी पत्र समूह
पूर्णिमा वर्मन, शारजाह
सम्पादक, अभिव्यक्ति, अनुभूति
तेजेन्द्र शर्मा, लंदन
महासचिव, कथा यू.के.
डॉ. इला प्रसाद, अमेरिका
सरोज सोनी, कैनेडा
राज महेश्वरी, कैनेडा
श्री नाथ द्विवेदी, कैनेडा
डॉ. कमल किशोर गोयनका, भारत
चाँद शुक्ला 'हदियाबादी', डेनमार्क
डायरेक्टर, रेडियो सबरंग,
अध्यक्ष, वैश्विक समुदाय रेडियो प्रसारण माध्यम

•

विदेश प्रतिनिधि

अनिल शर्मा, थाईलैंड
यास्मिन त्रिपाठी, फ्रांस
राजेश डागा, ओमान
उदित तिवारी, भारत
डॉ. अंजना संधीर, भारत
विनोद चन्द्र पाण्डेय, भारत

•

सहयोगी

सुषमा शर्मा, आलोक गुप्ता, भारत
अदिति मजूमदार, डैनी कावल, कैनेडा

बीएचयू का आँगन जिसके प्रखर तेज से दीपित है
भारत भू की मृदु सुगंध से जिसका गहरा नाता है
जो लड़ता है प्रेम भाव ले जीवन के संघर्षों से
वह वरदानी महापुरुष ही महामना कहलाता है
जिनकी महिमा से मंडित है सरस्वती का धाम
महामना की चरण धूलि को अपना विनीत प्रणाम.

– अभिनव शुक्ल

विशेषांक के लिए शुभकामनाएँ

जय प्रकाश मानस
http://www.srijangatha.com

राजीव रंजन प्रसाद, मोहिन्द्र कुमार, अजय यादव, श्री कान्त मिश्र 'कान्त', अभिषेक सागर
www.sahityashilpi.com

शिवानी जोशी
http://www.hindimedia.in

रूप सिंह चंदेल
http://www.vaatayan.blogspot.com
http://wwwrachanasamay.blogspot.com

Hindi Chetna is a literay magazine published quarterly in Toronto, Ontario under the editorship of Mr. Shiam Tripathi. Hindi Chetna aims to promote the Hindi language, Indian culture and the rich heritage of India to our children growing in the Canadian society. It focuses on Hindi Literature and encourages creative writers, young and old, in North America to write for the magazine. It serves to keep readers in touch with new trends in modern writing. Hindi Chetna has provided a forum for Hindi writers, poets and readers to maintain communication with each other through the magazine. It has brought many local and international writers together to foster the spirit of friendship and harmony.

HINDI CHETNA
6 Larksmere Court, Markham, Ontario, L3R 3R1
Phone : (905) 475 - 7165 Fax : (905) 475 - 8667
e-mail : hindicehetna@yahoo.ca

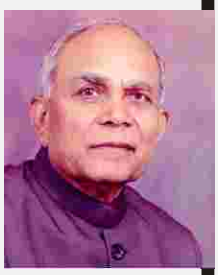

संपादकीय

भारत में मुझे कभी भी बनारस जाने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था. सन् 2000 में जब मैं और मेरी पत्नी भारत यात्रा पर गये. हमें बनारस देखने का मौका मिला. नौका पर सवार होकर गंगा के अस्सी घाटों की लहरों का मधुर संगीत सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. काशी विश्वनाथ के मन्दिर में शंकर जी के दर्शन किये, मानस मन्दिर में रामचरित मानस को अंकित देखा. काशी हिन्दू विश्व विद्यालय गये और प्रवेश द्वार पर विराट महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के चित्र एवं प्रतिमा को देखकर ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे वे मुझसे कुछ कह रहे हैं. मेरे गाइड ने हमें उनकी बहुत सारी कहानियाँ और घटनाएँ सुनाईं. बचपन में इस महान पुरुष का नाम सुना था और उनके विषय में कुछ बातें शिक्षकों से भी सुनी थीं, जो मानस पटल पर धूमिल हो चुकी थीं. यात्रा के उपरांत मैं कैनेडा लौट आया और हिंदी चेतना के कार्य में जुट गया. अंतर्मन में महामना जी समा गए थे. हमने सन् 2005 में 'हिंदी चेतना' की ओर से रामचरित मानस के विशेषज्ञ पंडित चन्द्रशेखर पाण्डेय जी के सम्मान में एक विशेष अंक प्रकाशित किया था. इस अंक में पाण्डेय जी ने अपने जीवन परिचय में बनारस विश्वविद्यालय का भी उल्लेख किया था कि वे किस प्रकार काशी विश्व विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के सिलसिले में मालवीय जी से मिले और उनकी उनसे जो भेंट हुई, उस चित्रण में उन्होंने लिखा था कि महामना बड़े दयालु थे और निर्धन विद्यार्थियों के प्रति अत्यंत सम्वेदनशील थे. वह बेहद मार्मिक और हृदयस्पर्शी वर्णन था. उन्होंने तत्कालीन हिंदी के महान साहित्यकारों का भी उल्लेख किया, जो उस समय विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे जैसे कि डॉ. रामचन्द्र शुक्ल, पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, श्याम सुंदर दास, बालकृष्ण भट्ट और उपाध्याय सिंह 'हरिऔध' आदि. इन बातों को जानकर मेरे मन में सरस्वती पुत्र महामना के प्रति दबी भावनाएँ आकार लेने लगी. मैं सुअवसर की तलाश करने लगा ताकि उस आकार को साकार कर सकूँ. मैंने अपने सम्पादक मंडल से इस विषय पर चर्चा की. अंत में यह निर्णय लिया गया कि 'हिंदी चेतना' का अक्तूबर 2010 का अंक मालवीय जी को समर्पित किया जाए. तदुपरांत देश-विदेश के हिंदी प्रेमियों को पत्रिका के माध्यम से इस विशेषांक की सूचना दी गयी. वैसे तो हम इस पत्रिका के द्वारा कई विशेषांक प्रकाशित कर चुके हैं. जैसे कि पद्मश्री यशपाल जैन, डॉ. हरिवंश राय बच्चन, पं. चन्द्रशेखर पाण्डेय, महाकवि प्रोफेसर हरिशंकर आदेश, मुंशी प्रेमचंद, डॉ. नरेंद्र कोहली एवं डॉ. कामिल बुल्के आदि. डॉ. बुल्के विशेषांक के लिए डॉ. इला प्रसाद का सहयोग सराहनीय है.

महामना विशेषांक के प्रकाशन में हमें बहुत समय और परिश्रम करना पड़ा क्योंकि मालवीय जी का व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा बहुआयामी है कि यह अंक एक महाकाव्य का रूप धरने लगा. जिन विद्वानों ने अपनी रचनात्मक सामग्री दे कर हमारा यज्ञ सम्पन्न किया है, हमारा उत्साह और मनोबल बढ़ाया है, इसके लिए उन सभी का हृदय से आभारी हूँ. मुझे पूर्ण विश्वास है कि उन्होंने अपने अमूल्य समय के जो क्षण इस महान विभूति को प्रदान किए हैं, वे इस अंक को विशेषांक बनाने में सहायक हुए हैं.

मैं 'हिंदी चेतना' की संपादक अपनी साथी, बहन सुधा ओम ढींगरा का आभारी हूँ, जिन्होंने इस अंक के लिए अन्य अंकों की भांति हमेशा की तरह अथक परिश्रम किया और अपनी टीम से भी करवाया. इस उद्देश्य में हम कितने सफल रहे हैं, इसका निर्णय तो सुधी पाठकों के हाथ में है. इस अंक से मुझे जो संतोष मिला व आनन्द और सुख का अनुभव हुआ, वह अवर्णीय है.

'हिंदी चेतना' का सर्वदा यही लक्ष्य रहा है कि हम इसके माध्यम से विश्व के उन मूर्धन्य लेखकों, साहित्यकारों, कवियों को सम्मानित करें, जिन्होंने अपना सर्वस्व हिंदी भाषा, संस्कृति की सेवा में अर्पित कर दिया. हम उनके उच्च आदर्शों एवं राष्ट्रीय मनीषा से भी पाठकों को जागरूक करवाना चाहते हैं. विदेश में रहते हुए उनके जीवन से अपनी भावी पीढ़ी के लिए यदि अपनी संस्कृति के कुछ पद्चिन्ह छोड़ जाएँ तो हमारा प्रयास सफल हो जाएगा. यही हमारी मनोकामना है. मुझे आशा है कि सभी हिंदी प्रेमियों को इस विशेषांक से कुछ प्रेरणा अवश्य मिलेगी.

समय और पृष्ठों की सीमित सीमाओं के कारण कई लेखकों को निराश करना पड़ रहा है, इसके लिए संपादक की विवशता है.

हमें आपके विचारों की प्रतीक्षा रहेगी.

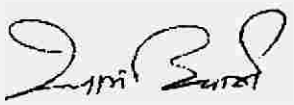

आपका
श्याम त्रिपाठी

हिन्दी चेतना को पढ़िये, पता है :
http://hindi-chetna.blogspot.com

हिन्दी चेतना की समीक्षा अवश्य देखें :
http://KathaChakra.blogspot.com

घर बैठे पुस्तकें प्राप्त करें :
http://www.pustak.org

हिन्दी चेतना को आप
ऑनलाइन भी पढ़ सकते हैं :
Visit our Web Site :
http://www.vibhom.com
or home page पर
publication में जाकर

एक अनुकरणीय कदम

भारत वर्ष के ऐसे वर्तमान में, जब जनसेवा व्यवसाय बन गई है, राजनीति उद्योग, आदर्श की बात करना अव्यवहारिक माना जाता है, उच्च आदर्शों से युक्त जीवन मूल्य धुंधला गए हैं और बाजारोपयोगी 'माल' का उत्पाद करने में समझदारी समझी जाती हो, उस काल में माननीय पंडित मदनमोहन मालवीय पर विशेषांक निकलना समाज के चतुरों की दृष्टि में चाहे कितना भी उत्पादविहीन हानिकारक कदम हो मुझ जैसे मूर्खों की दृष्टि में सार्थक लाभदायक पद्चिन्ह हैं.

स्वतंत्र होने के लिए संघर्ष करना तथा स्वतंत्र राष्ट्र में जन्म ले उसकी आज़ादी को भोगना, दोनों अलग-अलग तरह के अनुभव हैं. आज़ादी के बहुत गहरे मायने हैं. इतने गहरे की आप जितना डूबेंगें उतना ही स्वयं को सतह पर पाएंगें तथा अपने को अज्ञानी समझेंगें. इन मायनों को समझने के लिए किसी शब्दकोश की आवश्यकता नहीं है. जैसे प्रेम, प्यार, घृणा, अत्याचार, भ्रष्टाचार आदि के मायने नहीं बदलते हैं वैसे ही आज़ादी के मायने भी कभी नहीं बदलते हैं. हां आज़ादी का प्रयोग करने वाले बदलते रहते हैं. स्वतंत्रता का सही मूल्य वही जानता है जिसने परतंत्रता का अंधेरा देखा है. परतंत्रता के अंधेरे से निकलकर व्यक्ति जब स्वतंत्रता की किरण की पहली झलक देता है तो वो सुख गूंगे के गुड़ जैसा होता है. हमारे अनेक ऐसे स्वतंत्रता सेनानी हैं जिन्होंने इसलिए अपने आज का बलिदान किया कि कल कोई इस गुड़ का आनंद उठा सके. हमारे देश की वह पीढ़ी जिसने आज़ाद हवा में सांस ली है और आज स्वतंत्र रहने का सुख भोग रही है, आवश्यक है कि जाने कि दूसरों के वर्तमान के लिए कैसे अपने कल का बलिदान किया जाता है और जिस माँ ने अपनी गोद हमें दी है उसके ममत्व को कैसे सम्मान दिया जाता है.

निस्वार्थ सेवा, बलिदान, त्याग जैसे उच्च मूल्यों के आदर्श-प्रतीक पंडित माननीय मदनमोहन मालवीय पर विशेषांक निकालने का आपका संकल्प एवं प्रयत्न प्रणम्य है. अभ्युदय, मर्यादा, हिंदुस्तान जैसी पत्रिकाओं के प्रणेता के इस व्यक्तित्व का पक्ष हमारे तुरत-फरत पत्रकारिता करने वालों को सही सोच देगा. जातिवाद के कट्टर विरोधी एवं 'सत्यमेव जयते' का आदर्श उपस्थित करने वाले इस व्यक्तित्व के माध्यम से आप जो आज की पीढ़ी के सामने दर्पण प्रस्तुत कर रहे हैं वो निश्चित ही एक देश की साफ तस्वीर प्रस्तुत करने में सहायक सिद्ध होगा. यह एक अनुकरणीय कदम है जो अनेक सही सोच के व्यक्तियों को प्रेरित करेगा. मेरी शुभकामनाएं.

प्रेम जनमेजय

मानद संपादक 'गगनांचल'

संपादक 'व्यंग्य यात्रा'

बी. एल. जोशी
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

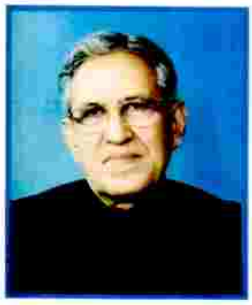

राज भवन
लखनऊ-227 132

दिनांक : 12 अगस्त, 2010

सन्देश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि हिन्दी प्रचारिणी सभा, कनाडा की पत्रिका "हिन्दी चेतना" का माह अक्टूबर, 2010 का अंक पं0 महामना मदन मोहन मालवीय विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

युगपुरूष महामना पं0 मदन मोहन मालवीय जी भारतीय संस्कृति के अनन्य संरक्षक थे। उन्होंने चरित्र निर्माण को सर्वोपरि स्थान देते हुए भारतीय नवयुवाओं को अपनी सनातन संस्कृति के साथ–साथ आधुनिकतम ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा से समृद्ध करने के लक्ष्य की पूर्ति हेतु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। मालवीय जी हिन्दी और संस्कृत भाषा के प्रबल पक्षधर थे। हिन्दी के बारे में उनका मत था कि "हिन्दुस्तान की उन्नति हिन्दी को अपनाने से ही हो सकती है।" मालवीय जी की उदारता और सर्वजन हित की भावना के कारण ही उन्हें 'महामना' के रूप में याद किया जाता है। उनका आदर्श जीवन दर्शन राजनीति, शिक्षा तथा समाज सेवा से जुड़े लोगों के लिए सदैव अनुकरणीय रहेगा।

विशेषांक की सफलता हेतु मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

बी एल जोशी

(बी0एल0जोशी)

3-SEP-2010 04:47P FROM:
05/30/2018 11:58 FAX
2-SEP-2010 11:41A FROM:

TO:19054758667

भारत का हाई कमीशन, ओटवा
HIGH COMMISSION OF INDIA
10 SPRINGFIELD ROAD
OTTAWA, ONTARIO
K1M 1C9 CANADA
Tel: (613) 744-3751 Fax: (613) 744-0913
E-mail: hicomind@hciottawa.ca

दिनांक: २ सितम्बर, २०१०

संदेश

मुझे यह लिखते हुए अति प्रसन्नता हो रही है कि आपका 'हिन्दी चेतना' का अक्टूबर अंक महामना मदन मोहन मालवीय जैसे शिक्षाविद् को समर्पित है।

हिन्दी भाषा के विषय में एक लम्बे समय से गहन चिन्तन होता आ रहा है। स्वयं भारत सरकार भी अपनी राजभाषा नीति के अंतर्गत हिन्दी के प्रचार - प्रसार के लिए भारत के अंदर व दूर समुद्र पार अपने राजदूतावासों के माध्यम से अनेक प्रकार से प्रोत्साहन देती आ रही है। इस नीति का एक विशेष पहलू यह भी है कि हिन्दी को आगे से आगे रहने के लिए अन्य भाषाओं जैसे, उर्दू, फ़ारसी, अरबी व अन्य भारतीय भाषाओं का यहाँ तक कि अंग्रेजी के बहुप्रचलित शब्दों का भी समावेश करना चाहिए। मेरा व्यक्तिगत तजुर्बा है कि गूढ़ हिन्दी सभी हिन्दी भाषी व इसके सीखने की आकांक्षा रखने वाले पसंद नहीं करते।

मुझे विश्वास है कि मदनमोहन विशेषांक हिन्दी प्रेमियों को बहुत पसंद आयेगा। मैं हिन्दी चेतना के सभी कार्यकर्ताओं को इसके लिए बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि ये इसी प्रकार हिन्दी की निस्वार्थ सेवा करते रहेंगे।

भवदीया,

नेरेन्द्र चौहान

श्रीमती नेरेन्द्र चौहान

कार्यकारी उच्चायुक्त

Website: http://www.hciottawa.ca

भारत का राजदूत
मस्कत
سفير الهند
AMBASSADOR OF INDIA
MUSCAT

श्री श्याम त्रिपाठी जी,

नमस्कार,

यह जान कर बहुत प्रसन्नता हुई की हिंदी चेतना, पंडित महामना मदन मोहन मालवीय पर विशेषांक प्रकाशित कर रही है। मालवीय जी को समर्पित इस विशेषांक के माध्यम से नई पीढ़ी उनके महान जीवन से तो परिचित होगी ही साथ ही उनके द्वारा किये गए महान कार्यो से भी अवगत होगी।

महापुरुषों को समर्पित विशेषांको के माध्यम से, हिंदी चेतना परिवार हिंदी सेवा के साथ साथ, भावी पीढ़ी तक अपने संस्कारों और जीवन मूल्यों को पहुचाने के सामाजिक दायित्व का भी बखूबी निर्वाह कर रहा है। मुझे इस बात का हर्ष है कि श्री राजेश डागा और श्री गजेश धारीवाल के प्रयासों से मस्कत के हिंदी प्रेमी हिंदी चेतना से नियमित जुड़े रहते है।

हिंदी चेतना परिवार को मेरी हार्दिक शुभ कामनाएं,

6 सितम्बर, 2010

(अनिल वाधवा)
राजदूत

ص.ب : ١٧٢٧، روي، الرمز البريدي : ١١٢، سلطنة عمان، هاتف : ٢٤٦٨٤٥١٢ / ٢٤٢٨٤٥١٣ (٩٦٨+) فاكس : ٢٤٦٩٨٢٩١(٩٦٨+)
P.O. Box : 1727, Ruwi, Postal Code : 112, Sultanate of Oman
Tel. : (+968) 2468 4512 / 2468 4513, Fax : (+968) 2469 8291, E-mail : hom@indemb-oman.org

केदार नाथ साहनी
Kidar Nath Sahani
पूर्व राज्यपाल गोवा एव सिक्किम

दिनांक 14 अगस्त, 2010

प्रिय श्री त्रिपाठी जी,

नमस्कार।

यह जान कर कि आप की पत्रिक *"चेतना"* का आगला अंक भारत के अनन्य स्पूत महामना मदनमोहन जी मालवीय जी जिन के बारे में वर्तमान पीढ़ी बहुत कम जानती हैं को समर्पित होगा, बहुत प्रसन्नता हुई है। आप के इस सद्प्रयास के लिए मेरा हार्दिक साधुधाद स्वीकार करें।

महामना मालवीय जी को जानने वालो में अधिकांश लोग उनके सम्बन्ध में मात्र इतना ही जानते है कि उन्होंने काशी हिन्दु विश्वविद्यालय जैसी महान संस्था को जन्म देकर भारत राष्ट्र के उज्जवल भविष्य की नीवं रखी थी। राष्ट्र निर्माण में इस विश्वविद्यालय द्वारा प्रशिक्षित हजारों लाखों वैज्ञानिक, इंन्जीनियर आदि बुद्धिजीवी अपने योगदान से उनका सपना पूरा कर रहे हे।

बहुत कम लोग जानते है कि न केवल शिक्षा के क्षेत्र में अपितु राजनीति , धर्म और समाज सुधार जैसे अनेक क्षेत्रों में भी मालवीय जी का अतुल्य योगदान रहा है। सम्भवतः विरले ही जानते हैं कि मालवीय जी ने चार बार आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष पद सुशोभित किया था। यह गौरव भारत के किसी अन्य नेता को प्राप्त नहीं हुआ।

मालवीय जी धर्म को पूजापाठ और कर्मकाण्ड की सीमाओं से बाहर निकाल कर, लोगों को देश और समाज के प्रति दायित्व बोध कराने वाले महापुरूष थें । समाज को छुआछूत और मन्दिरो में हरिजन प्रवेश पर मनाही जैसी सभी कुरीतियों से लड़ने मे महामना सब से आगे थें। स्त्री–शिक्षा, गोरक्षा, जैसे विषय उनको बहुत प्रिय थें।

सैन्ट्रल असैम्बली में उनके भाषण राष्ट्र निर्माण हेतु अनके विधाई और रचनात्मक चिन्तम की गहराइ दर्शाते हैं। वह अजात शत्रु थें । उनके निधन पर सभी धर्मों सम्प्रदायों और दलों के नेताओं ने, उन की महानता का जो गुणगान किया है, उसकी मिसाल नहीं मिलती।

दुभार्ग्य की बात हे कि देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ऐसे देवतास्वरूप और श्रेष्ठ महापुरूष को जो अजात शत्रु था और जिन्हे भारत माता के विभाजन और हिन्दुओं पर होने वाले अमानवीय अत्याचारों की पीड़ा खा गई, भारत के वर्तमान नेतृत्व ने भुला सा दिया है। प्रसन्ता की बात हे कि *"चेतना"* के माध्यम से आप के पाठक उनके महान व्यक्तित्व के अनेक पहलु से जान सकेंगें। आने वाली पीढ़ियां भी इस विशेषांक से लाभान्वित होंगी और प्रेरणा भी लेंगी।

मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें

शुभेच्छु

(केदार नाथ साहनी)

☎ 011-65427165

निवास : जी–12, एनडीएसई-II, नई दिल्ली-49

Residence : G-12, NDSE-II, New Delhi-49

फोन Phone:(0542) 2369460, (0542) 2307134 & 35
फैक्स Fax: (0542) 2369460
ईमेल E-mail:ac_staff@rediffmail.com

यू0जी0सी0–एकेडेमिक स्टाफ कालेज
UGC-ACADEMIC STAFF COLLEGE
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY
वाराणसी–221005
VARANASI-221005

पत्रांक संख्या. ए0एस0सी0 / एस0एन0यू0 / सामान्य / 2010–2011 / 767 दिनांक: 18.09.2010

प्रो0 सिद्ध नाथ उपाध्याय
पीएच.डी.,एफ.एन.ए.ई.,एफ.एन.ए.एससी.,एफ.आई.ई.,एफ.बी.आर.एस.
प्राचार्य, रसायन अभियांत्रिकी
एवं निदेशक

प्रिय त्रिपाठी जी,

मुझे प्रसन्नता है कि आपकी संस्था कनाडा में कार्य करते हुऐ **"हिन्दी चेतना"** नामक पत्रिका निकालती है । उसमें पूजनीय महामना मालवीय जी से जुड़े प्रसंग भी होगें। पूज्य महामना अप्रतिम व्यक्तित्व के स्वामी होने के साथ–साथ पूर्णरूपेण समर्पित भारतीय थे। वे एक उच्च कोटि के दूर दृष्टा एवं समाज सुधारक थे। भारत के उत्थान तथा भारतीय युवा पीढ़ी के चरित्र निर्माण में उनका योगदान अप्रतिम है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय विश्व के लिए उनकी सर्वोत्तम कृति है। यह विश्वविद्यालय सम्पूर्ण रूपेण भारतीय विश्वविद्यालय है क्योंकि इसमें सारे देश के लोगों धन एवं संकल्प का योगदान है। मुझे गर्व है कि मैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का छात्र रहा हूँ एवं यहाँ अध्यापन का कार्य कर रहा हूँ। अपनी पत्रिका के माध्यम से आप सब अमेरिका एवं कनाडा में भारतीय संस्कृति, भारत के जन–नायकों, एवं आधुनिक भारत के निर्माताओं से अप्रवासी भारतीयों एवं उनके बच्चों तथा कनाडा एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के अन्य वासियों को अवगत कराने का जो अनूठा प्रयास कर रहे हैं उसके लिए साधुवाद।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

(सिद्ध नाथ उपाध्याय)
निदेशक
एकेडेमिक स्टाफ कालेज
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी।

बहुत दिनों से सोच रहा था कि आपको उस अनुभव के बारे में बताऊँ, उस आनंद के बारे में बताऊँ जिसकी अनुभूति मुझे उस समय हुई जब मैंने खुद के द्वारा लिखी गई एक लघुकथा 'जरिया' हिन्दी-चेतना जैसी प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका में देखी. लेकिन कभी किसी कार्यक्रम की व्यस्तता तो कभी लैबवर्क ने इज़ाज़त नहीं दी. अतैव सर्वप्रथम तो इस अवांछित देरी के लिए आपसे क्षमाप्रार्थी हूँ.

'जरिया' लघुकथा लिखते वक्त मेरे दिमाग में यही था कि ये कहानी सिर्फ एक बालक की नहीं, सिर्फ एक नगर, परिवेश या देश की नहीं बल्कि ये हालात लगभग हर विकासशील और विकसित देश के हैं. जब इस लघुकथा के साथ पत्रिका में सम्पादन के दौरान लगाये गए चित्र को देखा तो लगा कि आपने मेरी इस सोच पर मोहर लगा दी है. जिस तरह आपने एक महत्वपूर्ण पृष्ठ पर रंगीन चित्र के साथ इसे लगाया है उससे इस लघुकथा का भाव और सन्देश और भी ज्यादा उभर कर सामने आ रहे हैं. सच कहूं तो मैं समझ नहीं पा रहा कि मेरी रचना के सम्पादन में आपने उसके साथ जो न्याय किया है उसके लिए आपका कैसे आभार प्रकट करूँय मेरे लिए इतना ही काफी है कि आपने इतनी आसानी से मुझ जैसे नए कहानीकार को इस प्रसिद्ध पत्रिका में स्थान दिया. शायद यही कारण रहा कि इसके बाद कई अन्य प्रतिष्ठित पत्रिकाओं ने भी मेरी लघुकथाओं, कहानियों और कविताओं को हाथोंहाथ लिया.

एक बार पुन: आपको आभार प्रेषित करता हूँ.

दीपक मशाल, यू.के.

'हिन्दी चेतना' की नियमित पाठिका होने के नाते मैं इसके निरन्तर विकास और सफलता से अत्यन्त प्रसन्न हूँ. आदरणीय त्रिपाठी जी ने जो पौधा आरोपित किया था आज वह अपनी भरी पूरी शाखाओं के साथ सभी साहित्य प्रेमियों को अपनी ठंडी-ठंडी छाँव से आनन्दित कर रहा है.

हर बार की तरह इसके आवरण, साज-सज्जा तथा सामग्री की विविधता से यह स्पष्ट होता है कि आप की टीम इसे इस स्तर तक पहुँचाने के लिये कितनी कर्त्तव्यनिष्ठ तथा प्रयत्नशील हैं. प्रत्येक कहानी, आलेख, कविता, गज़ल बहुत ही उच्च स्तर की लगी. अपने सम्पादकीय में श्री त्रिपाठी जी ने भारत में हिन्दी के प्रति उदासीनता के प्रति जो चिन्ता प्रकट की है, उससे मन उद्वेलित हुआ. क्या सचमुच ही यही स्थिति है? इन्द्रा धीर जी का आलेख कई बार पढ़ा और अपने मित्रों को भेजा भी. एक ही पत्रिका में इतनी पठनीय सामग्री हम तक पहुँचाने के लिये सदा की तरह हमारा धन्यवाद स्वीकार करें. भविष्य के लिये शुभकामनाओं के साथ.

शशि पाधा, यूएसए

'हिंदी चेतना' के माध्यम से हिंदी की और अपनी मातृ-भाषा की जो सेवा श्याम त्रिपाठी जी कर रहे हैं, वह असाधारण है, और सराहने योग्य है. समय-समय पर 'हिंदी चेतना' का विशेषांक हिंदी प्रेमियों के लिए और चेतना परिवार के लिए बहुत ही लाभप्रद है. हम श्याम त्रिपाठी जी के बहुत आभारी हैं. कनाडा में रहते हुए हम लोगों को ऐसी सुंदर त्रैमासिक पत्रिका पढ़ने को मिलती है और उसका हर अंक विशेष होता है.

शीला मालवीय, कैनेडा

'हिन्दी चेतना' के अप्रैल-जुलाई अंक के लिए सबसे पहले मैं आभारी हूं आदरणीया देवी नागरानी जी का, मेरी पुस्तक पर समीक्षा लिखने के लिये और आपका इसे प्रकाशित करने के लिये.

मैं 'हिन्दी चेतना' पत्रिका एक अरसे से देख रहा हूं और मौका लगने पर पढ़ता हूं. फादर कामिल बुल्के पर केन्द्रित 'हिन्दी चेतना' का अंक अद्वितीय और संग्रहणीय है. यह पत्रिका छपाई, सामग्री और प्रस्तुति की दृष्टि से भी स्तरीय पत्रिकाओं जैसी है. आगे और भी निखार आयेगा ऐसी आशा है और शुभकामना भी. पत्रिका का प्रकाशन एक चुनौतिपूर्ण और कष्टसाध्य कार्य है ऐसा मेरा निजी अनुभव है. लेकिन इस यात्रा का आनन्द भी वही ले सकता है जो इस यात्रा पर निकलता है.

इस अंक के सम्पादकीय में एक बहुत ही सामयिक और महत्त्वपूर्ण प्रश्न को उठाया गया है. प्रवासी साहित्य को परिभाषित करना सहज नहीं है खासकर ऐसे समय में जब धरती पर भौतिक दूरियां घट गयी हैं. अगर यह थोड़ी देर के लिये मान भी लिया जाय कि भारत के बाहर रहने वालों द्वारा लिखा गया साहित्य 'प्रवासी'

साहित्य है तो उसका मूल्यांकन निरपेक्ष ही होना चाहिये. किसी रचना अथवा साहित्य के प्रति संवेदनशीलता आवश्यक है लेकिन वह सहानुभूति में परिवर्तित नहीं हो जाये इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है. वहां तो एक निरपेक्ष और सजग आलोचना एक पथ-प्रदर्शक की तरह है. अक्सर जब भारत में रचे जा रहे समकालीन साहित्य की तुलना विदेशों में रचे जा रहे साहित्य से की जाती है तो यह तर्क दिया जाता है कि भारत में ही कौन सी स्तरीय रचना हो रही है. यह स्वस्थ चिन्तन नहीं है. विदेशी रचनाकारों को अपनी रेखा लम्बी करनी होगी, दूसरों की रेखा को काटने से कुछ हासिल नहीं होगा. यही मानसिकता भारत में भी विकसित करनी होगी. भारत में या इसके बाहर भी बहुत बार लेखन-आलोचना-मान-सम्मान-वाद-विवाद प्रायोजित और पूर्वाग्रह से युक्त होते हैं. विदेशी रचनाकारों को गलत और सही आलोचना में भेद करना स्वयं सीखना होगा.

शुभकामनाओं सहित.

अमरेन्द्र कुमार, यूएसए

http://amarendrahwg.blogspot.com/

'हिंदी चेतना' के जुलाई अंक में सम्पादकीय पढ़ कर कई विचारों ने जन्म लिया. भाषा का संस्कार, संस्कृति, रीति-रिवाज आदि से गहरा सम्बन्ध रहा है. यहाँ कनाडा एवं अमेरिका आकर 'एशियन' समुदाय के रहन-सहन को देखकर अत्यंत दुःख हुआ. हमारी बहु-बेटियां ने अपनी संस्कृति, संस्कार एवं शर्म-ओ-हया को काफी पीछे छोड़कर विदेशी वेश-भूषा को अपना लिया है, दूसरे शब्दों में यह कहा जाय कि अपने शरीर का प्रदर्शन करने में विदेशियों को भी पीछे छोड़ दिया है. उन्हें हिंदी बोलना तो दूर की बात है हिंदी सुनना भी गवारा नहीं. इन अर्ध नग्न नर- नारियों से क्या उम्मीद रखी जाय ? लेकिन मुझे विश्वास है इन लोगों के दिल में राष्ट्र भाषा के लिए एवं अपने संस्कार के लिए स्थान अवश्य बनेगा.

दूसरी बात यह है कि भारतवर्ष के हर प्रान्त में अपनी-अपनी बोली या भाषा बोली जाती है. हिंदी राष्ट्र भाषा है. नाम मात्र की. एक दुःख की बात बता रहा हूँ : कराची (पकिस्तान) में मेरी मुलाकात अपने एक दोस्त से हुई जो कराची विश्व विद्यालय में अध्यापक थे, कहने लगे, शरीफ साहब उर्दू पकिस्तान की राष्ट्र भाषा है लेकिन नाम मात्र लोगों ने उर्दू विषय लिया है, वह भी दफ्तरों में काम करने वाले लोग हैं. नई नस्ल तो उर्दू का रुख भी नहीं करती. कहीं उर्दू फैकल्टी बंद ना हो जाय ?

भारतवर्ष में हिंदी और पकिस्तान में उर्दू सिसक रही है.

त्रिपाठी भाई, आप जैसे लोगों की मेहनत एवं प्रयास ही है कि हिंदी साहित्य परवान चढ़ रहा है. मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह समय दूर नहीं जब हमारी नई नस्लों को अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास होगा और हिंदी को उचित स्थान मिलेगा.

डॉ. ग़ुलाम मुर्तज़ा शरीफ, अमेरिका

'हिंदी चेतना' जिस गंभीरता से अपनी साहित्यिक भूमिका का निर्वहन कर रही है, स्पष्ट पहचान बना चुकी है. अलग- अलग विधाओं में स्तरीय सामग्री एक साथ उपलब्ध करने के लिए इस परिवार को हार्दिक बधाई. अविनाश वाचस्पति जी का यह पुनीत कार्य कि हम तक पहुंचा देते हैं, अविस्मरणीय है, उन्हें भी साधुवाद.

सुरेश यादव

'हिन्दी चेतना' एक अत्यंत ज़रूरी पत्रिका है. जुलाई अँक पढ़कर प्रसन्नता हुई. पत्रिका में लेख-आलेख की कमी खटक रही है. विचारपरक लेखों को शामिल करने से एक सर्वांगीण पत्रिका बनेगी 'हिन्दी चेतना'.

Arun Hota

Prof.& head, Hindi, West Bengal State University,

Kolkata-700126

'हिन्दी चेतना' का यह अंक हर तरह से बहुत पसंद आया. अब हिन्दी चेतना पढ़ना आदत का हिस्सा बन चुकी है और हर पत्रिका के साथ अगले अंक का इन्तजार लग जाता है. बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ.

समीर लाल 'समीर', कैनेडा

जीवन के आघातों ने कई बार कलम उठवाई और कागज़ भर दिए, मगर उन काग़ज़ों को अपने तक रखा. सुधा जी ने उन काग़ज़ों को देखा और हिन्दी चेतना में स्थान दिया. मैं आभारी हूँ सुधा जी और हिन्दी चेतना की जिन्होंने मेरे अन्दर बुझी राख में चिंगारी ढूंढी और 'अधेड़ उम्र में थामी कलम' में स्थान दिया.

'हिन्दी चेतना' परिवार साहित्य के सही कर्म योगी हैं जो नित नई प्रतिभाओं को ढूँढ निकालते हैं. आशा करती हूँ कि भविष्य में भी मुझे स्थान मिलता रहेगा.

किरपाल कौर धीमान, अमेरिका

ऑन लाईन आपकी पत्रिका की सूचना मिली. दिए गए लिंक खोलने शुरू किये. पता नहीं था क्या खोल रहा हूँ. पहली बार ही इस पत्रिका के बारे में जान पाया था. सुधा जी के नाम से बस परिचित था. एक बेहतरीन पत्रिका पढ़ने को मिली. आभारी हूँ आप सबका. विदेश में हिन्दी की एक समुचित पत्रिका निकालना उन भारत वासियों के लिए एक चुनौती है जो हिन्दी भूल अंग्रेज़ी को पकड़ते जा रहे हैं. कहानियाँ, कविताएँ बहुत पसन्द आईं. तेजेन्द्र शर्मा की कई कहानियाँ पढ़ी हैं. 'टेलीफ़ोन लाईन' बहुत संवेदनशील लगी. वैसे 'पगड़ी' और 'राम जाने भी' दिल को छू गईं. पंकज सुबीर की कहानियाँ तो कई प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ी हैं. पंकज जी की कहानियों की भाषा खूबसूरत और शिल्प अच्छा बुना होता है. सुदर्शन प्रियदर्शनी की कविता चाँद चाँदनी दे गई. अभी कुछ दिन पहले ही कथाक्रम में उनकी कविताएँ कर्म और हूक पढ़ीं थीं. सामग्री के चुनाव के लिए आपको बधाई देता हूँ. भारत में ऐसी पत्रिका की बहुत ज़रूरत है. भारत में यह कैसे प्राप्त हो सकती है ? मैं इसे खरीद कर पढ़ना पसंद करूंगा.

सौरभ 'अभिनव', इंदौर

एक पत्रिका में इतनी पठनीय और रुचिकर सामग्री देखने को मिली कि पत्रिका शुरू की तो अंत तक पढ़ गया. हाँ, ग़ज़ल की कमी महसूस की. एक ग़ज़ल से कुछ नहीं होता. ग़ज़लों को भी कविताओं की तरह स्थान मिलना चाहिए. अधेड़ उम्र में थामी कलम स्तंभ ने आकर्षित किया. किरपाल कौर की कविता ने आँखें नम कर दीं.

अली रज़ा, लखनऊ

हर अंक के बाद पत्रिका का स्वरूप बदलता जा रहा है. अगर सुधा जी गत वर्ष मुझे हिंदी चेतना की पीडीऍफ़ ना भेजती तो मैं एक उत्कृष्ट पत्रिका से वंचित रह जाती. अब तो हिंदी चेतना का इंतज़ार रहता है. क्या यह मासिक या द्वैमासिक नहीं हो सकती, तीन महीने इंतज़ार नहीं होता. मैंने पहले भी एक पत्र लिखा था वह छपा नहीं. पता नहीं क्यों ? समीर लाल 'समीर' और प्रेम जन्मेजय जी के व्यंग्य के बिना 'हिंदी चेतना' शायद अधूरी लगेगी. व्यंग्य का तड़का 'हिंदी चेतना' को और भी मनोरंजक बना देता है. खूबसूरत बात है कि व्यंग्य स्तरीय होते हैं. व्यंग्य के नाम पर मज़ाक नहीं. प्रेम जन्मेजय की तो मैं फैन हूँ.

पारुल कपूर, आस्ट्रेलिया

अभी-अभी 'हिन्दी चेतना' का नया अंक पढ़ा, कुछ परिचित नाम उनकी रचनाओं के समीप ले गये. जिन्हें पढ़कर प्रसन्नता हुई.

भाई पंकज 'सुबीर' पुरोहित जी की कहानी, 'राम जाने' मार्मिक लगी. पंकज भाई, आज के भारतीय जीवन को बखूबी कहानी में उतारने में सिद्धहस्त हैं.

भाई तेजेंद्र जी की कहानी 'टेलीफोन लाइन' आधुनिक समाज के रंग पेश करती है व सशक्त रचनाकार के कौशल को समेटे, पसंद आयी.

अन्य रचनाकारों की कृतियाँ भी बढ़िया लगीं, जिनमें समीर लाल 'समीर' भाई, शशि पाधा जी, सुमन घई, धनञ्जय कुमार, इला प्रसाद जी, दीपक 'मशाल' व अन्य सारे नाम भी सम्मिलित समझें.

सुधा जी का सम्पादन, पत्रिका को निरंतर संवारने में, दक्षता सहित, प्रगति कर रहा है, जो उनकी मेहनत व लगन का परिचायक है. अत: बधाई !

लावण्य शाह, यू.एस.ए.

http://lavanyam-antarman.blogspot.com/

कौन कहता है कि विदेशों में अच्छी पत्रिकाएँ नहीं निकलती. 'हिंदी चेतना' पढ़ने के बाद तो आलोचकों की सोच बदल जानी चाहिए. इस बार की हिंदी चेतना ने विभोर कर दिया. बहुत-बहुत बधाई. सम्पूर्ण पत्रिका में कोई कमी महसूस नहीं हुई. नव अंकुर में अदिति की कविता नज़र और अधेड़ उम्र में थामी कलम में किरपाल कौर को बधाई.

हरिंदर कौर, यू.एस.ए

RAI GRANT INSURANCE BROKERS

Business • Life • Auto • Home

ENOCH A. BEMPONG, BA (Econ)

Account Exexutive

140 Renfrew Drive, Suite 230, Markham, ON L3R 6B3

Tel: 905-475-5800 Ext. 283 • 1-800-561-6195 Ext. 283

Fax: 905-475-0447 • ebempong@raigrantinsurance.com

Cell: 905-995-3230 • www.raigrantinsurance.com

सम्पादक
यतेन्द्र वार्षनी

गर्भनाल

garbhanal@ymail.com

GARBHANAL

प्रवासी भारतीयों की मासिक ई-पत्रिका

आपको हिंदी बोलनी आती है? तो फिर हिंदी में ही बात करिये

आप कुछ लिखने चाहते हैं? तो फिर हिंदी में लिखिये

अपनी बोली-बानी में बात करने का मंच है गर्भनाल ई-पत्रिका, जो हर माह नियमित तौर पर आपके ईमेल बॉक्स में पहुँच जाती है. इसे पढ़ें और परिजनों, मित्रों को फॉरवर्ड करें.

GARBHANAL

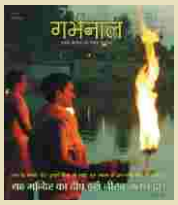

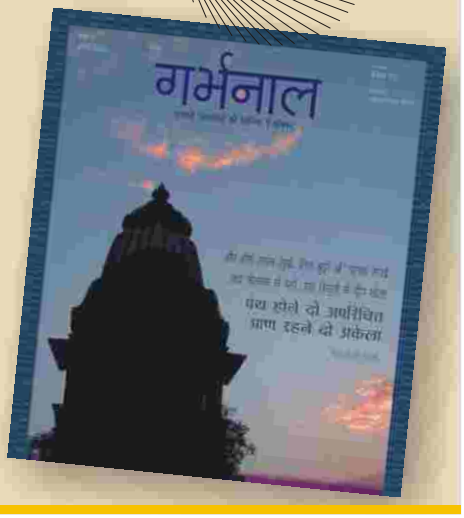

गर्भनाल के पुराने सभी अंक www.garbhanal.com पर उपलब्ध है.

Beacon Signs
1985 Inc.

7040 Torbram Rd. Unit # 4, Mississauga, ONT. L4T 3Z4

Specializing In:

Illuminated Signs awning & pylons

Channel & Neon letters

Banners

Architectural signs

VEHICLE GRAPHICS

Engraving

Silk screen

Silk screen

Design Services

Precision CNC cutout plastic, wood & metal letters & logos

Large format full Colour imaging System

SALES – SERVICE - RENTALS

Manjit Dubey

दुबे परिवार की ओर से हिन्दी चेतना को बहुत बहुत शुभकामनायें

Tel: (905) 678-2859 **Fax: (905) 678-1271**

E-mail: beaconsigns@bellnet.ca

महामना का हिन्दी प्रेम

■ *चन्द्रमौलि मणि, लखनऊ*

महामना मदन मोहन मालवीय जी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे. उनका देश प्रेम, उनकी विद्वता, कर्तव्यनिष्ठा, नि:स्पृहता आदि जग जाहिर है. स्वतन्त्रता आन्दोलन में उनका योगदान अप्रतिम था. शिक्षा के क्षेत्र में, स्वतन्त्रता संग्राम में, हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान में उन्होंने जो किया, वह निश्चय ही अविस्मरणीय है. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय उनकी धवल कीर्ति का स्तम्भ है ही.

कम लोग जानते होंगे कि मालवीय जी एक सरस कवि भी थे. वे 'मकरंद' उपनाम से ब्रजभाषा में कविता करते थे. वह भारतेंदु का युग था. भारतेंदु जी के मार्गदर्शन में सैकड़ों नवोदित कवि सामने आये और अनेक पत्र-पत्रिकाएँ निकलीं. उनके दरबार में नवोदित कवि अपनी रचनाएँ पढ़ते और समस्यापूर्ति करके भेजते. मालवीय जी का भी 'मकरंद' उपनाम से योगदान था. एक बार उन्होंने 'राधिका रानी' समस्या की पूर्ति करके दरबार में कुछ सवैये लिखकर भेजे. पाठकों के आनन्दवर्धन के लिए कुछ अंश नीचे प्रस्तुत हैं :

इंदु सुधा बरस्यो नलिनील पै वे न बिना रवि के हरखानी।
त्यों रवि तेज दिखायो तऊ बिनु इंदु कुमोदनी ना विकसानी।।
न्यारी कछु यह प्रीति की रीति हहिं 'मकरंद जू' जात बखानी।
सांवरे कामरी वारे गुपाल पै रीझि लटू भई राधिका रानी।।

प्रीति की रीति का विरोधाभास कितनी सहजता से दिखाया गया है. आगे चलकर प्रेम प्रसंग में कृपणता का चित्रण विलक्षण है.

मांगत मोती माल नहीं नहिं मांगत तोसो मैं भोजन पानी।
सारी न मांगत हौ 'मकरंद' न थारी अनेक सुगन्ध सानी।।
मांगत हौं अधरा - रस रंचक सोऊ न दीज्तु हौ सनमानी।
सुमता एती तुम्हें नहिं चहिये बाजति हौ चहूँ राधिकरानी।।

कृष्ण कहते हैं कि आप चारों और बाजति हैं. अर्थात चारों और प्रसिद्ध हैं. ऐसी कृपणता आपको शोभा नहीं देती. 'मकरंद' कवि ब्रज के फाग का सजीव चित्रण करते हैं :

धूम मची ब्रज फागु री आज, बजै डफ झांझ अबीर उड़ानी।
ताकि चलै पिचुकरी दुहूँ ओर गलीं में रंग की धार बहानी।।
भीजें भिगावैं ढें 'मकरंद' दुहु, लखि सोभा न जात बखानी।
ग्वालन के साथ इतै नन्दलाल, उतै संग गोवालिन राधिकरानी।।

ये सवैये रीतिकाल की उत्कृष्ट परम्परा का पालन करते हुए समस्या पूर्ति का कठिन कार्य भी सम्पादित कर रहे हैं. मालवीय जी को कविता करने और सुनने का चाव था. उन्हें, सूर के सैकड़ों पद और विहारी के अनेक दोहे भी कंठस्थ थे.

यह मालवीय जी का व्यक्तित्व था, जो बाबू श्यामसुन्दर दास, आचार्य प्रवर रामचन्द्र शुक्ल, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', लाला भगवानदीन जैसे विद्वानों को वे काशी हिदू विश्वविद्यालय के लिए ला सके.

1884 ई. में हिंदी उद्धारिणी प्रतिनिधि मध्य सभा प्रयाग में स्थापित हुई, जिसका उद्देश्य नागरी को उसका जन्मजात अधिकार दिलाना था. मालवीय जी ने इसमें पर्याप्त योगदान दिया. पंडित बालकृष्ण भट्ट के 'हिदी प्रदीप' में लेखन के अतिरिक्त उन्होंने 'हिन्दुस्तान' और 'अभ्युदय' का सम्पादन प्रारम्भ किया.

मालवीय जी नागरी प्रचार आन्दोलन के मुखिया बने. कचहरी में फ़ारसी-उर्दू के स्थान पर हिंदी-देवनागरी को मान्यता दिलाने के लिए उन्होंने अथक परिश्रम किया. गहरी छान-बीन करके नागरी के पक्ष में प्रमाण और आंकड़े इकट्ठे किये. सैकड़ों जगह डेपुटेशन भेजे गये और हिंदी भाषा और नागरी लिपि की सरलता, सटीकता और उपयोगिता सिद्ध की गई. इस सम्बन्ध में उनका लेख कौर्ट कैरेक्टर्स एंड प्राइमरी एजुकेशन इन नार्थ वेस्टर्न प्राविन्सेज़ जो मालवीय जी एवं उनके कुछ अन्य विशिष्ट व्यक्तियों ने गवर्नर सर एटनी मैकडोल्ड को 1898 ई. में प्रतिवेदन के रूप में प्रस्तुत किया था, बहुचर्चित है. मालवीय जी का कथन इतना तर्कपूर्ण था कि उनकी अधिकांश बातें मान ली गईं. कुछ मुसलमान नेताओं ने हिंदी का कड़ा विरोध किया, फिर भी न्यायप्रिय गवर्नर अपने आदेश से नहीं डिगे. सरकारी नौकरों को आदेश हुआ कि शीघ्र हिंदी में काम चलाऊ योग्यता प्राप्त कर लें.

इस विजय से काशी की 'नागरी प्रचारिणी सभा' में भी जान आ गई. 10 अक्तूबर 1910 को काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने मालवीय जी का अभूतपूर्व सम्मान क्या. वह इसके सभापति बनाये गये. हिंदी को जो स्थान मिल गया था, वह मुख्यत: मालवीय जी के सुप्रयास का फल था. सर्वविदित है कि हिंदी साहित्य सम्मेलन संस्था को भी, जिसकी नींव मालवीय जी के प्रयास से पड़ी थी, उत्तरोतर प्रगति करती गई. देश के मूर्धन्य नेता इसके सभापति होते रहे जिनमें महात्मा गांधी भी थे. मालवीय जी इसके कई बार सभापति चुने गये थे. आठवें अधिवेशन के लिए जब मालवीय जी ने महात्मा गांधी से अनुरोध किया था, तब महात्मा गांधी ने कहा था, मैं बडील (बड़े) भाई का आदेश कैसे टाल सकता हूँ. मालवीय जी का 'तुलसी जयंती' आदि अवसरों पर भाषण सरल एवं सुबोध हिंदी में होता था. उनके आन्दोलन ने हिंदी का प्रयोग व्यापक बनाया.

यह मालवीय जी का व्यक्तित्व था, जो बाबू श्यामसुन्दर दास, आचार्य प्रवर रामचन्द्र शुक्ल, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', लाला भगवानदीन जैसे विद्वानों को वे काशी हिदू विश्वविद्यालय के लिए ला सके.

मालवीय जी के ही प्रयास से कांग्रेस के कार्यकाल में हिंदी प्रवेश पा सकी. अनेक राजनैतिक, सामाजिक क्रियाकलापों में व्यस्तता के बावजूद मालवीय जी ने हिंदी के लिए जो भी किया, वह चिर स्मरणीय रहेगा.

(श्री पन्नालाल जायसवाल के सौजन्य से यह लेख प्राप्त हुआ.)

◆◆◆

Anil Bhasin
अनिल भसीन

१९९० से आपकी सेवा में

घर होता है जीवन का आधार।
घर वोह है, जहाँ मिले सुख – शान्ति और प्यार॥
जो भी "अनिल" के पास आया
उसने अपने सपनों का घर पाया॥

Anil Bhasin

Sales Representative
Remax Realtron Realty Brokerage Inc.
183 Willowdale Avenue,
Toronto, M2N 4Y9
Cell: 416-410-GHAR(4427)
fax: 416-981-3400
anil@ghar.ca
www.ghar.ca

RE/MAX

ANIL BHASIN'S GHAR.CA
GHAR MEANS HOME

RE/MAX® Remax Realtron Realty Brokerage Inc

Tel: 416-222-8600 Fax: 416-221-0199
183 Willowdale Avenue, Toronto, M2N 4Y9
Independently owned

FAR EASTERN BOOKS

Leading Publisher & Distributors of Books, Periodicals
and Multimedia Material in International Languages

Virender Malik
General Manager

Tel: 905-477-2900, 800-291-8886, Fax: 905-479-2988

250 Cochrane Drive, Suite 14. Markham, ON L3R 8E5 Canada

Email: books@febonline.com http://www.worldwidebookstore.net

R. Kakar Medicine Professional Corporation
Neo Unlimited Medical Assessments (NUMA)
Neo Pharmaceutical Ltd.
Neo EMR Psych

President, Consultant Psychiatrist
Dr. R Kakar M.B.B.S., M.D., L.M.C.C, F.R.C.P.(C)., M.C.S.M.E.
Voted by "Esteemed World Professional Association of Who's Who"
As Member of The Year 2008 - 2009

Pravasi Achievers Gold (प्रवासी स्वर्ण पुरस्कार)
September 10, 2010 House of Lords London England .U.K.
Hind Rattan Award (हिन्द रत्न पुरस्कार)
Recipient at Republic Day Eve on 25th January 2011 at Delhi, India.

Tel: 416-298-2090
416-298-2363
Fax: 416-298-3493

Address Suite 222, 3447 Kennedy Road
Agincourt, ON. M1V 3S1
Cell: 647-271-4260
E-Mail: rvkakar@yahoo.ca

Office Hours
By Appointment

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय एक विलक्षण व्यक्तित्व

■ *गिरिधर मालवीय*

भारतवर्ष में 19वीं शताब्दी इस देश के लिए वरदान बनकर आई, जब देश ने अनेक ऐसे सपूत पैदा किये, जिनके प्रयासों से ही सदियों से गुलामी का अभिशाप झेल रहा यह राष्ट्र पुन: आत्म सम्मान के साथ जीने के सपने को साकार करता 15 अगस्त 1947 से स्वतन्त्र राज्य का गौरव प्राप्त कर सका. देश के इन महान सपूतों में 25 दिसंबर 1861 को जन्मे पं. मदन मोहन मालवीय का नाम भी जुड़ा हुआ है. फिर भी कुछ हद तक इसे एक विडम्बना ही मानना चाहिए कि इस देश में उनका नाम अधिकांश लोग उन्हें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक तथा एक महान शिक्षाविद् के रूप में ही जानते हैं. शिक्षा के अतिरिक्त मालवीय जी एक महान देशभक्त, राजनेता, अद्भुत वक्ता, सुविख्यात निर्भीक पत्रकार, समाज सुधारक, हिंदी के सबसे बड़े प्रवर्तक तथा पोषक, अपने समय के प्रयाग उच्च न्यायालय के शीर्ष एवं सफलतम अधिवक्ता, आर्थिक सुधारों के प्रखर चिन्तक तथा अत्यंत कोमल हृदय वाले संवेदनशील मिष्टभाषी, आदर्श आचरण के व्यक्तित्व के धनी महानुभाव थे, जिसकी वजह से उन्हें महामना कहा गया. उन्होंने कभी भी तुच्छ वस्तुओं की इच्छा नहीं की और न ही कभी तुच्छ भावनाओं को मन में स्थान दिया. उन्हें अपने द्वारा किसी भी किये गए महत्वपूर्ण अथवा अच्छे कार्यों की अन्य लोगों को जानकारी हो इसका प्रयास करना तो दूर उन्होंने उल्टा यह तरीका अपनाया था कि उनके द्वारा किये गए व पूरे कर दिए हुए सद्कार्यों का कोई प्रचार न करे. अपने द्वारा सम्पादित कार्य वह किसी अपने विश्वासपात्र व्यक्ति को सौंपकर अन्य नए कार्य को उन्मुख हो जाते थे. उनके नाम का उल्लेख कहीं न हो इस बात पर वह इतना बल देते थे कि उन्होंने अपने बनाए अपने घरों के बाहर भी अपना नाम कभी नहीं लिखवाया. संभवत: यही कारण है कि अन्य सभी क्षेत्रों में उनके योगदान के विषय में देश वासियों को अधिक जानकारी नहीं है.

इस लेख के माध्यम से हिंदी के लिए की गई उनकी अथक सेवा से जन मानस को परिचित कराने का प्रयास किया जा रहा है जिससे यह पता चले कि यदि महामना न हुए होते तो क्या आज हिंदी जिस उच्च पद की अधिकारिणी हुई है उस पद को पाने में वह सफल भी होती ?

महामना के हिंदी-प्रेम की चर्चा के पूर्व यह उल्लेख करना असंगत न होगा कि उनका हिंदी के प्रति समर्पण किसी विवशता या असमर्थता के कारण नहीं था. महामना संस्कृत तथा हिंदी भाषा में भी धाराप्रवाह व्याख्यान करने में प्रवीण थे. अंग्रेज़ी पर तो उनका ऐसा अधिकार था कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी तथा उस समय के भारतवर्ष के ख्यातिप्राप्त अंग्रेजी भाषा के मर्मज्ञ नेतागण भी यदि कोई प्रत्यावेदन आदि ब्रिटिश हुकूमत को अंग्रेजी में भेजना होता था तो उसकी अंग्रेज़ी भाषा के परिमार्जन के लिए उस आलेख को महामना के पास इस आशय से भेज देते थे

महामना के हिंदी-प्रेम की चर्चा के पूर्व यह उल्लेख करना असंगत न होगा कि उनका हिंदी के प्रति समर्पण किसी विवशता या असमर्थता के कारण नहीं था. महामना संस्कृत तथा हिंदी भाषा में भी धाराप्रवाह व्याख्यान करने में प्रवीण थे. अंग्रेज़ी पर तो उनका ऐसा अधिकार था कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी तथा उस समय के भारतवर्ष के ख्यातिप्राप्त अंग्रेजी भाषा के मर्मज्ञ नेतागण भी यदि कोई प्रत्यावेदन आदि ब्रिटिश हुकूमत को अंग्रेजी में भेजना होता था तो उसकी अंग्रेज़ी भाषा के परिमार्जन के लिए उस आलेख को महामना के पास इस आशय से भेज देते थे कि वह उस आलेख की भाषा में यदि कोई संशोधन करना चाहें तो उसे कर दे. राउण्ड टेबल कान्फ्रेंस में जब महामना लन्दन गए तो वहां के अंग्रेज़ नेता यह मानने को तैयार नहीं थे कि महामना ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में नहीं पढ़े हुए हैं क्योंकि उन्हें लगता था कि महामना जिस तरह की विशुद्ध अंग्रेज़ी, जिस प्रकार से बोलते हैं वैसी अंग्रेजी केवल ऑक्सफोर्ड

विश्वविद्यालय के पढ़े छात्र ही बोल पाते थे. यह तो महामना का देशप्रेम व हिंदी के प्रति उनकी अटूट निष्ठा थी कि उन्होंने हिंदी इस देश की राष्ट्र भाषा तथा राजभाषा बने, इसके लिए संकल्पबद्ध होकर हिंदी की पैरवी व उसके प्रचार-प्रसार के लिए अपना अप्रतिम योगदान दिया।

19वीं शताब्दी में भारतीय जनमानस में पराधीनता की कचोट से स्वतंत्रता की ललक जाग उठी थी : *सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी, बूढ़े भारत में आयी फिर से नयी जवानी थी, गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी, दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी* - चरितार्थ हो उठा था.

ऐसे वातावरण में इस प्रान्त के बुद्धिजीवियों के लिए यह भी बर्दाश्त करना असंभव होने लगा था कि यहाँ की सुसंस्कृत तथा समृद्ध भाषा हिंदी होते हुए भी पराधीन होने के कारण प्रदेश की जनता को समस्त राजकीय कार्यों में विदेशी भाषा फारसी अथवा अंग्रेज़ी का ही प्रयोग करना पड़ता था. फलतः 19वीं शताब्दी के मध्य तक आते-आते अनेक स्वाभिमानी देशभक्त बुद्धिजीवियों ने इस बात का बीड़ा उठाया कि प्रदेश में विदेशी भाषा की जगह निज भाषा के प्रयोग की शासकीय अनुमति मिल जाये. इस कड़ी में एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयोग राजा शिवप्रसाद की सितारे हिंद द्वारा भी संवत १८६८ में किया गया, जो उपरोक्त विदेशी लिपियों के हिमायतियों के विरोध के कारण सफल न हो सका.

सन् 1884 ई में हिंदी-उद्धारिणी-प्रतिनिधि-मध्य-सभा प्रयाग में खुली, जिसका उद्देश्य नागरिकों को उसका अधिकार दिलाना था. मालवीय जी ने इसमें जी खोलकर काम किया, व्याख्यान दिए, लेख लिखे और अपने मित्रों को भी इस काम में भाग लेने के लिए उत्प्रेरित किया. उन्होंने इस सम्बन्ध में विवेचना द्वारा यह जाना कि संवत् 1868 ई. में राजा शिव प्रसाद सितारेहिंद ने कचहरियों में नागरी के प्रवेश के लिए प्रयत्न किया था, किन्तु उनको सफलता न मिली. उन्ही की भांति बहुतों ने जब-तब छिटपुट यत्न किया, पर सभी असफल रहे. अंत में महामना पंडित मदन मोहन मालवीय मैदान में आये और एक अत्यंत व्यवस्थित ढंग से उन्होंने इस काम को हाथ में लिया. एक ओर तो उन्होंने नागरी के पक्ष में हस्ताक्षरों की योजना प्रारंभ की तो दूसरी ओर बहुत सी सामग्री संचित कर कोर्ट कैरेक्टर एंड प्राइमरी एजुकेशन नाम की पुस्तक लिखी जिससे हिन्दी का प्रयोग सरकारी कामकाज में क्यों किया जाए, इसकी प्रचुर सामग्री थी.

जब मालवीय जी नागरी-प्रचार आन्दोलन के मुखिया बने तब नागरी के सबसे बड़े विरोधी सर सैयद अहमद समाधि में गहरी नींद ले रहे थे, पर मोहसुनुल मुल्क ने नागरी के विरुद्ध घनघोर आन्दोलन शुरू कर दिया. जान पड़ा कि बेचारी नागरी यूँ ही पड़ी रह जाएगी. लॉर्ड कर्ज़न की सरकार भी उनकी ओर झुकी जा रही थी पर मालवीय जी से लोहा लेना भी जरा टेडी खीर थी. दिन रात एक करके अपनी वकालत के सुनहरे दिनों में धुन के साथ मालवीय जी ने गहरी छानबीन के साथ नागरी के पक्ष में प्रमाण और आंकड़े इकट्ठे किये. सैकड़ों जगह डेपुटेशन भेजे गए और हिंदी भाषा और नागरी लिपि की सुन्दरता और उपयोगिता दिखलाई गई. मालवीय जी ने वकालत करते हुए भी अपने मित्र पंडित श्री कृष्ण जोशी के साथ मिलकर घोर परिश्रम किया. अपने पास से रुपया खर्च करके उपरोक्त कोर्ट लिपि का इतिहास, प्राचीन अधिकारियों की सम्मतियाँ एकत्र करके एक बड़ा सुन्दर उपरोक्त पुस्तक कोर्ट कैरेक्टर एंड प्राइमरी एजुकेशन इन नॉर्थ वेस्टर्न प्रोविंस लिखी. यह अभ्यर्थना लेख लेकर 2 मार्च सन् 1898 ई. को अयोध्या नरेश महाराजा प्रताप नारायण सिंह, मांडा के राजा रामप्रसाद सिंह, अवागढ़ के राजा बलवंत सिंह, डॉक्टर सुन्दर लाल आदि के साथ मालवीय जी का एक दल दिन के 12 बजे गवर्नमेंट हाउस प्रयाग में छोटे लाट सर एन्टोनी मेकडोनल के साथ मिला. मालवीय जी की मेहनत सफल हो गयी. उनकी सब बातें मान ली गयी. अंत में 18 अप्रैल सन् 1900 ई. को सर ए.पी. मेकडोनल ने एक विज्ञप्ति (गवर्नमेंट गेजेट) निकाल दिया जिससे कचहरियों में तथा शासकीय कार्यों में नागरी को भी स्थान मिल गया.

लेकिन देश के हिंदी विरोधी लोगों ने इस पर ऐसा ऊधम मचाया कि एक बार पुनः हिंदी डगमगाती दिखी. जगह-जगह पर सभाएं की गई तथा जगह-जगह से प्रस्तावों की बौछार आई कि हिंदी को इस प्रकार स्वीकार न किया जाये, पर मालवीय जी अपने मिशन में जुटे रहे. फलतः लाट साहब तनिक भी विचलित न हुए और अंत में बड़े लाटसाहब की अनुमति से यह आइन बन गया कि सभी लोग अपनी अर्जी, शिकायत की दरखास्त चाहे हिंदी या फारसी में दे सकते हैं और सभी कागज़ात जैसे सम्मन आदि जो सरकार की ओर से जनता के लिए निकाले जाएँगे. वह दोनों लिपियों यानि नागरी और फारसी लिपि में लिखे अथवा भरे होंगे. सरकार ने इसके साथ ही इस बात का भी ऐलान कर दिया कि आगे किसी भी व्यक्ति को तभी नौकरी मिल सकेगी जब वह हिंदी भाषा का भी जानकर हो और जो कर्मचारी अभी हिंदी नहीं जानते हैं वर्ष भर में वे उसे अवश्य सीख लें अन्यथा वह नौकरी से अलग कर दिए जायेंगे.

महामना मालवीय जी द्वारा अपने ही देश में विदेशी भाषाओं के स्थान पर नागरी को अपना समुचित स्थान दिलाने के इस प्रयास से ही हिंदी का प्रचलन अपने प्रदेश में आरम्भ हुआ अन्यथा हिंदी को अपने घर में भी कब तक विदेशी भाषाओं के बोझ के तले दबे रहना पड़ता

एक स्वतन्त्र राष्ट्र को जोड़ने के लिए एक राष्ट्र भाषा के रूप में उन्होंने हिंदी की महत्ता को परखा. उन्होंने यह अनुभव किया कि देश के गैर हिंदी भाषी क्षेत्रों में जनमानस को हिंदी जानने का व समझने का अवसर मिलना आवशयक है.

आज की तारीख में इसका अनुमान लगाना भी कठिन है.

इस समय के संयुक्त प्रान्त (आज के उत्तर प्रदेश) में हिंदी को भी राजभाषा का दर्जा दिला देने के पहले से ही महामना वर्ष 1886 ई. से कांग्रेस से जुड़कर देश की राजनीति में आजादी की लड़ाई का हिस्सा बन चुके थे. धीरे-धीरे उनको देश के बड़े राजनेता के रूप में जाना जाने लगा. अखिल भारतीय कांग्रेस के 1909 के अधिवेशन के वह अध्यक्ष बने. पूरे देश के भ्रमण व लोगों के संपर्क से उन्हें यह स्पष्ट दिखने लगा कि अनेक भाषाओं के इस देश में भारत के स्वतन्त्र होने पर किसी एक भाषा को संपर्क भाषा के रूप में राष्ट्र भाषा का रूप लेना पड़ेगा. देश के अधिकांश भाग में तथा जनसंख्या के अधिकांश भाग द्वारा किसी न किसी प्रकार की हिंदी बोली जाती थी जबकि देश की अन्य भाषाएँ भी उतनी ही महत्वपूर्ण होते हुए भी इतने विशाल जनसमुदाय के द्वारा प्रयोग में नहीं लायी जाती थी.

एक स्वतन्त्र राष्ट्र को जोड़ने के लिए एक राष्ट्र भाषा के रूप में उन्होंने हिंदी की महत्ता को परखा. उन्होंने यह अनुभव किया कि देश के गैर हिंदी भाषी क्षेत्रों में जनमानस को हिंदी जानने का व समझने का अवसर मिलना आवशयक है. फलत: वर्ष 1910 में उन्हीं के प्रयासों से काशी में हिंदी साहित्य सम्मलेन की स्थापना हुई, जिसके वह प्रथम अध्यक्ष बने. धीरे-धीरे पूरे देश में हिंदी के प्रचार व प्रसार के लिए हिंदी साहित्य सम्मलेन की शाखाएं बनी, जिनके माध्यम से भारत के गैर हिंदी भाषी क्षेत्रों के जन समुदाय को हिंदी पढ़ने व सिखने का अवसर मिला. अपने स्वभाव के अनुरूप हिंदी साहित्य सम्मलेन की स्थापना करने के बाद मालवीय जी ने इसे बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन को चलाने के लिए सौंप दिया. जिस प्रकार आल इंडिया सेवा समिति की स्थापना करने के बाद उसे मालवीय जी ने पंडित हृदय नाथ कुंजरू को सौप दिया था. कालांतर में कांग्रेस के अधिवेशन में हिंदी को ही राष्ट्रभाषा बनाने के प्रस्ताव को स्वीकृति प्राप्त हुई तथा भारत के स्वतन्त्र होने पर संविधान द्वारा भी हिंदी को ही राष्ट्रभाषा बनाया गया.

इसी प्रकार आधुनिक हिंदी के जन्मदाता भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा काशी में स्थापित नागरी प्रचारिणी सभा भी नागरी लिपि के प्रचार-प्रसार में लगी थी, किन्तु समुचित मार्गदर्शन प्राप्त न होने के कारण उसकी स्थिति बिगड़ रही थी. मालवीय जी ने नागरी प्रचारिणी सभा की गतिविधियों में आरम्भ से ही अत्यधिक रुचि ली तथा नागरी प्रचारणी सभा को भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के कार्यों में गतिशील बनाकर उसे एक प्रकार से पुनर्जीवित कर दिया.

आज इस देश के लोगों को संभवत: इस बात का अहसास भी न होगा कि भारत वर्ष में हिंदी को विश्वविद्यालय में एक विषय के रूप में कोई भी मान्यता प्राप्त नहीं थी. मालवीय जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिंदी को सर्वप्रथम एक विषय के रूप में मान्यता दी. आज हिंदी की पढ़ाई सारे विश्वविद्यालय में प्रचलित है. हिंदी साहित्य के पुरोधा पं. रामचंद्र शुक्ल, पं. अयोध्या सिंह 'हरिऔध', पं. भगवानदीन आदि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के ही रत्न थे.

मालवीय जी को हिंदी के अख़बारों का जनक कहना भी अतिशयोक्ति न होगी. काला कांकर से 'हिंदुस्तान' का संपादन करने के बाद प्रयाग से वर्ष 1907 में प्रकाशित 'अभ्युदय' व उसके बाद 'मर्यादा' ने अपने समाचार पत्र व सम्पादकीय से जो अतिशय सफलता पाई वह बाद में प्रकाशित होने वाले अन्य समाचार पत्रों के लिए मार्गदर्शक बनी.

आश्चर्य होता है कि अपने जीवनकाल में अनेक कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी महामना मालवीय ने हमारी राष्ट्र भाषा हिंदी के लिए कैसे इतना कार्य किया. उससे भी अधिक आश्चर्य होता है कि हिंदी के क्षेत्र में इतना अधिक योगदान करने के बाद भी हिंदी के प्रवर्तक व प्राण के रूप में महामना को क्यों नहीं जाना जाता.

टिप्पणी : इस लेख की सामग्री का मूल स्रोत नागरी प्रचारिणी सभा काशी से प्रकाशित आचार्य श्री चन्द्रबली पाण्डेय की पुस्तक 'राष्ट्रभाषा पर विचार' तथा लोकसभा सचिवालय से प्रकाशित पुस्तिका पंडित मदन मोहन मालवीय है.

◆◆◆

Maharani Fashions

- Ladies Designer Suits
- Sarees
- Salwar Kameez
- Men's Suiting
- Imitation Jewellery

An Exciting Collection of The
Latest in Festive Fashions!!!

1417 Gerrard Street East, Toronto,
Ontario M4L 1Z7
Tel: 416-466-8400

महामना

मदन मोहन मालवीय

■ *ओमलता अखौरी, अमेरिका*

वीर प्रस्विनी भारत भूमि ने अनेक महापुरुषों को जन्म दिया है. समय विशेष के काल खण्ड में जिन्होंने अपने धर्म एवं कर्म से स्वदेश की सेवा की और मान रखा है. पं. मदन मोहन मालवीय भी उन्ही महापुरुषों में एक थे जो एक कर्मठ स्वतंत्रता सेनानी, विद्वान, सफल प्रभावशाली वक्ता तथा राष्ट्रीयता की भावना से भरे हुये थे. स्वदेश के उत्थान के लिये एवं उसे अपने प्राचीन गौरव मे पुन:प्रतिष्ठापित करने के लिये उन्होंने बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय की स्थापना की. अपने इन्हीं गुणों के कारण वे महामाना कहे गये.

सत्यमेव जयते का प्रसिद्ध नारा उन्हीं के द्वारा प्रचारित किया हुआ है. उनकी वैदिक धर्म मे आस्था थी. हरिद्वार में हर की पौडी में गंगाजी की आरती मालवीयजी के द्वारा ही आरम्भ करवाई गयी है.

अठारहवीं सदी ऐसे बहुत से महापुरुषों के जन्म और उद्‌भव की सदी रही है. इसी समय में सन् 1861 ईस्वी में 25 दिसम्बर को इलाहाबाद में मदन मोहन मालवीय जी का जन्म हुआ. इनका जन्म एक सुसंस्कृत ब्राह्मण परिवार में हुआ था. इनके पिता संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान थे. भागवत कथा सुनाया करते थे. इनके पूर्वज मालवा से आये थे और इसी कारण ये मालवीय कहे जाते थे. पांच भाई और दो बहनों में ये अपने माता-पिता की पांचवीं संतान थे.

इस पारिवारिक परिवेश में मालवीयजी को बचपन में ही बहुत सारे श्लोक कण्ठस्थ थे जिन्हें वे प्राय: ही लोगों को सुनाया करते थे. बाल्यकाल से ही वे बड़े मेधावी थे. पांच वर्ष की आयु में इन्हें प्रारम्भिक शिक्षा के लिये धर्म ज्ञानोपदेश पाठशाला भेजा गया. बाद में उनका नामांकन इलाहाबाद जिला स्कूल में हुआ. ये बड़े प्रतिभाशाली थे. छात्र जीवन में ही ये मकरंद उपनाम से कवितायें लिखा करते थे जो पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थीं.

सन् 1879 ईस्वी में उन्होंने प्रवेशिका की परीक्षा उत्तीर्ण की और म्योर सेन्ट्रल कॉलेज में प्रवेश लिया जो अभी इलाहाबाद युनिवर्सिटी के नाम से जाना जाता है.

महामाना मदन मोहन मालवीय सात भाई-बहनों में वे अपने माता-पिता की पांचवीं संतान थे. परिवार की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं होने के कारण उनकी प्रतिभा पर हरिसन कॉलेज के प्रधानाचार्य उन्हें मासिक छात्रवृत्ति प्रदान करते थे. सन् 1884 ईस्वी में उन्होंने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की. उनकी इच्छा इससे भी आगे संस्कृत मे एम.ए. की पढ़ाई करने की थी परन्तु पारिवारिक आर्थिक अवस्था के कारण उनकी यह इच्छा पूरी नही हो सकी और जुलाई 1884 से इलाहाबाद के जिला स्कूल मे संस्कृत के अध्यापक के रूप में उन्होंने अपनी आजीविका आरम्भ की.

यह दिस्म्बर 1886 था जब उन्होंने कलकत्ते में राष्ट्रीय कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन मे भाग लिया. इसके अध्यक्ष थे दादा भाई नौरोजी और यहीं से उनकी राजनीतिक यात्रा आरम्भ हुई. उनके उस समय के भाषण से दादा भाई नौरोजी तथा कालांकर राज्य के शासक राजा रामपाल सिंह बहुत प्रभावित हुये. राजा रामपाल सिंह एक हिन्दी पत्रिका साप्ताहिक हिन्दुस्तान निकालने वाले थे और इसके लिये वे एक योग्य सम्पादक ढूंढ रहे थे. वह व्यक्तित्व उन्हें मालवीय जी में दृष्टिगत हुआ अत: उन्होंने मालवीयजी को इसके लिये कहा.

जुलाई 1887 से मालवीय जी साप्ताहिक हिन्दुस्तान के सम्पादक हुये. स्कूल में अध्यापन का कार्य उन्होंने छोड़ दिया. उच्च शिक्षा की पिपासा उनके मन में थी लिहाजा इन्होंने इलाहाबाद में वकालत की पढ़ाई आरम्भ की. तभी उन्हें एक अंग्रेजी दैनिक इंडियन युनियन के लिये सह-सम्पादक का प्रस्ताव मिला. उन्होंने वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1893 से इलाहाबाद हाईकोर्ट में वकालत करने लगे.

कांग्रेस के अधिवेशन मे भाग लेने के बाद से वे चर्चित हो गये थे. सन् 1909 ईस्वी में वे कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुये. क्रमश: 1909, 1918, 1932 एवं 1933 में चार बार वे कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये. मालवीयजी ने सेवा समिति नाम से एक स्काउट दल की भी स्थापना की थी.

वह समय विशेष स्वतंत्रता सेनानियों के लिये देश को स्वतंत्र करने को कटिबद्ध था. कांग्रेस की सभाओं मे वे अंग्रेजी शासन की अन्यायपूर्ण नीतियों पर खुल कर बोलते थे और वे एक जनप्रिय नेता के रूप मे उभर रहे थे.

उधर मालवीय जी के हृदय मे एक अभूतपूर्व इच्छा संकल्प का रूप धारण कर रही थी. इतने दिनों की परतंत्रता के कारण जन समाज से विस्मृत होते भारत के आध्यात्मिक स्वरूप भारतीय दर्शन एवं समृद्ध संस्कृत भाषा को पुन: अपनी गौरव गरिमा में प्रतिष्ठित करने का स्वप्न वे देख रहे थे. उनकी सोच में एक ऐसे हिन्दु विश्व विद्यालय की स्थापना थी जहां वेद, वेदांत, स्मृति, दर्शन, पुराण और इतिहास के अध्ययन-अध्यापन का कार्य हो. जहां हमारी प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद का सम्पूर्ण ज्ञान, उसके लिये प्रयोग शालायें एवं औषधीय वनस्पतियों के लिये उद्यान हो, जिससे हमारी यह गौरवमय प्राचीन विद्या पुन: फले-फूले एवं उसका प्रचार प्रसार हो. जहां शारीरिक और सामाजिक विज्ञान तथा कला नाटय शास्त्र तथा कृषि एवं आधुनिक विज्ञान के नये-नये आविष्कारों की शिक्षा और तकनीकि शिक्षा उपलब्ध हो साथ ही साथ अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं की भी शिक्षा की व्यवस्था हो. सम्पूर्ण रूप से विश्वविद्यालय बने. भारतीयों के लिये एक सम्पूर्ण शिक्षण संस्थान हो और जो आधुनिक भारत के नव निर्माण मे सहयोगी हो.

उनकी कल्पना इच्छा और संकल्प 1916 ईस्वी में वाराणसी मे पूर्ण हुआ, जब बनारस हिन्दु विश्व विद्यालय की सम्पूर्ण रूप से स्थापना हुई, जहां बारह हजार विद्यार्थियों के शिक्षण, आवास एवं भोजन की व्यवस्था थी. 1920 ईस्वी में मालवीयजी इस विश्वविद्यालय के कुलपति बने.

उस समय की प्रथा के अनुसार मालवीय जी का विवाह 1878 ईस्वी में सोलह वर्ष की आयु मे मिर्जापुर की कुंदनदेवी से सम्पन्न हुआ. वे पांच पुत्र और पांच पुत्रियों के पिता बने, परन्तु उनमें से चार पुत्र और दो पुत्रियां ही जीवित रह सकीं.

देश में स्वतंत्रता की लहर चल रही थी. महात्मा गांधी द्वारा चलाये जा रहे असहयोग आंदोलन में मालवीयजी पूर्ण रूप से भाग ले रहे थे. सरोजनी नायडू, जवाहरलाल नेहरू, लाला लाजपतराय आदि नेताओं के साथ मिलकर वे देश की स्वतंत्रता के लिये कार्य करते रहे तथा जेल यात्राओं में भी भाग लेते रहे. सन् 1931 ईस्वी में महात्मा गांधी के साथ गोल मेज कॉन्फ्रेंस मे भाग लेने के लिये वे लंदन गये जहां उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया.

वे एक समाज सुधारक भी थे. जाति प्रथा के उन्मूलन के लिये उन्होंने एक बार रथ यात्रा के अवसर पर 200 दलितों एवं हरिजनों को कालंकर के मंदिर में प्रवेश दिलाया. अछूतों के मंदिर प्रवेश के लिये वे सदैव प्रयत्नशील रहा करते. राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के लिये वे सदैव कटिबद्ध रहे.

सन् 1946 ईस्वी 12 नवम्बर को राष्ट्र के इस महान गौरव महामना मदन मोहन मालवीय का निधन हो गया. इस तरह मात्र कुछ समय बाद मिली राष्ट्र की स्वतंत्रता को वे देख नही पाये. उनके अनेक उद्धृत-अनुद्धृत कार्यों के अतिरिक्त मात्र बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय का अनुपम शिक्षण संस्थान ही उनके परिचय के लिये यथेष्ट है जहां प्रवेश द्वार पर उनकी विशाल प्रतिमा स्थापित है.

हम भारतीय उन्हें अपना प्रणाम एवं श्रद्धांजली अर्पित करते हैं.

◆◆◆

THE NILGIRIS

Authentic Madras Kitchen

आप नीलगिरी में आयें,
हमारे शुद्ध, स्वादिष्ट, इडली, धोसा,
उतपम व मिठाइयाँ खायें, आप उँगलियाँ चाटते ही रह जायेंगे,
और बार –बार अपने दोस्तों और परिवार के साथ आयेंगे ।

Dine in Resturant
Take out & Catering

● *Idli* ● *Masala Dosa* ● *Rava Dosa*
● *Uthappam* ● *Sweets & Snacks*

Markham & McNicoll Centre
3021 Markham Road, Unit #50
Scarborough, ON M1X 1L8

Jeyanthy or Bhalu
Tel/Fax: (416) 412 0024

कैनेडा का सर्वश्रेष्ठ हिन्दी साप्ताहिक • हर सप्ताह 30,000 पाठक

हिन्दी Abroad

www.hindiabroad.com

हिन्दी Abroad

Published by
HINDI ABROAD MEDIA INC.

Chief Editor
Ravi. R. Pandey
(Media Critic, Ex Sub Editor - Times Of India Group, New Delhi)

Editor
Jayashree

News Editor
Firoz Khan

Reporter
Rahul, Shahida

New Delhi Bureau
Rangnath Pandey
(Ex Chief Sub Editor - Navbharat Times, New Delhi)
Shiela Sharma,
Vijay Kumar

Designing
AK Innovations Inc.
416-892-1538

7071 Airport Road, Suite 204A
Mississauga, ON
Canada. L4T 4J3
Tel: 905-673-9929
Fax: 905-673-9114
E-mail: hindiabroad@gmail.com
editor@hindiabroad.com
Web: www.hindiabroad.com

Disclaimer: The opinions expressed in Hindi Abroad may not be those of the publisher. Contents of this publication are covered by copyright and offenders will be prosecuted under the law.

Personalized Investment Advice

For individual Investors

Member CIPF

Edward Jones®

Serving Individual Investors

Harvinder Anand
Investment Representative

- GICS
- Bonds
- Stocks
- Mutual Funds
- RRSPS RRIFS RESPS
- Life insurance
- Disability Insurance
- Critical Illness Insurance

INSURANCES AND ANNUITIES ARE OFFERED BY
EDWARD JONES INSURANCE AGENCY

Phone No: 905-472-8300 www. edwardjones.com

280 Elson St. Unit # 5, Markham, Ont. L3S 3L1

गांधीवाद के प्रभाव के कारण वह सशस्त्र क्रान्ति के विरुद्ध थे. अहिंसा एवं धर्म के आधार पर वह आतंकवाद की निंदा करते थे. भारत के सर्वांगीण विकास के लिए वह धार्मिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा पर बल देते थे. सांस्कृतिक आधार पर ही उन्होंने भारत को राष्ट्रवाद का सिद्धांत दिया.

राष्ट्र शिक्षक

पंडित मदनमोहन मालवीय

■ *डॉ. चन्द्र सूद, कैनेडा*

हमारे पूर्वज साहित्यकारों का स्मरण सदैव ही प्रेरणात्मक, शिक्षाप्रद, मार्गदर्शक एवं सांस्कृतिक आकर्षण का केंद्र रहा है. महापुरुषों के गौरवमय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में श्रद्धेय मदन मोहन मालवीय जी का नाम सदैव ही आदर के साथ लिया जाता रहा है.

आपका जन्म 25 दिसम्बर 1861 में उत्तरी भारत के आइयापुर गाँव में हुआ. यह स्थान झांसी के निकट मालव प्रदेश में स्थित है. इनके जन्म से पूर्व इनके पूर्वज वहां ही रहते थे. जिस समय इनका जन्म हुआ, उस समय एक और सूर्य अस्त हो रहा था और दूसरी और एक नया सूर्य शिशु मालवीय के रूप में धरा पर जन्म ले रहा था.

इनके पिता का नाम पं. बृजनाथ मालवीय तथा माता का नाम मूनादेवी था. उनके दादा पं. प्रेमधर मालवीय थे. इनके परिवार में पंडिताई का व्यवसाय होता था. इस कारण ही ये लोग अपने नाम के आगे पंडित लिखते थे. यद्यपि श्री मालवीय जी प्रयाग (इलाहबाद) जाने से पूर्व अपने नाम के आगे व्यास भी लिखते थे. परन्तु प्रयाग जाने के पश्चात मालवीय के नाम से ही जीवन भर जाने जाते रहे और उसी नाम से आगे चलकर प्रसिद्ध हुए.

बचपन में इनकी शिक्षा घर पर ही हुई क्योंकि आइयापुर में कोई पाठशाला नहीं थी, अत: पं. हरदेव जी ने इन्हें घर पर ही लघु कौमिदी नामक संस्कृत व्याकरण ग्रन्थ पढ़ाया. इन्हें भगवत गीता, मनुस्मृति तथा अन्य ग्रन्थों के चरित्र विषयक श्लोक भी याद थे और प्रयाग जाने पर वेद एवं उपनिषद पढ़ने में भी रुचि लेने लगे.

इनका परिवार अत्याधिक निर्धन था. इस कारण इनकी माता ने इनकी अंग्रेजी पढ़ने की तीव्र इच्छा को समझते हुए अपनी सोने की चूड़ियाँ लाला गयाप्रसाद के यहाँ गिरवीं रख दीं और इन्हें अंग्रेजी पाठशाला में प्रवेश कराया. वहां अंग्रेजी के शिक्षक गोल्डन साहब थे. वह अत्यंत ही अनुशासन प्रिय थे और छोटी सी त्रुटि पर दंड दे दिया करते थे पर उन्होंने अपनी अंग्रेजी सीखने की रुचि को प्रबल रखा और बी.ए. एल.एल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की.

श्रद्धेय मालवीय जी जन्मजात कवि थे. इन्होंने अपना कवि उपनाम 'मकरंद' रखा. इनकी प्रथम कविता 'राधिका रानी' नाम से प्रकाशित हुई.

मालवीय जी भारत की ओद्यौगिक उन्नति में भी रुचि रखते थे. उन्होंने 1905 में बनारस में भारतीय ओद्यौगिक सम्मेलन एवं 1907 में इलाहाबाद में एकता सम्मेलन की बैठक की. तत्पश्चात 1932 में इलाहाबाद में एकता सम्मेलन की अध्यक्षता की.

यथा समय मालवीय जी ने विवाह भी किया. इनकी पत्नी का नाम कुंडला देवी था. पर साहित्य सेवा एवं देश सेवा इनके जीवन में सदैव ही परम धर्म रहा.

राजनीतिक क्षेत्र में भी इनकी काफी रुचि थी. आरम्भ में श्री मालवीय जी अंग्रेजी सरकार के मित्र थे परन्तु बाद में उनके आलोचक बन गये. स्वराज्य समर्थक होने के कारण उन्होंने भारतीयों के लिए आत्मनिर्णय का अधिकार पाने की सरकार से सशक्त शब्दों में मांग की. उन्होंने कहा आत्म निर्णय हमारा जन्म सिद्ध अधिकार

है. श्री बाल गंगाधर तिलक ने कहा था - स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है.

गांधीवाद के प्रभाव के कारण वह सशस्त्र क्रान्ति के विरुद्ध थे. अहिंसा एवं धर्म के आधार पर वह आतंकवाद की निंदा करते थे. भारत के सर्वांगीण विकास के लिए वह धार्मिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा पर बल देते थे. सांस्कृतिक आधार पर ही उन्होंने भारत को राष्ट्रवाद का सिद्धांत दिया.

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की ज़मीन पर बनारस के राजा का अधिकार था. परन्तु मालवीय जी को उस ज़मीन से विशेष लगाव था. अत: मकर सक्रांति के दिन पर उन्होंने यह भूमि दक्षिणा के रूप में मांग ली और ४ फरवरी 1916 को बसंत पंचवीं के शुभ दिन पवित्र गंगा के किनारे भारत के तत्कालीन वायसराय और गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिंग ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का शिलान्यास किया. तत्पश्चात मालवीय जी इसके संस्थापक बने.

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में बनारस में प्रसिद्ध नेता सुरेन्द्र नाथ बैनर्जी ने कहा था मैं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में तब तक नि:शुल्क प्रोफैसर का कार्य करूंगा जब तक कोई अंग्रेज़ी का उपयुक्त विद्वान् प्रोफैसर नहीं मिलता.

आध्यात्मिक पक्ष - आपकी हिन्दू धर्म के सिद्धांतों पर आगाध श्रद्धा थी. वह श्री कृष्ण को परम शक्ति के रूप में स्वीकार करते थे और गीता में अगाध विश्वास रखते थे. उनका विश्वास था कि धर्म और अधर्म के युद्ध में धर्म, सत्य सदैव ही विजयी होते हैं. किन्तु धर्म को श्रेष्ठ मानने में वह बाल गंगाधर तिलक, विवेकानन्द एवं अरविन्द घोष के समक्ष विचारधारा रखते थे।

उनकी विशेषता थी कि वह अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे और हिंदी एवं संस्कृत के प्रकांड पंडित थे. उनकी सोच थी कि भारतीय संस्कृति उचित सम्मान पाए और शिक्षित लोग इस संस्कृति को समझें. वह समाज सुधारक भी थे. अत: उन्होंने हरिजनों को गले लगाया था. उनका कहना था कि प्राणिमात्र पर दया करो. निर्बलों और निर्धनों के साथ सहानुभूति रखो. स्त्रियों का सम्मान करो. किसी के प्रति क्रूर न बनो. दूसरों के धन की कामना न करा. न किसी से डरो और न ही किसी को डराओ. शुभ कार्यों का परिणाम सदैव अच्छा ही होता है और बुरे कार्यों का परिणाम कभी शुभ नहीं होता.

मालवीय जी पत्रकार एवं सम्पादक भी थे. उन्होंने 'अभ्युदय' व 'दी हिन्दुस्तान' पत्रिकाएँ निकालीं. गांधीजी राष्ट्रपिता थे, तो मालवीय जी राष्ट्र शिक्षक के नाम से प्रसिद्ध थे.

आचार्य पी.सी. रे कहा था - महात्मा गांधी के बाद किसी ऐसे व्यक्ति को पाना कठिन था, जिसने मालवीय के समान त्याग किया और विभिन्न कार्य करने में उन जैसा सबूत दिया है. गाँधीजी चंदा इकट्ठा करने में उन्हें सबसे चतुर मानते थे, क्योंकि 1942 के आन्दोलन के समय मालवीय जी जेल के बाहर थे. उन्होंने कस्तूरबा निधि के लिए एक करोड़ से अधिक चंदा एकत्र किया. वह गांधी जी के साथ 1931 में द्वितीय गोलमेज़ कांफ्रेंस में लन्दन गये.

इतने महान व्यक्तित्व के मालवीय जी स्वभाव से अत्यधिक सौम्य और सरल थे. भोजन के विषय में वह कहा करते थे - जैसा भोजन मैं करता था वैसा तो राजाओं को भी नसीब नहीं होता, क्योंकि राजाओं का भोजन रसोईया वेतन प्राप्ति के बाद बनाता है. लेकिन बचपन से मैंने अपनी माँ के हाथ का बनाया तथा प्रेमपूर्वक परोसा भोजन किया इसलिए मैं सचमुच भाग्यशाली हूँ.

साहित्यकाश का यह नक्षत्र 12 नवम्बर 1946 को इस जगत से विदा ले गया. ◆◆◆

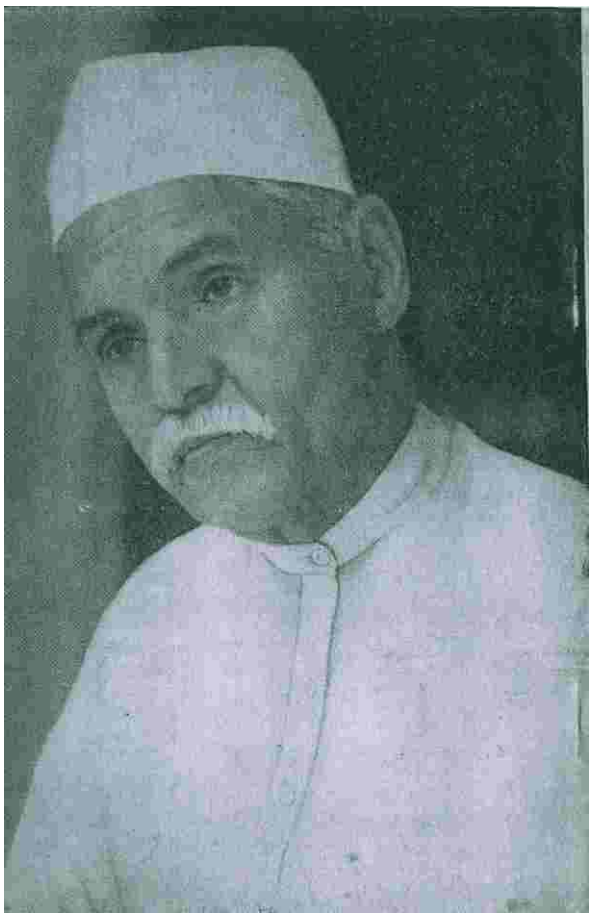

C. M. KAPUR
PROFESSIONAL CORPORATION
CHARTERED ACCOUNTANT

Chander M. Kapur, CMA, CA

2750 14th Avenue, Suite #201
Markham, Ontario
L3R 0B6

Tel: (905) 944-0370
Fax: (905) 944-0372
E-mail: cmkapur@rogers.com

With Best Compliments From:

SNFK CLOTHING INTERNATIONAL INC.
Imports & Exports
Graders of Used Clothing & Wipers
825 Middlefield Road,
Units 2 & 3
Toronto, Ont. M1V 4Z7
Canada
TEL: 416-291-5211 Fax: 416-291-7079
E-MAIL: ash@nfk.ca

MR. ASHFAQH SYED & MRS. NAJMA SYED

CENTENARY OPTICAL

For A Better View of The World

We Offer Affordable Prices in a Wide Variety of Fashionable Frames & Lenses

Designer Frames,
Contact Lenses: Colored, Toric, Bifocal
Eye Exams on Premises,
Brand Name Sun Glasses
Most Insurance Plans Accepted

416-282-2030

2864 Ellesmere Rd, @ Neilson Scarborough, Ontario M1E 4B8

RAVI JOSHI
Licensed Optician &
Contact Lens Fitter

Learn Hindi!

सु+भाषा SU+BHASHA KIDS HINDI

Magnetic board letter set

INTRODUCTORY SET / LEVEL 1

Includes:
* 8.5" x 11" metal board
* 49 Devanagari magnatic letters
* Sound chart on back of board

For ages 4 and up

KIDS HINDI.COM
SUBHASHA.COM
spanchii@yahoo.com
Ph. 1-508-872-0012

मनुष्य के पशुत्व को ईश्वरत्व में परिणत करना ही धर्म है.

■ *वीरभद्र मिश्र*

महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय भारत के स्वतन्त्र संघर्ष युग के प्रदीप्त नक्षत्र हैं. उन्नीसवीं शताब्दी के हलचल भरे ऐतिहासिक क्षितिज पर उनका समुदाय भारतीय मेधा का चरम उत्कर्ष का निदर्शन है. महामना मालवीय जी भारतीय चिंतन की उदारता, भारतीय जीवन पद्धति की सहिष्णुता, भारतीय राजनीतिक, आर्थिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक संघर्ष की समुज्जवलता के मूर्तिमान प्रतीक हैं.

पण्डित मदन मोहन मालवीय मूर्धन्य राष्ट्रीय नेताओं में अग्रणी थे. जितनी श्रद्धा और जितना आदर उनके लिए शिक्षित वर्ग में था, उतना ही साधारण वर्ग में था, देश की जनता में जितने लोकप्रिय मालवीय जी थे, उतना गाँधी और लोकमान्य तिलक के सिवाय शायद ही कोई अन्य नेता होगा. मालवीय जी कि विद्वत्ता असाधारण थी और वे अत्यंत सुसंस्कृत व्यक्ति थे. वे अपने युग के सर्वश्रेष्ठ वक्ता थे. वे संस्कृत, हिंदी तथा अंग्रेज़ी तीनों ही भाषाओं में निष्णात थे.

महामना की अमर कृति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्राच्य एवं पाश्चात्य, प्राचीन एवं आधुनिक समस्त विधाओं की राजधानी ही नहीं, अपितु भारत की राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण का भी प्रतीक रही है. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भारतीय स्वाधीनता संग्राम के युग में प्रेरणा एवं शक्ति के अजस्र स्रोत के रूप में भी अपनी भूमिका निभा चुका है. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्राच्य और अर्वाचीन विधाओं का संगम एवं विश्व ज्ञान का विद्या मंदिर रहा है. वर्तमान सभ्यता की अनुकरणीय तथा लाभदायक बातों के साथ भारतीय सभ्यता का उचित समंजस्य उसका उद्देश्य रहा है. प्राचीन भारतीय आयुर्वेद के साथ अर्वाचीन शल्य शास्त्र की शिक्षा का मेल, आयुर्वेदिक औषधियों का वैज्ञानिक परीक्षण तथा उन पर अनुसंधान, विभिन्न विषयों पर प्राच्य और अर्वाचीन ज्ञान का तुलनात्मक और समन्वयात्मक अध्ययन, प्राचीन भारतीय संस्कृति दर्शन शास्त्र, साहित्य और इतिहास के गंभीर अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ आधुनिक मनोविज्ञान, नीतिविज्ञान, दर्शन शास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान आदि का अध्ययन-अध्यापन, वेद, वेदांग तथा संस्कृत साहित्य और वाड्मय की शिक्षा के अतिरिक्त आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, धातु विज्ञान, खनन विज्ञान, विद्युत् इंजीनियरी, यांत्रिक इंजीनियरी, कृषि विज्ञान का अध्ययन इसकी विशेषता है. यहाँ ईश्वर भक्ति के साथ-साथ देश भक्ति की शिक्षा दी जाती थी और विद्यार्थियों को राष्ट्र के जीवन का ज्ञान कराया जाता रहा है, उन्हें समाज की सेवा के लिए प्रोत्साहित किया जाता रहा है. आज भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय अपने प्राचीन स्वरूप एवं उद्देश्यों की पूर्ति में सतत प्रयत्नशील है.

पण्डित नेहरू ने कहा है - मालवीय जी एक महा मानव थे. वे उन लोगों में थे, जिन्होंने आधुनिक भारतीय राष्ट्रीयता की नींव रखी. एक अन्य अवसर पर पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा है कि कांग्रेस जब से शुरू हुई महामना मालवीय जी हमारे राजनीतिक आन्दोलन के खास निशानी रहे. उसे शुरू करने में, बनाने में और बढ़ाने में मालवीय जी का बहुत बड़ा हिस्सा रहा है. इसमें कोई शक नहीं है कि समय की हवा देखकर भारतीय राजनीति में मालवीय जी अगुवा भी रहे और कड़ी भी रहे.

मालवीय जी ने हिंदी के उत्थान हेतु हिंदी साहित्य सम्मलेन में अगुआई की. ईश्वर भक्ति और देश भक्ति मालवीय जी के जीवन के दो मूलमंत्र थे. उनकी धारणा थी कि मनुष्य के पशुत्व को ईश्वरत्व में परिणत करना ही धर्म है. मनुष्य का विकास ही ईश्वरत्व और ईश्वर है और निष्काम भाव से प्राणी मात्र की सेवा ही ईश्वर की सच्ची आराधना है. वे सार्वजनिक कार्यों के लिए जीवन भर साधन जुटाते रहे और भिक्षुकों के राजकुमार कहलाए. वे महान देशभक्त, जनसाधारण के सेवक, करुणा, सद्भावना और दया की मूर्ति, विदग्ध और उच्चकोटि के वक्ता, प्राणी मात्र से प्रेम करने वाले, शील के पर्याय, ललित कलाओं के प्रेमी और आहार-विहार में सरलता के प्रतीक थे.

◆◆◆

Indo-Canada

Income Tax Services Ltd.

Income Tax / Book keeping Experts
Management Consultants

☎ 905-264-9599

905-264-9587

15 Ayton Crescent, Woodbridge, Ontario L4L 7H8

AUTO HOME BUSINESS & LIFE INSURANCE

GOOD RATES FOR:

- Drivers with Accidents & Convictions
- Drivers 50 Plus
- Drivers with Excellent Record

INSURE AUTO AND HOME TOGETHER

Special Offers

May Qualify for Up To 50% Discount

HOMEOWNERS INSURANCE

SUDESH KAMRA

TEL: 416-666-7512 sdshkam@yahoo.ca

महामना मालवीय जी के मानस सुत अथक कर्मयोगी

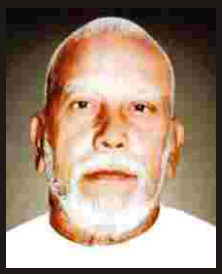

पं. डालचन्द जी

■ *वेद प्रकाश वटुक, अमेरिका*

हिन्दू विश्व विद्यालय से बी.ए. करके आये, तो डालचंद जी ने अपना भविष्य ही नहीं, क्षेत्र का भविष्य भी निश्चित कर दिया था. दिल्ली शाहदरा से सहारनपुर रेलवे मार्ग के 92 मील के अंतराल में बडौत और शामली को छोड़कर कहीं उच्च शिक्षा संस्थान न था. उन्होंने इसे ही शिक्षा के उजाड़ क्षेत्र खेकड़ा को अपनी कर्मस्थली चुना.

मई 1945 की एक घटना. उस समय मैं 14 वर्ष का था. पर उसकी स्मृति पत्थर पर खिंची लकीर की भाँति आज भी मेरे मन पर अंकित है. मेरे जनपद के एक छोटे से कस्बे खेकड़ा में माध्यमिक विद्यालय का दसवां वार्षिक अधिवेशन. सारा प्रांगण झंडियों से, फूलों से, देशभक्ति के उद्घोषों से सजा हुआ था. दूर-दूर के गाँवों से लोग पैदल चलकर आये थे. उत्साह था वातावरण में. सभी की आँखें स्थानीय रेल के आने की प्रतीक्षा कर रही थीं. कारण इस अधिवेशन के माननीय अतिथि थे राजर्षि पुरुषोत्तम टंडन. रेल आई. छात्रों और अतिथियों का रेला उसकी ओर भागा. किन्तु उस ट्रेन से पुरुषोत्तम दास जी नहीं आये. आये तत्कालीन मेरठ जनपद कांग्रेस के अध्यक्ष चौधरी चरणसिंह और उनके साथी, यह सूचना लेकर कि किसी अपरिहार्य कारणों से टंडन जी उस दिन न आकर अगले दिन के अधिवेशन में आयेंगे. खैर, विद्यालय में अगले दिन चौधरी साहब और उनके दल का भव्य स्वागत किया और यथासमय उनसे छात्रों और लोगों को उद्बोधन करने का निवेदन किया.

पता नहीं, चौधरी साहब को क्या हुआ कि उन्होंने उस राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत विद्यालय के छात्रों को प्रेरणा भरे उद्बोधन के स्थान पर कहना शुरू किया, मुझे नहीं पता आप लोगों ने अपने सिर पर गांधी टोपियाँ टंडन जी को खुश करने के लिए लगा रखी हैं कि नहीं...

इतना सुनना था कि मोटे खद्दर का कुर्ता और घुटनों तक की धोती पहने गौर वर्ण, भव्य ललाट, तेजस्वी आँखों वाले संस्थापक 36 वर्षीय डालचंद जी इस अपमान से तिलमिला उठे. अपने छात्रों के सम्मान की रक्षा में वे दहाड़ उठे, इस संस्था के किसी भी सदस्य को किसी को भी प्रसन्न करने की कोई आवश्यकता नही है. आपको पता होना चाहिए कि जब मैं टंडन जी से मिला, तो मेरे इस गंजे सर पर कोई टोपी नहीं थी. इन शब्दों के साथ उन्होंने चौधरी साहब से वीणा लेने का आवाहन किया.

इस घटना का प्रभाव मुझ पर इतना पड़ा कि मैं मेरठ, गाज़ियाबाद जैसे बड़े नगरों को छोड़कर इस विद्यालय से हाई स्कूल की परीक्षा उतीर्ण करने का निर्णय लिया. वे राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत थे. भारत छोड़ो आन्दोलन में जब सेना ने उस विद्यालय को घेर लिया था, वे तब भी अविचलित रूप से दृढ़ रहे. जब मेरे भाई सुन्दरलाल जी उस काल में बंदी थे, तो मेरी बूढ़ी माँ और हम दो छोटे भाइयों की सहायता के लिए वे अपने अनुज और साथियों को भेजते रहे, जिन्हें उन दिनों दस-बारह मील पैदल चलकर गाँव आना पड़ता था. इसलिए कोई अपना हो (जैसे चौधरी साहब थे) या शत्रु (जैसे ब्रिटिश साम्राज्य), उनकी निर्भीकता में जरा भी

कमी नहीं आती. और इस दिव्य चरित्र के प्रेरणास्त्रोत थे महामना मदन मोहन मालवीय.

बड़े-छोटे राजमार्गों से दूर कच्चे मार्गों से ही पहुंच जाने वाले मेरठ जनपद के एक गाँव कँडेरे में पंडित घसीटाराम और लक्ष्मी देवी के घर में जन्में डालचंद जी की आरम्भिक शिक्षा गाँव में हुई. कुछ दूर पैदल चलकर वे बडौत नाम के कस्बे में मिडिल और हाईस्कूल की शिक्षा पाने जाने लगे. 1929 में दिगम्बर जैन हाई स्कूल बडौत से हाई स्कूल किया. उनके बड़े भाई चन्द्र शेखर जो तहसीलदार पद से सेवानिवृत हुए, उस समय कानूनगो पद पर सुशोभित थे, चाहते थे वे भी कानूनगो बनें. किन्तु उन्होंने साफ़ शब्दों में कहा, मैं इस पद पर बैठकर गरीबों का गला नहीं काटूँगा.

एक वर्ष सुदूर राजस्थान के जयपुर जनपद के कांसली गाँव में अध्यापन कार्य करने के उपरांत उन्होंने बिड़ला कॉलेज पिलानी से इंटर परीक्षा उत्तीर्ण कर, उन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में बी.ए. की शिक्षा के लिए प्रवेश लिया. वहां वे मालवीय जी के सम्पर्क में आये. उस पारस मूर्ति ने इस लौह-पुरुष को कांचन-रूप में बदलकर उनका भविष्य निर्धारित कर दिया.

हिन्दू विश्व विद्यालय से बी.ए. करके आये, तो डालचंद जी ने अपना भविष्य ही नहीं, क्षेत्र का भविष्य भी निश्चित कर दिया था. दिल्ली शाहदरा से सहारनपुर रेलवे मार्ग के 92 मील के अंतराल में बडौत और शामली को छोड़कर कहीं उच्च शिक्षा संस्थान न था. उन्होंने इसे ही शिक्षा के उजाड़ क्षेत्र खेकड़ा को अपनी कर्मस्थली चुना. उसी समय उनकी पत्नी कटोरी देवी, जिनसे उनका विवाह आठवीं कक्षा पास करते ही कर दिया गया था, उनके एक मात्र पुत्र सुरेशदत्त को 1935 में जन्म दिया. सुरेश के जन्म से ही उन्होंने अपने को ब्रह्मचर्य-व्रत लेकर जनसेवा को समर्पित कर दिया. उसी दिन से उन्होंने माँ द्वारा कते हुए सूत से बुने मोटे गाढ़े से बने कुरते और घुटने तक की धोती तथा कपड़े के जूते पहनने शुरू किये. शेष जीवन वही उनकी वेश-भूषा रही. मात्र दो जोड़े कपड़ों के स्वामी रहे वे और दो छात्रों को लेकर खेकड़ा की एक गली में स्थित सूमो की चौपाल में शुरू किया अपना शिक्षण. बाद में उन्हें मिल गई एक छोटी सी धर्मशाला.

खेकड़ा क्षेत्र के गाँव-गाँव में वे पैदल जाते. घर-घर जाकर उन्होंने शिक्षा संस्था की स्थापना के लिए धन एकत्र करना शुरू किया.

चार आने, आठ आने, एक रुपया - कोई भी राशि उनके लिए नगण्य न थी. अपने बचपन में मैंने स्वयं उन्हें गांवों में चारपाइयों पर बैठकर वासियों से चंदा लेते देखा था - 1936 में उन्होंने शिक्षा प्रसारक मंडल की स्थापना की. उनके साथ ही निष्काम भाव से देश सेवा का व्रत लेकर काम करने वाले उनके अनुज हेमचंद जी, स्थानीय क्षेत्र के लोकप्रिय अध्यापक रिसाल सिंह त्यागी तथा बनवारीलाल शास्त्री ने निष्ठापूर्वक आजीवन आठ रुपये तक मासिक वेतन लेकर संस्था के लिए जीवन अर्पित कर दिया.

चंदा और न्यूनतम शुल्क से जो भी रुपये बचे, उनकी माध्यमिक विद्यालय के लिए कुछ भूमि ली गयी. उस पर कमरे बनाने का काम शुरू हुआ. एक-एक कमरा, कुआँ आदि बनाने में छात्रों ने नियमित रूप से अपना श्रमदान दिया. उनके शिक्षण-संस्थान के निर्माण का उद्देश्य मात्र लिखना-पढ़ना सिखाना न था, देश की स्वतंत्रता के लिए जीवनदानी देशभक्त और स्वतंत्रता के उपरांत आदर्श नागरिक पैदा करना था. उनमें मातृभाषा, देश को समर्पित होने की भावना के अतिरिक्त सादगी, अनुशासन के गुण कूट-कूट कर भरना था.

जैसे-जैसे विद्यालय की प्रगति होती रही, कमरा, कमरा बनता रहा, छात्रों की संख्या बढ़ती गयी. क्षेत्र में राष्ट्र के निर्माण में उसका योगदान भी बढ़ता गया और उसकी कीर्ति भी. विद्यालय में छात्रों को फैशन से दूर रखने की शिक्षा दी गयी. कुर्ता-धोती-घुटन्ना या पायजामा यही वस्त्र विद्यालय को मान्य थे. गाँधी टोपी पहना अनिवार्य था. अध्यापकों के चयन में भी यही शर्तें थीं. भारतीय वेशभूषा और शाकाहार, धूम्रपान और मदिरा आदि के सेवन से पूर्ण परहेज़. आदर्श छात्र पैदा करने के लिए अध्यापकों का आदर्श जीवन जीना महत्वपूर्ण समझा जाता था. विद्यालय का वातावरण त्यागमयी देशभक्ति के लिए अनुकूल हो, यही ध्येय रहा डालचंद जी का.

डालचंद जी अंग्रेजी भाषा में निष्णात थे. किन्तु हिंदी के प्रति उनका प्रेम अगाध था. उनके मंत्र-मुग्ध करने वाले धाराप्रवाह भाषण में, जो वे, प्राय: नित्य ही प्रार्थना सभा में देते थे, प्रांजल हिंदी का ही प्रयोग होता था. भारतीय संस्कृति और संस्कारों के प्रति उनकी निष्ठा अक्षुण्ण थी.

डालचंद जी का निस्पृही जीवन प्रतीक है इस बात का कि महामना मालवीय जी ने केवल हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस जैसे विश्वस्तर के संस्थान का ही निर्माण नहीं किया, वरन पंडित डालचंद जैसे अनेक मानवतावादी वरेण्य महापुरुषों को भी पैदा किया. मानवता के उस पावन बटवृक्ष की शाखाएँ भारत भूमि में न जाने कहां-कहां फल-फूल रही होंगी. यह लेख उसी दिशा में इंगित करने का एक लघु प्रयास है।

◆◆◆

अत्यंत पवित्र था उनका जीवन

■ *डॉ. शंकर दयाल शर्मा,*
पूर्व राष्ट्रपति

मालवीय जी का विचार था कि भारतवर्ष की जो सांझी संस्कृति और सांझी राष्ट्रीयता है, वह हमारे देश की अत्यंत महत्वपूर्ण और शक्तिशाली विरासत है. जब कुछ शरारती तत्व इस मूल्य पर चोट करने की कोशिश करते हैं, तो हमारे देश के लोगों को अपनी गाढ़ी एकता का प्रदर्शन करते हुए करारा जवाब देना चाहिए.

मालवीय जी का नाम लेते ही मेरी आँखों के सामने मस्तक ऊँचा किये हुए, सीधे खड़े हुए विशाल हिमालय का दृश्य उभरता है. उनका हृदय हिमालय की तरह विशाल था, जिससे समाज हित की न जाने कितनी धाराएँ फूटकर हमारे देश की धरती पर वहीं और उससे न जाने कितनों का हित हुआ तथा आज तक हो रहा है. बापू ने मालवीय जी के व्यक्तित्व को गंगा की निर्मल धारा कहा था. मालवीय जी के निधन के बाद महात्मा गांधी ने 'हरिजन सेवक' के 8 दिसम्बर, 1946 के अंक में लिखा था, उनका जीवन अत्यंत पवित्र था. वह दया के सागर थे. उनका शास्त्रीय ज्ञान असीम था. भागवत उनकी सबसे प्रिय पुस्तक थी. वह दक्ष प्रवक्ता थे. उनकी स्मरण शक्ति अद्‌भुत थी. उनका जीवन स्वच्छ और सरल था. मैं समझता हूँ कि ऐसे महान गुणों से युक्त व्यक्ति के लिए हिमालय की उपमा उपयुक्त ही है.

हमारे देश को आज़ादी दिलाने में, राष्ट्र निर्माण की नींव रखने में तथा एक सुदृढ़ समाज की रचना में, मालवीय जी का जो महत्वपूर्ण और व्यापक योगदान रहा है, उनका स्मरण करके आज, हर भारतवासी का हृदय गर्व से भर उठता है तथा उसका मस्तिष्क, उनके चरणों में श्रद्धा से झुक जाता है. उन्होंने अपना सारा जीवन तथा अपनी सारी क्षमता राष्ट्र को पूरी तरह समर्पित कर दी.

जब मालवीय जी 25 वर्ष के थे, तब वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में शामिल हुए थे. उनके भाषण से सभी लोग प्रभावित हुए थे तथा ह्यूम ने इसकी बड़ी प्रशंसा की थी. इसके बाद से वह कांग्रेस के संगठन के काम में लग गये. यह बात कम महत्व की नहीं है कि मालवीय जी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पद की ज़िम्मेदारियाँ चार बार संभाली.

हालाँकि मालवीय जी का नाम उस समय के प्रतिष्ठित वकीलों में लिया जाने लगा था, लेकिन जब उन्हें ऐसा लगा कि वकालत करते हुए देश की आज़ादी के काम में बाधा आ रही है, तो उन्होंने अपनी वकालत छोड़ने में ज़रा देर नहीं लगाई और अपने आपको पूरी तरह से स्वतन्त्रता आन्दोलन में झोंक दिया. सन् 1918 में वह फिर कांग्रेस के दिल्ली अधिवेशन के अध्यक्ष बनाये गये. राष्ट्र के राजनीतिक जीवन में मालवीय जी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां उठा रहे थे. अगले वर्ष सन 1919 के जलियांवाला बाग़ कांड में उन्होंने अहिंसात्मक स्वतन्त्रता सेनानियों की ओर से अत्याचार के विरुद्ध न्यायालय में अत्यंत प्रभावी ढंग से आवाज़ उठाई थी. सन् 1930 के जन आन्दोलन में वह एसेम्बली से त्यागपत्र देकर शामिल हुए थे और लोकमान्य तिलक की पुण्यतिथि पर लगाये गये प्रतिबन्ध का निषेध करके उन्होंने कारावास स्वीकार किया.

आज़ादी की लड़ाई के विविध संघर्षों में मालवीय जी निरंतर भूमिका निभाते रहे. सन् 1931 में लन्दन में द्वितीय गोलमेज़ सम्मेलन में उपस्थित रहकर मालवीय जी ने गाँधी जी की सहायता की थी. अंग्रेज़ों के दांव-पेंचों का मुकाबला करते हुए उन्होंने गाँधी जी और बाबा साहब अम्बेडकर के बीच राजनीतिक बातचीत और महत्वपूर्ण पहलुओं पर समझौता करने में अपना योगदान किया. पूना पैक्ट के हो जाने से

अंग्रेज़ी कूटनीति को करारा जबाब मिला.

मालवीय जी एक सक्रिय स्वतन्त्रता सेनानी के साथ-साथ साहसी, सजग और प्रतिबद्ध पत्रकार भी थे. 1886 के कलकत्ता अधिवेशन में उनके भाषणों से प्रभावित होकर उन्हें हिंदी साप्ताहिक 'हिन्दोस्तान' का सम्पादक नियुक्त किया गया. इस साप्ताहिक के माध्यम से मालवीय जी ने राष्ट्रीय विचारों को लोगों तक पहुंचाया. इसके बाद उन्होंने उस समय के अभ्युदय, लीडर, मर्यादा आदि प्रमुख समाचार पत्रों का सम्पादन करके देश के लोगों में राष्ट्रीय प्रेम की भावना भरी तथा उनमें राजनीतिक चेतना जागृत की. मालवीय जी के सम्पादकीय लेख आज़ादी के लिए लड़ने वालों का मनोबल, हौसला बढ़ाते थे. अनेक राजनीतिक और सामाजिक विषयों पर सरल सीधे और निर्भय ढंग से लिखकर वह लोगों को अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत करते रहे.

उनके सम्पादन में निकलने वाले पत्रों ने तत्कालीन सम्पादकों तथा बुद्धिजीवियों को सत्य वक्तृत्व और साहस का पाठ पढ़ाया तथा उन्हें राष्ट्र के लिए सर्वस्व समर्पित करने को प्रेरित किया. मालवीय जी के अनुपम गुणों की सराहना करते हुए गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर जैसे उच्चकोटि के विचारक ने कहा था, तुम्हारे तूर्यनाद ने देश के अनेक भागों को जगाया है और समर्पित वीर तुम्हारे चारों ओर इकट्ठे हो रहे हैं. तुम्हारा उद्‌बोधन हर व्यक्ति के हृदय में उतरे और उन्हें कर्म करने के लिए झकझोरे.

मालवीय जी उस समय अपने भाषणों में अक्सर कहा करते थे - अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वै न दैन्यं न पलायनम. अर्थात अर्जुन की दो प्रतिज्ञाएँ हैं - वह न तो किसी के सामने दीनता दिखायेगा और न पीठ दिखाकर भागेगा. मालवीय जी जीवन भर अर्जुन की इस प्रतिज्ञा का पालन करते रहे तथा अन्य लोगों को भी ऐसा करने के लिए कहते रहे. राष्ट्र पुनर्निर्माण की दृष्टि से जनमानस में विविध गुणों को भरने में शिक्षा के महत्व को देखते हुए मालवीय जी ने शिक्षा के विकास और विस्तार के लिए अनेक प्रयास किये. अथक परिश्रम करके उन्होंने काशी विद्यापीठ की स्थापना की. आज मदनमोहन मालवीय जी का नाम काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का एक प्रकार से पर्याय बन गया है. मैं इस विश्वविद्यालय को उनके व्यक्तित्व और चिन्तन का एक जीवंत स्मारक मानता हूँ. 31 जनवरी, 1912 को काशी में व्याख्यान देते हुए श्रीमती एनीबेसेंट ने बिलकुल सही कहा था कि महामना मालवीय जी ने अपना सांसारिक जीवन, अपनी सब शक्ति अपनी विलक्षण वाणी, क्या कहा जाय - अपना समस्त जीवन और स्वास्थ्य तक इस महान कार्य, हिदू विश्वविद्यालय में लगा दिया.

इस विश्वविद्यालय की स्थापना में हमें मालवीय जी की दूरदृष्टि की साफ़-साफ़ झलक मिलती है. इसमें उन्होंने वेद और ललित कलाओं के अध्ययन के साथ-साथ रसायन, भौतिकी, भूगर्भ विज्ञान, खनन विज्ञान, धातु विज्ञान, तकनीकी शिक्षा तथा कृषि विज्ञान आदि के भी अध्ययन की व्यवस्था की थी. उनके द्वारा शुरू किया गया रसायन इंजीनियरिंग कालेज भारत का पहला कालेज था. उन्होंने अपनी दूर दृष्टि से आने वाले कल में तकनीकी शिक्षा के महत्व को देख लिया था. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए मालवीय जी ने कहा था कि यदि देश के लाखों लोगों को गरीबी से उबारना है, यदि रोज़गार के नये रास्ते खोलने हैं और धरती पर समृद्धि फैलानी है, तो आवश्यक है कि देश में तकनीकी एवं औद्योगिक शिक्षा की सघन प्रणाली प्रारम्भ की जाये.

वस्तुतः मालवीय जी शिक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे. इसके द्वारा वह राष्ट्र के लिए चरित्रवान समक्ष और निश्चय शील युवा पीढ़ी तैयार करना चाहते थे. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के पीछे उनका जो मुख्य उद्देश्य था, उसे मैं उनके ही शब्दों में आप लोगों के सामने रखना चाहूँगा. हिन्दू विश्वविद्यालय विधेयक की अंतिम स्वीकृति के अवसर पर मालवीय जी ने कहा था, जीवन और प्रकाश का जो केंद्र स्थापित होने जा रहा है उससे न केवल ऐसे छात्र ही निकलेंगे, जो बुद्धि में विश्व के अन्य भागों के श्रेष्ठ छात्रों के समान होंगे, वरन जो सदाचार पूर्ण जीवन वहन करने, अपने देश से स्नेह करने... में भी प्रशिक्षित होंगे. मैं समझता हूँ कि मालवीय जी की यह बात प्रत्येक शैक्षणिक संस्था के शिक्षकों और छात्रों को याद रखनी चाहिए. मेरी मान्यता है कि यदि शिक्षा हमारे छात्रों के आचरण को संस्कारित नहीं कर सकती, तो वह सही शिक्षा नहीं है. अगर कोई छात्र मालवीय जी से आटोग्राफ लेने जाता था, तब वह उसकी डायरी में लिखा करते थे- *सत्येन ब्रह्मचर्येण व्यायामेनाय विद्यया. देशभक्तया अत्मत्यागेन समानार्ह सदाभव.* अर्थात सत्य से, ब्रह्मचर्य से, विद्या से, देश भक्ति से तथा आत्मत्याग से सर्वदा सम्मान पाने योग्य बनो.

ये सभी गुण मालवीय जी के सम्पूर्ण जीवन में प्रतिबिम्बित होते हैं. सन् 1919 से 1937 तक लगातार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में वह अपने आचरण द्वारा छात्रों के अंदर तथा युवाओं के अंदर इन गुणों को संचारित करते रहे. आज भी हमारे देश को ऐसी ही शिक्षा तथा मालवीय जैसे महान शिक्षकों की जरूरत है, जो अपने आचरण द्वारा छात्रों को इन गुणों की ओर प्रेरित कर सकें.

मालवीय जी सच्चे अर्थ में धार्मिक व्यक्ति थे. मैं समझता हूँ कि जो भी व्यक्ति अच्छे अर्थ में धार्मिक होगा, उसका मन कभी भी संकुचित नहीं हो सकता. मैं यहाँ मालवीय जी के उन

शब्दों को दोहराना चाहूँगा जो उन्होंने २८ जून, 1933 को लाहौर में कहे थे. उन्होंने कहा था, मेरा अपने धर्म में दृढ़ विश्वास है. किसी गिरजाघर अथवा मस्जिद के पास से जब मैं जाता हूँ तब मेरा मस्तक अपने आप झुक जाता है. जब परमेश्वर एक है तो लड़ने का कारण क्या है. भूमि एक, देश एक, वायु एक, ऐसी एक सी परिस्थिति में रहते हुए भी आपस में दंगे-टंटों का होना इससे बढ़कर लज्जा और आश्चर्य की बात क्या हो सकती है. सर्वधर्म समभाव के प्रति अपनी दृढ़ भावना को उन्होंने अनेक बार प्रकाशित किया. 12 अप्रैल, 1924 के अंक में उन्होंने लिखा था - भारत हिन्दुओं, मुसलमानों, ईसाइयों का, पारसियों आदि सभी की सामान्य मातृभूमि है तथा वे एक दूसरे के पर्याय हैं.

मालवीय जी का विचार था कि भारतवर्ष की जो सांझी संस्कृति और सांझी राष्ट्रीयता है, वह हमारे देश की अत्यंत महत्वपूर्ण और शक्तिशाली विरासत है. जब कुछ शरारती तत्व इस मूल्य पर चोट करने की कोशिश करते हैं, तो हमारे देश के लोगों को अपनी गाढ़ी एकता

का प्रदर्शन करते हुए करारा जवाब देना चाहिए. आज़ादी की लड़ाई में मालवीय जी के मित्र और सहसैनिक भविष्यदृष्टा नेता मौलाना आज़ाद के कहे कुछ शब्द मैं आप लोगों के सामने रखना चाहूँगा. दिल्ली की जामा मस्जिद से संवत् 1948 को मौलाना आज़ाद साहब ने अपने एक ऐतिहासिक तथा अत्यंत महत्वपूर्ण भाषण में कहा था, दो राष्ट्रों का सिद्धांत आस्था और विश्वास के जीवन के लिए मौत का डंका है. मेरा आपसे आग्रह है कि आप इसे छोड़ दें क्योंकि जिन स्तम्भों पर आप टिके हुए हैं, वे शीघ्र ही लड़खड़ा कर टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे. आप देखेंगे कि जिन पर आपको भरोसा है, वे आपको भुला देंगे और आपको तकदीर के रहम पर छोड़ देंगे.

देश के बंटवारे के दौरान उत्तरप्रदेश, बिहार, हैदराबाद और भोपाल से हमारे अनेक मुसलमान भाई पाकिस्तान चले गये थे. उनमें से कई मेरे अच्छे मित्र हैं. वे मिलने पर मुझे बताते हैं कि भारत से गए उन लोगों को आज तक वहां सम्मान जनक स्थान नहीं मिल पाया है. वहाँ उनकी स्थिति शरणार्थियों की तरह है. आप सबको मालूम ही होगा कि उन लोगों को पाकिस्तान में मुहाजिर कहा जाता है. वे वहाँ निचले दर्जे के माने जाते हैं और उनको हर किस्म की ज़्यादती बर्दाश्त करनी पड़ रही है. उर्दू ज़बान तक को पाकिस्तान में कुचला जा रहा है.

भारत में परिस्थिति इससे बिलकुल अलग है. भारत की संस्कृति, भारत का संविधान, भारत में प्रचलित नीति, भारतवासियों का स्वभाव, ये सब एकता, भाई चारा, सर्वधर्म समभाव और अहिंसा जैसे गुणों से ओत-प्रोत हैं. पंडित मदनमोहन मालवीय जी का जीवन संदेश यही था कि हर नागरिक अपने अंदर इस चेतना को मजबूत बनाकर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का कार्य लगन से करे. मालवीय जी यह कार्य समन्वय द्वारा करना कहते थे. जिस व्यक्ति में समन्वय की भावना होती है उसमें सभी धर्मों, संस्कृति, क्षेत्र और भाषाओं के प्रति स्वाभाविक रूप से सम्मान का भाव होता है. मालवीय जी में यह भाव था. संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी के वह अच्छे जानकार थे. इसके बावजूद उन्होंने उर्दू सीखी थी तथा जेल में उन्होंने अपने पुत्र गोविन्द मालवीय को उर्दू सिखाई. इससे पता चलता है कि उर्दू भाषा के प्रति उनके मन में कितना गहरा अनुराग था. शोषित, गरीब, दलित तथा अस्पृश्यों के लिए भी मालवीय जी के हृदय में विशाल जगह थी. बापू ने गरीबों के प्रति उनकी सहायता की भावना को देखते हुए ही अपनी आत्मकथा में उनके कमरे को गरीबों की धर्मशाला कहा है. मालवीय जी छुआछूत के कट्टर विरोधी थे. उन्होंने अस्पृश्यों को मन्दिरों में प्रवेश दिलाने के लिए अनेक प्रयास किये तथा उनके विकास के लिए हमेशा आगे रहे. उनकी दृष्टि में प्रत्येक व्यक्ति समान था, चाहे वह किसी जाति का हो. उन्होंने हिन्दुस्तान टाइम्स के 2 अक्तूबर, 1932 के अंक में छुआछूत का खंडन करते हुए लिखा था - यदि आप जीवात्मा की आंतरिक शुद्धि को स्वीकार करते हैं, तो आप अथवा आपका धर्म किसी भी व्यक्ति के स्पर्श अथवा सम्पर्क से किसी प्रकार अशुद्ध अथवा भ्रष्ट कभी नहीं हो सकता. मेरा विश्वास है कि पूरा देश मालवीय जी के गुणों को अपनाकर उन्हें निरंतर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता रहेगा

प्रस्तुति : पन्नालाल मालवीय
सौजन्य महामना स्मारिका

◆◆◆

FAMILY DENTIST

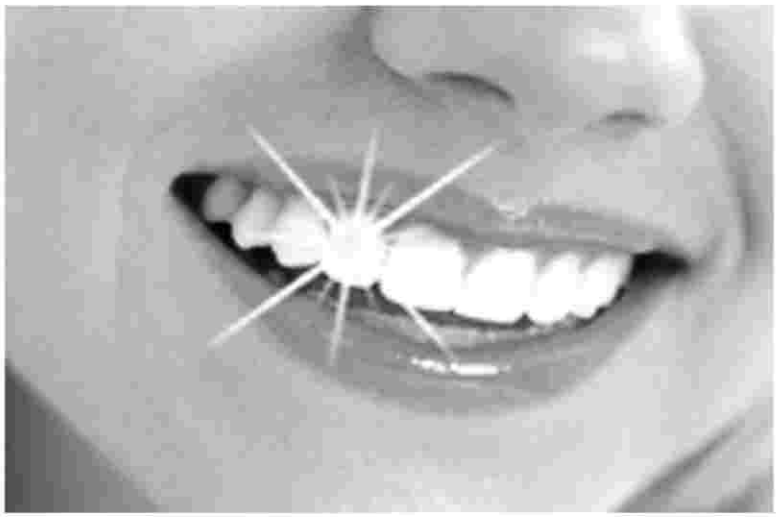

Dr. N.C. Sharma
Dental Surgeon

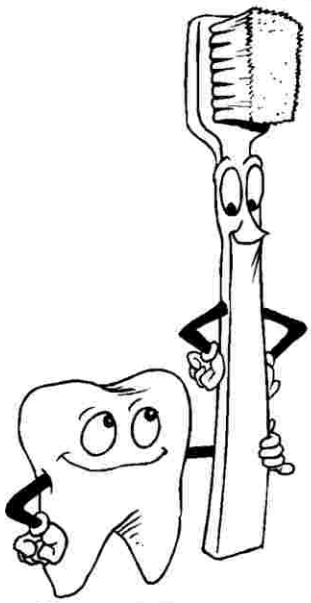

Dr. C. Ram Goyal
Family Dentist

Dr. Narula Jatinder
Family Dentist

Call us at: 416-222-5718

1100 Sheppard Avenue East, Suite 211, Toronto, Ontario M2K 2W1 Fax: 416-222-9777

वे बातें, वे छवियाँ अमिट हैं

गौर वर्ण, थोड़ी-थोड़ी सफेद मूंछें, माथे पर सफेद गोल टीका, सर पर सफेद पगड़ी, शुभ्र परिछान, घुटनों के ऊपर हल्का सफेद कम्बल या शाल पड़ा था जिससे उनके पैर ढंके थे। उनका वह भव्य रूप मेरे मन की गहराई तक उतर गया जो अभी तक याद है।

राजकुमारी सिन्हा, अमेरिका

बचपन की कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो चित्र की भांति मानस पटल पर अंकित हो जाती हैं. महामना पंडित मदन मोहन मालवीयजी को सर्वप्रथम देखने का प्रसंग भी मेरे मन पर कुछ इसी प्रकार अंकित है. चित्र थोड़ा धुंधला तो पड़ गया है. परन्तु अभी तक स्पष्ट है, अच्छी तरह से याद है.

होली के बाद मौसम गर्म हो चला था. मई के महीने में सूर्य की किरणों से और गर्म हवा से बनारस तपने लगा था. वहां की असहनीय गर्मी से त्राण पाने के लिए श्री मालवीयजी उत्तर भारत के पर्वतीय स्थलों की सम्राज्ञी मसूरी या नैनीताल चले जाया करते थे. गर्मी उन्हें सहन नहीं होती थी. वो बीमार हो जाते थे. वैसे भी वर्ष भर कठिन परिश्रम करने के बाद उन्हें थोड़ा आराम भी मिल जाता था. पर्वतीय शीतल जलवायु उनके स्वास्थ्य के लिए भी अच्छी थी.

यूनिवर्सिटी में दो महीने गर्मी की छुट्टियां शुरू हो जाती थीं. पढ़ने-पढ़ाने का काम बंद था. श्री मालवीय जी मसूरी चले गये थे. उस वर्ष मैं भी माता-पिता के साथ गर्मी की छुट्टियों में मसूरी गई थी. हिमालय की पर्वत श्रेणियों में बसा हुआ नैसर्गिक सौन्दर्य से परिपूर्ण मसूरी एक रमणीय शहर है. वहां की प्रसिद्ध माल रोड और कौंसिल बैंक रोड पर प्रातः या संध्या समय लोग घूमने जाया करते हैं. मैं भी पिताजी, जिन्हें हम लोग बाबू जी कहते थे - के साथ घूमने जाया करती थी. उस दिन भी उनके साथ दौड़-भाग करती जा रही थी. कभी भाग कर उनके आगे, कभी पीछे चलने लगती थी. अचानक उन्होंने मुझे रोका और पास बुलाया, कहा - देखो सामने से मालवीयजी आ रहे हैं. उन्हें हाथ जोड़ कर अच्छी तरह नमस्ते करना.

देखा तो सामने से चार लोग एक डांगी (पालकी जो पहाड़ी रास्तों पर चलती है) लिए आ रहे थे और उसमें कोई बैठा था. हम लोगों के पास आकर डांगी रुक गई. श्री मालवीयजी ने कहारों को डांगी उतारने का आदेश दिया. बाबूजी के आदेशानुसार मैंने हाथ जोड़ कर उन्हें प्रणाम किया. बोली कुछ नहीं - न नमस्ते, न प्रणाम. केवल हाथ जोड़ दिए और उन्हें देखती रही.

गौर वर्ण, थोड़ी-थोड़ी सफेद मूंछें, माथे पर सफेद गोल टीका, सर पर सफेद पगड़ी, शुभ्र परिछान, घुटनों के ऊपर हल्का सफेद कम्बल या शाल पड़ा था जिससे उनके पैर ढंके थे. उनका वह भव्य रूप मेरे मन की गहराई तक उतर गया जो अभी तक याद है.

थोड़ी देर वो बाबू जी से बातें करते रहे. चलने के पहले मेरी तरफ देखकर बोले - बिटिया! क्या नाम है तुम्हारा? मेरे मुंह से कोई बोल न निकला केवल उन्हें देखती रही. बाबूजी ने शायद नाम बताया होगा. श्री मालवीयजी थोड़ा मुस्कराए, मेरे सर पर हाथ फेरा बोले - जीती रहो, खूब पढ़ो-लिखो. कहारों ने डांगी उठाई और वो चले गये.

उनके जाने बाद बाबू जी ने कहा - देखा तुमने? ये मालवीयजी हैं. इन्होंने बनारस यूनिवर्सिटी बनाई है, जहां हम लोग रहते हैं. उनके कहने के भाव से ऐसा लगा कि मालवीयजी में कुछ विशेषता है. वे कौन हैं?

उनमें क्या विशेषता है? उन्होंने क्या बड़ा काम किया है, मुझे कुछ भी मालूम नहीं था और न ही ये सब बातें समझने की मेरी आयु थी. यूनिवर्सिटी बनाने का अर्थ घर मकान बनाना ही मेरी समझ में आया. उन दिनों हमारे घर के आस-पास और नये मकान बन रहे थे. वहां बहुत सारे लोग ईंट, बालू, सीमेंट आदि ढोने का काम करते थे. मेरी बाल- बुद्धि की कल्पना में ऐसा लगा कि मालवीय जी ऐसे ही घर या मकान बनाने वाले हैं. उन मजदूरों की तरह. यूनिवर्सिटी के मकान, कालेज की बड़ी-बड़ी बिल्डिंग उन्होंने ही बनाई हैं. परन्तु साथ ही तुरंत देखी उनकी छवि मजदूरों के साथ ठीक नहीं लगी. मैंने पूछा - क्या ये हमारे घर बनाते हैं?

नहीं पगली घर नहीं बनाते, बाबू जी हंसने लगे. बाद में बतायेंगे, बोले.

उसके बाद अनेकों बार जहाँ-तहाँ उन्हें देखने का मौका मिलता रहा - कभी हम बच्चों के खेल कूद और फैंसी ड्रेस प्रतियोगिताओं के समय, कभी यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह के अवसर पर, उनके सम्पर्क में आने का अवसर मिला. उनके हाथ से दो-तीन बार पुरुस्कार मिलने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ. आयु के साथ जैसे-जैसे समझ आती गई, वैसे-वैसे श्री मालवीयजी की महत्ता भी समझ में आने लगी. उनके लिए हृदय में श्रद्धा की भावना आ गई. यूनिवर्सिटी बनाने का अर्थ जहाँ हम रहते हैं बहुत बाद में समझ आया.

मैंने मालवीयजी को जब भी, जहाँ भी देखा, अपने घर के बाहर, सदा एक सी वेश-भूषा में देखा - श्वेत परिधान, शुभ्र वस्त्रावृता. सफेद बंद गले का कोट, गले में सफेद दुपट्टा, माथे पर सफेद चन्दन का गोल टीका, सर पर सफेद पगड़ी. उनकी वेश-भूषा में कभी बदलाव नहीं आया. सफेद रंग उनके विचारों की पवित्रता का द्योतक था.

इसी प्रकार मालवीयजी को देखते हुए अनेकों वर्ष बीत गये. समय अपनी गति से आगे निकलता गया. मैं भी नासमझ बालिका से व्यस्क हो गई.

उन्ही दिनों बाबूजी के मित्र की पुत्री भाग्या पढ़ने के लिए बनारस आई. तब तक मैं बी.ए. के प्रथम वर्ष में पहुंच चुकी थी. श्री मालवीयजी को देखने की, उनसे मिलने की भाग्या की बड़ी इच्छा थी. यूनिवर्सिटी आने के बाद यह इच्छा और प्रबल हो गई. तब तक श्री मालवीयजी विद्यालय के सभी कामों से रिटायर हो चुके थे और प्राय: अस्वस्थ रहते थे. घर के बाहर भी नहीं निकलते थे. किसी के साथ मिलना-जुलना भी पसंद नहीं करते थे. परन्तु भाग्या से मिलने के लिए उन्होंने 10 मिनट का समय दिया. शायद बाबूजी के आग्रह पर. भाग्या के साथ मैं भी गई. बहुत समय के बाद उनके घर जा रही थी - सो मन में जाने का उत्साह भी था और संकोच भी. अस्तु हम लोग प्रात: साढ़े दस बजे के लगभग उनके घर पहुंचे. उस समय तक वो स्नान, पूजा-अर्चना आदि से निवृत होकर आराम कुर्सी पर अधलेटे से बैठे थे. हम लोगों ने चरण-स्पर्श किये. उन्होंने चुपचाप हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया. मैंने देखा उनका शरीर दुर्बल हो गया था - पहले से आधा. परन्तु चेहरे पर वही तेज, वही सौम्यता, आँखों में सबों के लिए छलकता स्नेह, माथे पर चन्दन के गोल टीके के साथ चिन्तन की रेखाएं और होठों पर वही चिर परिचित किंचित मुस्कान.

थोड़ी देर मौन के बाद भाग्या ने उन्हें अपने बारे में बताया. यूनिवर्सिटी में पढ़ने आई है. एम.ए. में एडमीशन लिया है. बनारस यूनिवर्सिटी में उसकी पढ़ने की बहुत इच्छा है. अब उसकी बहुत दिनों की इच्छा पूरी हुई है. बहुत दिनों का पुराना स्वप्न साकार हुआ. श्री मालवीय जी उनकी बातें बड़े ध्यान से सुनते रहे. मैं मूक दर्शक मात्र थी. फिर भाग्या ने उनसे पूछा - आपने अपने साहस और बल पर इतनी बड़ी यूनिवर्सिटी बना कर खड़ी कर दी. इसे देखकर आपको कैसा लगता है? एक मिनट चुप रहकर, कुछ सोच कर बोले - बहुत संतोष मिलता है.

घड़ी बता रही थी, समय दस मिनट से अधिक हो गया है. हम लोग प्रणाम करके चले आये. इतने वर्षों के बाद श्री मालवीयजी को देखा था - देखकर मेरा मन उदास हो गया. उनका स्वास्थ्य कितना गिर गया था. उन्हें इस रूप में देखने की कल्पना भी नहीं की थी.

जो व्यक्ति हमारे प्रतिदिन के जीवन का एक अंग सा बन जाता है, जिसे हम प्राय: अपने पास देखते हैं उसमें हमें कुछ भी विशेषता दिखाई नहीं पड़ती. श्री मालवीय जी के बारे में भी यही बात है. जब हम उनके सानिध्य में रहे, उन्हें यत्र-तत्र देखते रहे, उनकी बातें सुनते रहे, तब तक उनमें कोई विशेषता दृष्टिगोचर नहीं हुई. वे हमारे आदर और सम्मान के पात्र रहे. बस. परन्तु आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं, तब पीछे मुड़कर अपने भूले बिसरे जीवन पर दृष्टिपात करती हूँ, तब उनमें कितनी ही विशेषताएं दिखाई पड़ती हैं. उनका सौम्य चेहरा - चेहरे पर आंतरिक तेज, आँखों में स्नेह का भाव, मृदु भाषण सभी कुछ याद आता है. उनका पूरा व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली था. उनके सम्पर्क में जो भी आया, वो उनका भक्त हो गया. उनका हिमगिरी की भांति शुभ्र, तेजस्वी जीवन हमें सदा सत्यपथ की ओर अग्रसर करता रहेगा.

महामना पंडित श्री मदन मोहन मालवीय जी को शतश: नमन.

◆◆◆

वह युवक

■ *गोपालदास नागर*

काशी के राजा के विशाल व भव्य महल में हिन्दू समाज का सम्मेलन बुलाया गया था. दूर-दूर से समाज के कार्यकर्ता काशी पहुंच रहे थे. उत्साह की कहीं कोई कमी नहीं थी. लेकिन लोगों के मन में एक शंका भी थी. सम्मेलन में कालाकांकर के राजा रामपाल सिंह भी पधारने वाले हैं, यह बात सभी को मालूम थी. एक अच्छे कार्यकर्ता के रूप में उनकी बड़ी साख थी. उन दिनों का लोकप्रिय अखबार 'हिन्दुस्तान' वही निकाला करते थे. सब उनसे दबकर रहते थे. एक तो राजा साहब, ऊपर से अखबार भी चलाते थे. बेशक, वह दिल के साफ़ थे, लेकिन उनकी जुबान इतनी कड़वी थी कि सब तौबा करते थे.

काशी में यह सम्मेलन हुआ था सन् 1886 में. एक उत्साही युवक ने सम्मेलन को सफल बनाने के लिए काफी मेहनत की थी. वह युवक मंच के नज़दीक ही बैठा हुआ था.

राजा साहब ने भाषण देना शुरू किया और अपनी आदत से मजबूर उन्होंने अपने ही लोगों का मज़ाक उड़ाना ज्यों ही शुरू किया, त्यों ही वह युवक उठ पड़ा. राजा साहब के नज़दीक पहुंचकर, उनके कान में वह बुदबुदाया - कृपया खुले मंच पर अशिष्ट भाषा का प्रयोग न करें.

राजा रामपाल सिंह मानों आसमान से गिरे.

जीवन में पहली बार उन्हें इस तरह टोका गया था. उनका चेहरा तमतमाकर लाल पड़ गया. अब वह पहले से भी अधिक खराब भाषा प्रयोग करने लगे.

वह युवक दुबारा उठा. नज़दीक गया और कान में बोला- खुले मंच पर सभ्य-शिष्ट भाषा ही अच्छी रहती है.

अब तो मारे क्रोध के राजा साहब की हालत खस्ता हो गई. उन्होंने और भी जोश-खरोश के साथ व्यंग्य-बाण छोड़ने शुरू कर दिए.

किसी ने सोचा भी नहीं था कि युवक तीसरी बार भी उठने का साहस करेगा, लेकिन वह उठा. आया मंच पर. बुदबुदाया राजा साहब के कान में - अगर आपको खुले मंच से बोलना नहीं आता, तो कृपया बैठ जाइए.

थरथराकर, एक दो मिनट सभ्य भाषा में बोलकर राजा रामपाल सिंह बैठ गये.

कालाकांकर लौटते ही उन्होंने काशी सम्मेलन की कठोर आलोचना लिखी, जो 'हिंदुस्तान' में जोर शोर से छपी. कुछ दिनों बाद, काशी के उसी युवक को राजा रामपालसिंह का एक पत्र मिला.उस युवक ने

प्रिय मित्र,

जो आज तक किसी ने नहीं किया, वह आपने किया. उस समय निस्संदेह मुझे बहुत बुरा लगा था, मगर आज महसूस हुआ कि आपने अनुचित कुछ भी नहीं किया था. बल्कि आपने तो मुझे अनुचित करने से रोका था.

मैं आपको अपने अखबार 'हिन्दुस्तान' के सम्पादक पद सम्भालने के लिए सहर्ष, सादर और सस्नेह आमंत्रित करता हूँ. इस पद पर कोई निष्पक्ष और साहसी व्यक्ति ही रह सकता है और आपमें यह गुण कूट-कूट कर भरे हैं.

मैं आपकी स्वीकृति की प्रतीक्षा कर रहा हूँ.

आपका
राजा रामपाल सिंह

भी स्वीकृति देने में संकोच नहीं किया. अनेक वर्षों तक उसने 'हिन्दुस्तान' का सम्पादन बहुत अच्छे ढंग से किया. समय बीतने पर एक श्रेष्ठ नेता और समाजसेवी के रूप में उसका नाम देश के कोने-कोने में पहुंच गया. उस युवक का नाम था पंडित मदन मोहन मालवीय.

सौजन्य - हिंदी डाइजेस्ट

मालवीय जी और हिन्दी

■ *डॉ. दिग्विजय सिंह*
एसोसिएट प्रो. हिन्दी
के.डी.बी. डिग्री कालेज
दुबहर, बलिया (उ.प्र.)

मालवीय जी अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी थे. उनका सम्पूर्ण जीवन एवं चिन्तन राष्ट्र कल्याण के लिए समर्पित था. वे महान देशभक्त, प्रखर वक्ता, उच्च कोटि के नेता, मानवता प्रेमी, जननायक एवं राष्ट्र निर्माता थे. वे एक महान समाज सुधारक एवं शिक्षाशास्त्री भी थे. उनके अन्दर नेतृत्व की अद्‌भुत क्षमता थी. यही कारण है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के चार बार अध्यक्ष चुने गये. उनका जीवन त्याग, आदर्श और संकल्प से पूरित था. वे राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते थे. उनका मानना था कि स्वराज प्राप्ति के मार्ग में शिक्षा का अभाव बहुत बड़ी बाधा है और बिना स्वराज-प्राप्ति के शिक्षा का प्रसार बहुत कठिन. इसीलिए शिक्षा का भार खुद लेना चाहते थे. वे विश्वास के साथ कहते है कि- हमारे साथी शिक्षा-प्रेमियों के साथ मेरे हाथ में आप लोग पर्याप्त धन देकर देश की शिक्षा का भार दे दीजिए और यह मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि कुछ ही वर्षों में मैं इस भूमि से अशिक्षा को हटा दूंगा कि राष्ट्रीयता रूपी सूर्य के सामने साम्प्रदायिकता का कोहासा कभी टिक नहीं सकता और अपने देशवासियों के हृदय में इसी भाव को जमाना हम लोगों का लक्ष्य तथा अभिमान का विषय होगा.[१] मालवीय जी भली-भाँति जानते थे कि किसी भी देश का भविष्य उसके शिक्षण संस्थानों में ही लिखा जाता है. अत: राष्ट्र के विकास में शिक्षा की अहम् भूमिका होती है इसीलिए वे नि:शुल्क शिक्षा के पक्षधर थे. शिक्षा का माध्यम राष्ट्रीय भाषाएँ हो उसके भी समर्थक थे.

हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त हो मालवीय जी यही चाहते थे क्योंकि भारत के सभी प्रान्तों में इस भाषा को बोलने वाले लोग मौजूद हैं और यह भाषा देश के सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाती है. उन्होंने बम्बई में 10 अप्रैल 1919 हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कहा- हिन्दी भाषा अन्य देशी भाषाओं की 'बड़ी बहन' है. यह भारत के अधिकांश प्रान्तों में किसी न किसी रूप में प्रचलित है. अन्य प्रान्तीय भाषाओं की अपेक्षा इसके बोलने वालों की संख्या अधिक है.[२]

मालवीय जी राष्ट्रभाषा के सवाल को लेकर बहुत गंभीर थे. इसीलिए सभी भारतीयों को हिन्दी सीखने तथा सीखने में किसी तरह लज्जा का भाव नहीं, बल्कि गौरव की अनुभूति होने की सलाह देते है. वे राष्ट्र भाषा हिन्दी की उन्नति के साथ-साथ क्षेत्रीय एवं प्रान्तीय भाषाओं की उन्नति भी चाहते थे. वे भाषा की उन्नति को देश की उन्नति से जोड़कर देखते थे जिसे भारतेन्दु 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति के मूल' कहते हैं. मालवीय जी के शब्दों में- साहित्य और देश की उन्नति अपने देश की भाषा के द्वारा ही हो सकती है इसलिए जिस देश की जो भाषा है, उसी में उस देश का न्याय, कानून, राजकाज, कौंसिल इत्यादि का कार्य होना चाहिए.[३]

मालवीय जी चाहते थे कि आजादी से पूर्व ही हिन्दी राष्ट्र भाषा बन जाय क्योंकि भारत एक बहुभाषी देश है और यहां भाषा एक जटिल समस्या भी है. भाषा के प्रश्न को लेकर गांधी जी और मालवीय जी की राय लगभग एक जैसी थी. ये दोनों महानायक चाहते थे कि हिन्दी ही राष्ट्र भाषा बनें. इसके पीछे मालवीय जी का तर्क था कि इस भाषा का प्रयोग हिन्दू-मुसलमान के अलावा भारत में रहने वाले हर

समुदाय के लोग करते हैं. यहाँ तक कि ईसाई मिशनरियों ने तो हिन्दी को समृद्ध करने में काफी योगदान किया है. हिन्दी कैसे बढ़े इसके लिए मालवीय जी भारतीय जनता को कुछ सुझाव भी देते है- हिन्दी में फारसी के बड़े-बड़े शब्दों का व्यवहार जैसा बुरा है, हिन्दी को अकारण संस्कृत शब्दों से गूँथ देना वैसा ही बुरा है. जहाँ तक हो हिन्दी को हिन्दी ही रखी जाय. अनावश्यक शब्दों को हिन्दी से अलग कीजिए उर्दू और हिन्दी दोनों भाषाओं के रूप में गठ बन गये हैं. अब इन दोनों का यथा सम्भव एक स्थान में लाइये. इस बात के लिए यत्न करना जैसा हिन्दुओं के लिए जरूरी है वैसा ही मुसलमानों के लिए भी आवश्यक है. दोनों ओर से यत्न होने से हम भाषा के क्रम को एक कर सकते हैं.[४]

मालवीय जी आम बोलचाल के शब्दों पर ज्यादा बल देते थे. उनका मानना था कि साहित्य की भाषा बहुत सरल और बोधगम्य होनी चाहिए. बोलने और लिखने की भाषा में फर्क नहीं होना चाहिए. सरल हिन्दी का प्रयोग पुस्तकों और समाचार पत्रों में भी होना चाहिए. हिन्दी साहित्य का निर्माण यथासम्भव सरल हिन्दी में किया जाय. हमें ऐसी भाषा लिखनी चाहिए जिसे इस प्रान्त के लोग समझ सकें. लिखने की भाषा यथा सम्भव बोलने की भाषा से मिलती जुलती हो.[५]

मालवीय जी का हिन्दी प्रेम इतना था कि वे हिन्दी को केवल स्कूलों की भाषा न होकर उच्च शिक्षा का भी माध्यम बने इसके पक्षधर थे साथ ही हिन्दी का ज्ञान देश के सभी नागरिकों को हो इसके आंकाक्षी थे. उन्हें विश्वास था कि देश के लोग ऐसा करेंगे तो हिन्दी भी अंग्रेजी की तरह प्रचारित और प्रसारित हो सकेगी. सब भाई बहन राष्ट्र भाषा के गौरव को मानकर अपनी भाषा के साथ-साथ प्रत्येक बालक को हिन्दी का भी ज्ञान करावें...

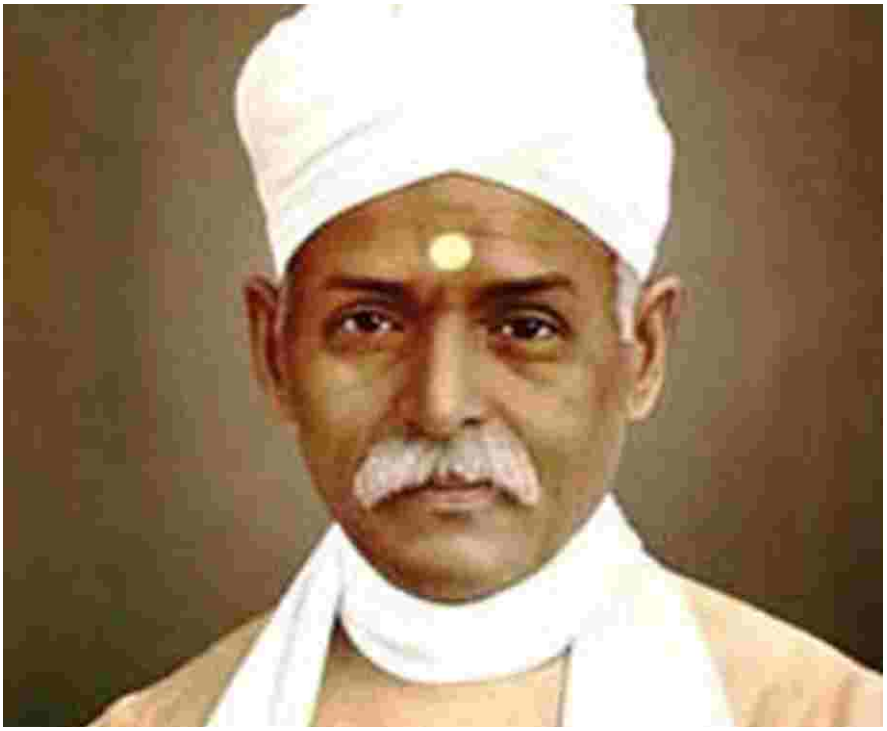

...आशा व्यक्त की कि कोई दिन आयेगा जिस भाँति अंग्रेजी जगत भाषा हो रही है, उसी भाँति हिन्दी का भी सर्वाधिक प्रचार होगा.[६]

मालवीय जी हिन्दी के अलावा क्षेत्रीय एवं प्रान्तीय भाषाओं की भी उन्नति चाहते थे. इसका मतलब यह कतई नहीं निकाला जाना चाहिए कि वे अंग्रेजी के विरोधी थे. उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि जो भी भाषा हमारे लिए लाभदायक हो उसे सीखना चाहिए. अंग्रेजी के बारे में उनका मत है कि- हमारे युवकों को विदेशी भाषाएँ सीखने की आवश्यकता है और कोई विदेशी भाषा हमारे लिए इतनी लाभदायक नहीं हो सकती जितनी अंग्रेजी.[७]

राष्ट्र और राष्ट्रीयता के मुद्दे को लेकर मालवीय जी की दृष्टि बहुत व्यापक थी. उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था. अकबर इलाहाबादी के एक शेर से उनके व्यक्तित्व को समझा जा सकता है.

हजार शेख ने दाढ़ी बढ़ाई सन की-सी,
मगर, वो बात कहाँ मालवी मदन की-सी.

संदर्भ :

1. सं० अवधेश प्रधान, महामना के विचार एक चयन, पृष्ठ 85
2. मुकुट बिहारी लाल, महामना मदन मोहन मालवीय : जीवन और नेतृत्व पृष्ठ-145
3. हिन्दी साहित्य सम्मेलन,बम्बई का अध्यक्षीय भाषण, सन् 1919
4. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण सन् 1910
5. सीताराम चतुर्वेदी, महामना पं० मदनमोहन मालवीय खण्ड-2 पृष्ठ- 27
6. सीताराम चतुर्वेदी, महामना पं० मदनमोहन मालवीय खण्ड-2 पृष्ठ- 38
7. काशी विश्वविद्यालय, दीक्षन्त भाषण, सन् 1920 ◆◆◆

Mistaan Catering & Sweets Inc.

Specializing in Bengali Sweets We do catering for Weddings & Parties

मिष्ठान की मिठाइयाँ

मिष्ठान की मिठाइयाँ
खाओ रसगुल्ले और रस मलाइयाँ

Our Daily Take-out Foods include:

Channa Bhatura	Aloo Ghobi
Malai Kofta	Matter Paneer
Channa Masala	Chicken Masala
Chicken Tikka	Tandoori Chicken
Butter Chicken	Goat Curry

& many more delicious items

अब आप बैठ कर खाने-पीने का आनन्द ले सकते हैं

460 McNicoll Avenue, North York, Ontario M2H 2E1

Visit Our Website: www.mistaan.com

Telephone: (416) 502-2737 Fax: (416) 502-0044

RAMA BAHRI

416-565-2596

Win a BMW car

When you buy or sell through me you have a chance to win a new BMW

GTA Realty Inc., Brokerage
Bus: 416.321.6969
Fax: 416.321.6963
206 - 1711 McCowan Rd., Scarborough, ON. M1S 3Y3

HomeLife GTA

GTA Realty Inc., Brokerage

प्यार की सौग़ात

■ डॉ. अफ़रोज़ ताज
प्रोफ़ैसर, डिपार्टमैण्ट आफ़ एशियन स्टडीज़
यूनिवर्सिटी ऑफ़ नार्थ कैरोलाइना, चैपल हिल, अमेरिका

मैंने उस दिन एक अजीब डरावना सपना देखा. मेरा दिल धड़कने लगा. मैंने अपने साथ कमरे में ठहरे हुए अपने दोस्त को जगाकर सपना सुनाना शुरू किया. 'शाहिद मुझे लगा कि आज मैं शर्म से मर जाऊँगा.' शाहिद ने ग़ुस्से से कहा, 'अरे भई सुना भी चुको अपना सपना, इतनी रात गये मुझे जगा दिया और अब पहेलियाँ बूझा रहे हो.'

मैंने ख़्वाब में देखा कि जब हमारी संगीत की टोली रंगमंच पर गई तो चारों तरफ़ हंगामा शुरू हो गया और आवाज़ें आईं- भागो यहाँ से जाओ वापस अपने शहर अलीगढ़. नफ़रत भरे टमाटर और जूते स्टेज पर आने लगे और हम सब वहाँ से भागे.

शाहिद ने ज़ोर से कहा, सो जाओ यह सच नहीं सपना है.

नहीं यार! मैं नहीं समझता हूँ कि हमें कल यहाँ की संगीत प्रतियोगिता में भाग लेना चाहिये, सुबह ही अलीगढ़ का रास्ता पकड़ना चाहिये. मैंने कहा और शाहिद कुछ न बोला.

यह उस दौर की बात है जब मैं अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का छात्र था. हम सात लोगों का समूह अलीगढ़ से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एक संगीत सम्मेलन की प्रतियोगिता में भाग लेने आया हुआ था. बड़ा ही कठिन काम था निर्णय लेना कि हमें बनारस जाना चाहिये या नहीं. अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के संगीत क्लब का मैं इंचार्ज था. जब हमारे संगीत अध्यापक ने हमें बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के संगीत समारोह की प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये निमन्त्रण दिखाया तो मेरे मुँह से वाह निकल गई. मेरे दोस्तों ने कहा, अरे पागल हुआ है, हम तो नहीं जायेंगे, हमारी जान इतनी सस्ती नहीं.

तुम ऐसा क्यों सोचते हो, बिना किसी उदाहरण के. क्या कभी ऐसा हुआ है हमारी यूनिवर्सिटी के छात्रों के साथ, मैं तुम्हारी एक न सुनूँगा और हम सब चलेंगे, एक क़व्वाली तैयार करके. जब वे हमें बुला सकते हैं तो हम क्यों नहीं जा सकते? मैं यह सब कहता चला गया.

सारों का मुँह खुला का खुला रह गया जैसे मैं किसी खाई में कूदने की बात पर सबको आमादा कर रहा हूँ. वैसे इसमें इनका क्या दोष? हालात ही ऐसे थे. अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का छात्र बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में क्यों जाने लगा, भला बहुत बड़ा अनर्थ है यह. लेकिन यह मेरी बचपन से आदत है कि मुझे उसी को हासिल करने की तमन्ना होती है जिससे मुझे डराया जाता है. मुझे अच्छी तरह याद है कि जब मैं बच्चा था मेरे घरवाले जब मुझे सुलाना चाहते थे तो मुझे एक खिलौने से डराते थे और मैं उस ख़ास खिलौने से डरने लगा था मगर धीरे-धीरे मेरे अन्दर उस को हासिल करने की अभिलाषा जागने लगी. एक दिन जब सब सो रहे थे मैंने चुपके से उस खिलौने को हाथ में उलट-पलट कर देखा वह तो बेचारा एक मासूम, भोला, बेज़ुबान गुड्डा था, मुझे अब भी याद है कि सुबह उस गुड्डे को मेरे साथ सोता देख कर सारे घर की चीख़ें निकल गई.

धीरे-धीरे एक-एक करके मैंने अपने तमाम संगीत सहपाठियों को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिये राज़ी कर लिया.

रात को हम सात छात्र बनारस पहुँचे. हमें यूनिवर्सिटी के गैस्ट हाउस में ठहराया गया, अभी हम खाना खाकर सोये ही थे कि इस डरावने सपने ने मेरे पैर उखाड़ दिये. दिल चाहता था कि भाग जाऊँ अभी वापस, इसी समय, आधी रात को. मैं सबको अलीगढ़ से तैयार करके लाया हूँ अगर ऊँच-नीच हो गई तो क्या मुँह दिखाऊँगा? जब बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र हमें खाना खिला रहे थे तो मैंने कइयों की आँखें ग़ुस्से लाल देखी थीं. उसी समय मेरे मन ने कहा यह मैंने क्या किया? मैंने दो लड़कों को आपस में खुसर- फुसर करते भी देखा था.

इस सपने के बाद सारी रात नींद न आई. दूसरे दिन रविवार था और दोपहर से ही समारोह शुरू होना था पता नहीं कब आँख लगी, आँख खुली तो सुबह के 10 बजे थे सब मेरे दोस्त प्रतियोगिता की तैयारियों में लगे थे.

स्टेज का पर्दा उठा, पर्दे की आवाज़ सुनी और एनाउन्सर की आवाज़ भी सुनी जब उसने कहा, यह

ग्रूप आया है अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से ---- इसके बात ऐसा लगता था कि कान के पर्दे फट जायेंगे. चारों तरफ़ से औडियन्स से लड़के लड़कियों की तालियाँ और हमारे अभिनन्दन में चीख़ों की आवाज़ें आने लगीं. ख़ुदा झूठ न बुलवाये लगभग तीन से पाँच मिनट तक हम कुछ न बोल सके. हमारी एक-एक अदा पर, एक-एक शेर पर अलीगढ़ से 10 गुना ज़्यादा वाह-वाह की आवाज़ें आ रही थीं.

शो समाप्त होने के बाद हमको ऐसे गले लगाया जा रहा था जैसे बरसों के बिछड़े सगे-सम्बन्धी मिले हैं. एक-एक बन्दा कई-कई बार लिपट रहा था. हमें बार-बार छू-छू कर देखा जा रहा था जैसे हम भी उनके बचपन के डराये जाने वाले गुड्डे हों.

हमको इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरुस्कार से नवाज़ा गया. हमारे कानों को यकीन न आया. मैंने सोचा क्या वहाँ हमसे अच्छे कलाकार न थे? बहुत थे, एक से एक अच्छे गानेवाले, एक से एक प्यारी और सुरीली आवाज़ों वाले मगर उन्हें तो शायद अपनी महमान नवाज़ी की मिसाल देनी थी. उनको तो अपने स्नेह तृष्णा को तृप्ति देनी थी. या शायद आइन्दा के लिये दरवाज़े खोलने थे.

मुझे आज भी याद है हम ट्रेन से अलीगढ़ वापस जा रहे थे, सब के हाथों में ट्रॉफ़ियाँ थीं, लबों पर ख़ामोशी और आँखों में शर्मिन्दगी. मुझे अपने सपने पर और उनको बनारस न जाने की ज़िद पर.

अलीगढ़ पहुँचकर मेरे मन में एक ही चाह थी कि वह कौन है जिसने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की. हम उनके नाम के आगे कुछ और क्यों नहीं जानते. अलीगढ़ की लाइब्रेरी में जाकर हैरत हुई कि बी.एच.यू. के बनाने वाले पण्डित मदन मोहन मालवीय के बारे में तो ख़ज़ाना भरा हुआ है यहाँ. उस ख़ज़ाने के चन्द मोती आपको नज़र करता हूँ .

मालवीय जी ने कहा था, ईश्वर की सबसे उत्तम पूजा यही है कि हम प्राणी मात्र में ईश्वर का भाव देखें, सबसे मित्रता का भाव देखें, सबका हित चाहे... अन्याय और अत्याचार को रोके और सत्य, न्याय और दया का प्रचार कर मनुष्यों में परस्पर प्रीति, सुख और शान्ति बढ़ावें.[1]

वे कहते थे मैं राज्य नहीं चाहता, मैं स्वर्ग नहीं चाहता और न ही मुझे मोक्ष चाहिये मेरी केवल एक ही अभिलाषा है कि जो बँधे हैं, उनके बंधन दूर हो जायें, जो ग़मगीन हैं, उनको सुकून और शांति मिले, भेदभाव की आग बुझ जाये और दोनों तरफ़ के प्रेम के बीच में जहालत की दीवार गिर जाये.

मालवीय जी की यही सोच थी कि अध्यापक और छात्र में बार-बार सम्पर्क होना अति आवश्यक है. केवल कक्षा में अपने विषय पर बात करना ही शिक्षा नहीं है बल्कि क्लास से बाहर छात्र अध्यापक का साथ होगा तो इससे गुरु शिष्य में दैनिक व्यवहार, अतिथि के प्रति प्रेम भावना और दूसरों के सामने अपना मन बलिदान जैसे मुद्दों पर विचार-विमर्श भी शिक्षा का एक अहम पहलू है. जोकि गुरु से केवल कक्षा में विशेष विषय पर बात करने से नहीं हासिल हो सकता. मालवीय जी के मन में एक ऐसा शिक्षा सदन निर्माण हो रहा था जिसमें भारतीय विद्या के साथ-साथ आधुनिक विज्ञानों के अध्ययन की व्यवस्था हो और जिसमें गुरु और शिष्य साथ-साथ रहें.

डॉ. देवेन्द्रकुमार राय अपने एक लेख में कहते हैं- विश्वविद्यालय के स्थान के बारे में काशी का चुनाव स्वत: ही हुआ लगता है. सन् 1903 ई. में जब अलीगढ़ में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने का प्रस्ताव सर आग़ा ख़ान ने सरकार के समक्ष रखा था तो उसी में उन्होंने यह भी लिखा था कि काशी में इसी प्रकार का हिन्दू विश्वविद्यालय खोले जाने के प्रस्ताव के भी वे समर्थक हैं. भारत के शैक्षणिक और धार्मिक चिन्तन में काशी का स्थान अलौकिक था.[2]

सन् 1916 ई. में स्थापित मालवीय जी का काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भारतीयों के भविष्य और आत्म निर्भरता का भरोसा बन गया. विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ धर्म और संस्कार पर भी ज़ोर डाला गया. इन दोनों प्रकार की शिक्षाओं के जुड़ाव को बड़ा ही आवश्यक माना गया. भिन्नता में एकता की डोर पिरोई गई. इस लक्ष्य को सामने रखते हुए मालवीय जी ने विद्यार्थियों से कहा- अपने देश वासियों से प्रेम करो और उनमें एकता की भावना जगाओ. तुमसे विशाल धैर्य और सहनशक्ति की अपेक्षा की जाती है ---- हम सब उस देश में फैली हुई निरक्षरता को धिक्कारते हैं. इसके उन्मूलन के लिये हमें स्वराज प्राप्ति की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये. मैं तुम सबसे, हर छात्र और छात्रा से, आग्रह करता हूँ कि निरक्षरता के दूरीकरण की प्रतिज्ञा करोगे --- धर्म की शिक्षा भी अत्यावश्यक है. यह धर्म है प्रेम का, सेवा का, सहनशीलता और परस्पर के प्रति सम्मान का.[3]

सन् 1941 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि- हम एक राष्ट्र हैं. भारत हिन्दुओं, मुसलमानों, ईसाइयों, पार्सियों और सिक्खों की मातृभूमि है. हिन्दू राज्य और मुस्लिम राज्य के दिन अब बीत चुके हैं. अब हमें हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तानी राज्य की स्थापना करनी चाहिये.[4]

धर्म निरपेक्षतावाद उनकी ज़िन्दगी का एक अहम सिद्धान्त था. हम सबको मालूम ही है कि यही सिद्धान्त आगे चलकर आज़ाद भारत की राजनैतिक पुस्तक का एक ख़ास अध्याय बना. उनका सपना था कि भारत एक ऐसा देश हो जहाँ सभी धर्मों को समान सम्मान मिले. मालवीय जी का कहना था कि हिन्दू धर्म में भी अन्य धर्मों की सोचों और आदर्शों के लिये पर्याप्त स्थान है और हिन्दू धर्म का लक्ष्य सारे इन्सानों की सेवा है. महामना जी के धार्मिक भेदभाव के विरोध का इस से बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है कि उन्होंने सदैव ही हिन्दू महासभा के मंच से हिन्दू-मुस्लिम एकीकरण का ही प्रयास किया. उन्होंने अनेक अवसरों पर यह ज़ाहिर किया कि हिन्दू महासभा मुसलमानों के ख़िलाफ़ नहीं है. उनका बार-बार

कहना था कि आपसी तफ़रीक़ और झगड़ों को छोड़कर हमें यह देखना है कि इस समय हमारे देश को हमारी आवश्यकता है. हमारे बंटने से हमारे देश को स्वाधीनता प्राप्त नहीं हो सकती. एक-दूसरे को शिक्षा दो कि हम एकीकरण पर ध्यान दें उन्होंने मुसलमानों द्वारा गोवध और हिन्दुओं द्वारा मस्जिद के सामने बाजा बजाने पर प्रतिबन्ध पर बड़ा ज़ोर दिया.

ख़ुद मौलाना मोहम्मद अली ने उनके इन अनोखे विचारों से प्रभावित होकर कहा, अल्पसंख्यकों के वास्तविक हिमायती पण्डित मदन मोहन मालवीय हैं. मैं पण्डित मालवीय में विश्वास रखने की प्रतिज्ञा करता हूँ. मैं उन्हें धोखा नहीं दूँगा. मैं विश्वास करता हूँ कि वे मुझे धोखा नहीं देंगे.[5]

बाद में मदन मोहन मालवीय जी को थोड़ा शक हुआ कि हिन्दू महासभा अपने बिन्दु से हट रही है और अपनी चारों ओर दीवार-सी खींच रही है तो उन्होंने अपने उसूलों को बचाते हुए हिन्दू महासभा के कार्यों से ख़ुद को अलग करना बेहतर समझा.

दिसम्बर 14, 1929 ई. में मालवीय जी ने एक कौनवोकेशन के भाषण में विद्यार्थियों से कहा कि- तुम को हमेशा अपने देश के प्रति कर्तव्य के लिये तैयार रहना है अपने देश से और तमाम देश वासियों से प्रेम का नाता रखना है. सबसे सहनशीलता और आत्मिक रिश्ते से मिलना है. उनकी ख़ुशी में ख़ुश और उनके ग़म में ग़मगीन होना है. अपने देश के सभी वासियों के जीवन को बहतर बनाने के लिये हर क़ुर्बानी के लिये सदैव तैयार रहना है. तुम्हारी शिक्षा जो तुमने आज पाई है बेकार है यदि तुम्हारी आँखों में अपने देश को स्वतन्त्र देखने का सपना नहीं. सबके हाथ से हाथ मिलाओ. यदि कोई तुम तक आने में झिझकता हो तो तुम ख़ुद आगे बढ़कर गले लगाकर उसका भय दूर करो.

मुझे विश्वास है कि आज महामना मदन मोहन मालवीय जी का यह सपना साकार हो चुका है. विद्यार्थियों ने उनका हर संदेश, हर भाषण और हर संकेत ध्यान से समझा जिसका नतीजा निकला कि मैं अलीगढ़ मुस्लिम विश्विविद्यालय की एक पुस्तकालय में उनके बारे में पढ़ता पाया गया. पहले मैं केवल अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के संस्थापक सर सैयद अहमद ख़ान के बारे में ही जानता था पर अब मैं कह सकता हूँ कि भारत की केवल एक आँख नहीं है, आज मेरी भी दोनों आँखें खुल गईं.

कुछ वर्षों तक मेरे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के बनाये हुए प्यारे दोस्त सम्पर्क में रहे उनमें राकेश शर्मा, विजय कुमार और अनिल चौबे मुझे अब भी याद हैं. समय और आयु की वायु इंसान को अपनी-अपनी दिशा में उड़ाकर ले जाती है कि बड़े-बड़े अपने बेगाने और बेगाने अपने हो जाते हैं. हाँ मुझे राकेश का एक पत्र ज़रूर याद है जिसके अन्त में यह शेर था -

तुम प्यार की सौग़ात लिये घर से तो निकलो,
रस्ते में तुम्हें कोई भी दुश्मन न मिलेगा.

चौबीस साल बाद में मदन मोहन मालवीय की सरज़मीन पर दुबारा पहुँचा एक छोटी फ़िल्म बनाने. अमेरिका के शिक्षा विभाग की ओर से दी गई बड़ी ग्रांट के द्वारा, मुझे विदेश में हिन्दी सिखाने के लिये चन्द फ़िल्में बनानी थीं. निसंदेह ही मुझे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में एक फ़िल्म तो बनानी ही थी. गंगा के घाट की सुबह और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की शान बिना दिखाये कैसे रह सकता था भला. मुझे मेरे मित्रों का प्रेम खींचकर लाया था. लेकिन दूर-दूर तक मेरे मित्रों में से कोई न था. 24 साल का अन्तराल काफ़ी होता है. मैंने जी खोलकर अपने अमरीकन सहपाठियों के साथ एक भोली-भाली प्रेम कहानी पर आधारित यह फ़िल्म बनाई और बनारस के सम्मान में एक गीत लिखा और गाया भी. यह फ़िल्म इण्टरनैट पर देखी जा सकती है. इसका वैब अड्रैस है -

http://taj.chass.ncsu.edu/Hindi.Less.13/index.html

बनारस के लिये लिखा गीत मेरे दिल की आवाज़ है -

मन्दिरों का यह नगर है
आसमाँ जिसकी ज़मीं

यह बनारस की सुबह
दुनिया में है सबसे हसीं.

फ़िल्म बनाने के ब्रेक में मैं उसी मन्दिर की ओर चल दिया जहाँ मेरा दोस्त राकेश मुझे लेकर गया था. मैंने मन्दिर के उसी चबूतरे की ओर देखा जहाँ मैं और राकेश देर तक बातें करते रहे. यह क्या मैं देखता रह गया, जैसे 24 साल का समय जम गया हो. बिल्कुल राकेश की शक्ल का एक लड़का उसी मन्दिर के चबूतरे पर बैठा मेरी ओर सवालिया मुस्कुराहट से देख रहा था, वही बीस साल की उम्र, वही चेहरा, आँखों में वही अभिनन्दन, होंठों पर वही मुस्कान. कौन हो तुम ? न मैं पूछ सका न वह. मैं सोचता रह गया कि इनसान बदल जाते हैं पर इमारत और मानव चरित्र की वे आधारशिलाएँ जिनको बड़े-बड़े महापुरुष डाल गये हैं उसे समय नहीं उखाड़ सकता.

संदर्भ :

1. महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय, सम्पादक, पण्डित सीताराम चतुर्वेदी.
2. महामना की शिक्षा विषयक दृष्टि और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, डॉ. देवेनद्रकुमार राय.
3. महामना का 12वें दीक्षान्त समारोह का भाषण, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, 4 दिसम्बर सन् 1929 ई..
4. अक्तूबर 10, 1941 मालवीय जी का भाषण, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, विद्यार्थी संगठन के समक्ष.
5. इण्डियन क्वार्टरली रजिस्टर 1927, जिल्द 2 पृष्ठ 408-410.

नोट : भारतीय मनीषा के अग्रदूत- पण्डित मदन मोहन मालवीय, 15 जनवरी, 2001, सम्पादक डॉ. चन्द्रकला पाडिया एवं डॉ. भावना मिश्रा का सहयोग भी प्राप्त किया गया, जिनका मैं कृतज्ञ हूँ.

◆◆◆

सबसे बड़ा भिक्षुक

शीला मालवीय,
कैम्ब्रिज, कनाडा

मेरा जन्म भी प्रयाग के मालवीय परिवार में हुआ है और बचपन से महामना मदन मोहन मालवीय की प्रेरणादायक बातें अपने पूर्वजों से सुनती आई हूँ. आज उन्हीं यादों को लिखने का साहस कर रही हूँ.

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय एक ऐसे ऋषितुल्य महापुरुष थे, जिनके रचनात्मक क्रियाकलापों के कारण हिंदी, हिन्दू और हिन्दुस्तान के उत्थान में उनका नाम बड़े श्रद्धा से लिया जाता है. पंडित जी एक महान देश भक्त थे. उनका सारा जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित था. उन्होंने चार बार कांग्रेस के नेतृत्व की बागडोर सम्भाली थी. वह बहुत बड़े बैरिस्टर, अध्यापक, पत्रकार और सबसे बढ़कर देश सेवक थे. हिंदी से उन्हें अटूट प्रेम था. उनकी कामना थी कि हिंदी राष्ट्र भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो. वह स्वयं हिंदी के शब्दों का नि:संकोच प्रयोग करते थे. स्वयं अंग्रेजी के अच्छे विद्वान थे, लेकिन कहा करते थे मैं अंग्रेजी में लिख, पढ़, बोल तो लेता हूँ किन्तु विश्वास के साथ नहीं कह सकता कि मैंने सही ढंग से कुछ कहा और लिखा है. हमें अपनी मातृभाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए न कि किसी विदेशी भाषा का.

उनकी सबसे बड़ी देन है काशी विश्वविद्यालय. जिसकी ख्याति विश्व में है. वह बड़े कर्मठ व्यक्ति थे, जो ठान लेते थे, वह करके छोड़ते थे. उन्हें विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए बहुत-सा चंदा माँगने के लिए देश के अनेकों राजाओं के पास जाना पड़ता था. वे निजाम के पास हैदराबाद गये और वहाँ उन्हें निजाम ने दान देने से इन्कार कर दिया. पंडित जी कभी खाली हाथ नहीं लौटते थे. उसी दिन निजाम के महल के पास किसी बूढ़े हिन्दू सेठ का शव निकल रहा था, पंडित जी उसमें शामिल हो गये और उसमें लुटाये जाने वाले पैसे एकत्रित करने लगे, लोगों के पूछने पर उन्होंने कहा खाली हाथ जाने से अच्छा कुछ पैसे इसी प्रकार ले जाना ठीक रहेगा.

निजाम को यह बात सुन कर बहुत लज्जा आई और उन्होंने पंडित जी को बुलवाकर बहुत बड़ी धनराशि विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए दी.

जिस स्थान पर पंडित जी विश्वविद्यालय का निर्माण कराना चाहते थे, वह काशी नरेश की थी. उन्होंने मालवीय जी से कहा जितना धन चाहो ले लो पर वह पवित्र भूमि नहीं दूंगा. अब पंडित जी के सामने विकट समस्या आई, उनको ज्ञात हुआ कि काशी नरेश मकर संक्रान्ति को दान करते हैं, फिर क्या था पंडित जी गंगा तट पर एक कर्मकांडी ब्राह्मण के रूप में उपस्थित हुए. काशी नरेश ने जब संकल्प करवाने को कहा तो पंडित जी ने वही भूमि प्राप्त कर ली जिसके लिए वे बहुत समय से प्रयत्नशील थे. मालवीय जी की अपूर्व भिक्षावृत्ति का लोहा मानते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था महामना संसार के सबसे बड़े भिखारी हैं. वह एक स्वाभिमानी व्यक्ति थे, अपने कष्ट के अवसर पर दूसरों के आगे हाथ पसारना नहीं जानते थे. उनका कथन था मरी जाऊं मागुन नहीं अपने हित के काजू.

उन्होंने नारी जाति के उत्थान के लिए काफी काम किया. वह चाहते थे देश की नारी खूब पढ़े लिखे. प्रयाग में उन्होंने पंडित बालकृष्ण भट्ट और राजर्षि पुरुषोत्तम टंडन के सहयोग से गौरी पाठशाला की स्थापना की, जो आज डिग्री कॉलेज है.

उनका सारा जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित था. वे देश के लिए जिए और देश के लिए मरे. हम सबके लिए उच्चादर्शों की एक आदर्श विरासत छोड़ गये हैं. उनके द्वारा स्थापित काशी विश्वविद्यालय का कण-कण युगों तक उनकी कीर्ति को अमर रखेगा.

◆◆◆

पंडित मदन मोहन मालवीय मेरे परिवार जैसे

■ डॉ. आनन्द सुंदरम, कैनेडा

पंडित मदन मोहन मालवीय एक दूरदर्शी व्यक्ति थे. आपने प्रारम्भ से ही संस्कृत सीखी और आप गीता को गाने लगे. उसके बाद आपने वकालत की शिक्षा ली और एक देश भक्त व राजनीतिज्ञ हो गये. उनका सबसे बड़ा काम काशी विश्वविद्यालय की स्थापना है. 1916 में जब लार्ड हार्डिंग तत्कालीन वाइसराय ने इसका शिलान्यास किया तो उनके जीवन का स्वप्न साकार हुआ. इसके निर्माण के लिए काशी नरेश ने उन्हें भूमि प्रदान की. 1917 से यह विश्वविद्यालय विश्व की विशाल यूनिवर्सिटी मानी जाने लगी.

यह मेरा सौभाग्य था कि मैं इस विश्वविद्यालय का विद्यार्थी रहा और मेरा निवास स्थान मालवीय जी के निवास के बिल्कुल साथ था. बचपन में मैं और उनके बच्चे एक-दूसरे घर में अनेकों बार आते- जाते रहते थे और उनके बागीचे में खूब खेलते थे. मेरे घर के साथ में उनका बेटा मुकुंद मालवीय रहता था. मेरे पिता श्री वी.ए. सुन्दरम गांधी जी के माध्यम से मालवीय जी के सम्पर्क में आये. 1016 में जब मालवीय जी साबरमती आश्रम में आए तो गांधी जी ने मालवीय जी से कहा कि आप सुन्दरम जी को दान एकत्रित करने के लिए आमंत्रित करें. उस समय मेरे पिता जी शिमला में श्री स्टोक्स के स्कूल में अंग्रेजी के शिक्षक थे. इसके बाद मेरे पिता जी बनारस आये और वहां एक कमरे में रहने लगे, जो मार्बल हाउस के नाम से जाना जाता था. मालवीय जी उस समय बनारस यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति थे और वे प्राय: वहां आया करते थे. उस घर में ही दानकोश का कार्यालय भी था. मेरे पिता जी के नेतृत्व में उस समय के अनुसार बहुत बड़ी राशि एकत्रित हुई थी.

मेरे पिता जी मालवीय जी के लिए देश के बड़े-बड़े राजाओं, महाराजाओं, नेताओं के पास जाकर चंदा इकट्ठा कर लाते थे और जब भी गांधी जी बनारस आते मेरे घर मार्बल हॉउस में अवश्य पधारते.

वैसे मेरा जन्म रंगून, बर्मा में हुआ था और मेरे पिता व मालवीय जी जेल भेज दिए गये. तदुपरांत वे गांधी जी के साथ 1931 में लन्दन में होने वाली गोल मेज़ कांफ्रेंस में मेरे पिता व मालवीय जी, उनके पुत्र गोविन्द मालवीय और देवदास गांधी भी साथ गये थे.

मैं बनारस में ही बड़ा हुआ और जहाँ तक मुझे याद है मुझे लोग मालवीय परिवार का ही सदस्य समझते थे. उन दिनों टेलीविज़न, फोन आदि तो था नहीं हमें अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाई जाती थीं और यही हमारे लिए मनोरंजन था. हम हर रोज मालवीय जी के विषय में उनकी सफलता की बातें सुना करते थे. बनारस यूनिवर्सिटी के नाम से बच्चा-बच्चा परिचित था और इसका नाम दुनिया भर में फैल चुका था. जब मालवीय जी इलाहबाद में रहते थे तो मैं अपने पिता जी के साथ कई बार उनके घर पर गया था. मेरे पिता जी उन्हें हमेशा एक महान व्यक्ति समझते थे. जब मेरे पिता जी रिटायर हो गये तब मालवीय जी हर रोज़ अपनी कार से मेरे घर आते थे और उन्हें अपने साथ यूनिवर्सिटी ले जाते थे. मेरे पिता जी जब घर वापस लौटते तो बहुत सी नई-नई बातें बताया करते थे.

1946 में जब उनका स्वर्गवास हुआ, मैं उस समय बनारस यूनिवर्सिटी में विद्यार्थी था. मैं उनके अंतिम संस्कार में हज़ारों लोगों की भीड़ में मनिकार्निका घाट जो गंगा नदी के तट पर है, खड़ा था. मैंने उनकी चिता को, उनके प्रिय पुत्र द्वारा लगाई गई आग की लपटों को, जलते हुए और उसे भस्म होते हुए देखा. यह मेरा जीवन में पहला मौका था. यह दृश्य मेरे हृदय पर अमिट छाप छोड़ गया. हिन्दू रीति के अनुसार 14 दिन के बाद मालवीय परिवार के सदस्यों के साथ मेरे पिता जी ने भी अपना सिर मुंडवाया था. हम उनके शोक में डूबे हुए थे. हमारा सारा परिवार मालवीय जी से बहुत प्रभावित था और हम अपने-आपको बहुत भाग्यशाली समझते हैं कि हम मालवीय जी के इतने निकट थे. हिंदी चेतना के माध्यम से 65 वर्षों के बाद मालवीय जी के पौत्र गिरधर मालवीय जी से मेरी बातचीत हुई और मुझे अपने पुराने मित्र व एक सहपाठी से मिलवा दिया. ऐसा लगा कि मेरा बचपन लौट आया.

◆◆◆

शत-शत प्रणाम

श्रीनाथ प्रसाद द्विवेदी
सरी, वैन्कुअर, कैनेडा

भारती के सपूत
राष्ट्रीय चेतना के दूत
औ महामना मालवीय
तुमको शत-शत प्रणाम.

तुम थे युग दृष्टा
तुम थे ज्ञान सृष्टा
ओ! ओजस्वी वक्ता
तुम में थी अतुलनीय निष्ठा
तुमने की देश सेवा निष्काम.

तुमने जाना
समस्या को पहचाना
कि अशिक्षा दासता का मूल
और ऊपर से निरंतर चुभता
पाश्चात्य सभ्यता का शूल
नज़र आता भारतीय संस्कृति का ह्रास
देश की अस्मिता का सर्वनाश.

हिंदी विश्वविद्यालय की
स्थापना का संकल्प
दृढ़ निश्चय निर्विकल्प
भारतीय ज्ञान-विज्ञान पर आधारित
उच्च शिक्षा का प्रावधान
था अर्थ सम्बन्धी व्यवधान
फिर भी स्थिर मन से
लोकमंगल की भावना से
लक्ष्यपूर्ति हेतु निकल पड़े
जिधर मन किया चल पड़े.
उन्हें विश्वास था
श्रम जाता नहीं व्यर्थ
जहाँ भी दिखती उन्हें
विश्वविद्यालय के लिए दान
मिलने की संभावना
सदाशयता की ओढ़े चादर
लेकर सद्भावना
संकोच, झिझक को झाड़ते
बेधड़क निकल पड़ते
ताक में रखते अपना मान सम्मान
पैरों में धूल
और शिर में आसमान.

चाहे राजे हों
महाराजे हों
व्यवसायी हों
गणिकाएँ हों
सभी के पास जाते
खाली झोली लेकर
कभी वापस नहीं आते.

यह उनका आत्म विश्वास था
और ईश्वर भी उनके साथ था
उनकी सदाशयी, शुद्धशयी वाणी
उनके ज्ञान-ध्यान से
प्रभावित होता हर प्राणी.

किसी ने कभी कुछ कहा भी
तो आक्रोश को कभी
फटकने नहीं दिया पास
मानसिक संतुलन बनाये रखा
चाहे किसी का रहा हो निवास.

जिनका था चन्दन मन
निश्छल, निर्मल तन
वग्मिता और विद्वता का
उनमें था विलक्षण संगम
जिनमें राष्ट्र चेतना
तथा भारतीयता अगम.

ऋषि परम्परा के
सच्चे उत्तराधिकारी
सम्मान, श्रद्धा के
अनुपम अधिकारी
स्वदेश, स्वराज्य, स्वभाषा
के प्रबल पक्षधर
सत्यता, मधुरता में पगे अधर.

अपने विचारों एवं सिद्धांतों को
दिया तुमने अंजाम
आपके स्वतन्त्रता संग्राम में
आया नहीं कोई विराम
भारत के मुक्ति की अभिलाषा
आपका यही था स्वप्न, यही काम.

कुलगीत

काशी वि.वि. के हर कार्यक्रम के अवसर पर यह गीत गाया जाता था और पंडित मदन मोहन मालवीय जी को अत्यंत प्रिय था.

मधुर मनोहर अतीव सुंदर, यह सर्व विद्या की राजधानी।
यह तीनो लोकों से न्यारी काशी, सुजान धर्म और सत्यराशी।

बसी गंगा के रम्य तट पर, यह सर्व विद्या की राजधानी।।
मधुर मनोहर अतीव सुंदर, यह सर्व विद्या की राजधानी।

नये नहीं हैं यह ईंट पत्थर, है विश्वकर्मा का कार्य सुंदर।।
रचे हैं विद्या के भव्य मन्दिर, यह सर्व सृष्टि की राजधानी।

मधुर मनोहर अतीव सुंदर, यह सर्व विद्या की राजधानी।।
यहाँ की यह पवित्र शिक्षा, की सत्य पहले फिर आत्म रक्षा।

बिके हरिश्चन्द्र थे यहीं पर, यह सत्य शिक्षा की राजधानी।।
मधुर मनोहर अतीव सुंदर यह सर्व विद्या की राजधानी।

यह वेद ईश्वर की सत्यवानी बने जिन्हें पढ़ के ब्रह्म ज्ञानी।।
व्यास जी ने रचे यहीं पर, यह ब्रह्म विद्या की राजधानी।

मधुर मनोहर अतीव सुंदर, यह सर्व विद्या की राजधानी।
वह मुक्तिपद को दिलाने वाले, सुधर्म पथ पर चलाने वाले।।

यहीं फले-फूले बुद्ध शंकर, यह राज ऋषियों की राजधानी।
मधुर मनोहर अतीव सुंदर, यह सर्व विद्या की राजधानी।

सुरम्य धाराएँ वरुणा अस्सी, नहाये जिनमें कबीर तुलसी।।
भला हो कविता का क्यों आकर, यह वाग विद्या की राजधानी।

मधुर मनोहर अतीव सुंदर, यह सर्व विद्या की राजधानी।
विविध कला अर्थ शास्त्र गायन, गणित खनिज औषधि रसायन।।

प्रतीचि-प्राची का मेल सुंदर, यह विश्वविद्या की राजधानी।
मधुर मनोहर अतीव सुंदर, यह सर्व विद्या की राजधानी।

यह मालवीय की है देशभक्ति, यह उनका साहस यह उनकी शक्ति।
प्रगट हुई है नवीन होकर, यह कर्मवीरों की राजधानी।।

मधुर मनोहर अतीव सुंदर, यह सर्व विद्या की राजधानी।

श्रीमती राजकुमारी सिन्हा के सौजन्य से ....

महात्मा मालवीय

अमित कुमार सिंह, बनारस

महात्मा, ज्ञानी, ऋषि
शिक्षक, याचक या दानी
तुम सा कौन है कुर्बानी!

शिक्षा के इस मन्दिर हेतु
दर-दर की ठोकरें खाईं
घूम-घूम कर लोगों को
इसकी महिमा समझाई

नि:स्वार्थ इस साधना में
भूलकर अपने सारे कष्ट
शिक्षा के प्रसार का
किया कार्य ये उत्कृष्ट

इस महापुरुष के आशीर्वाद से
फल-फूल रहा है
बी.एच.यू. विश्वविद्यालय परिवार
जला ज्योति ज्ञान की
फैला रहे हैं
अमित प्रकाश
मिटा अज्ञानता को
कर रहे हैं, वो
मालवीय जी के
'किरन' सपनों को साकार.

कुछ शब्द

राष्ट्रकवि
मैथिलिशरण गुप्त से

हे! भारत के अभिमानी
भारत को अभिमान तुम्हारा
तुम भारत के अभिमानी
पूज्य पुरोहित थे हम सबके
रहे सदा समाधानी।

तुम्हें कुशल याचक कहते हैं
किन्तु कौन तुमसा दानी
अक्षय शिक्षा सूत्र तुम्हारा
हे ब्राह्मण ब्रह्मज्ञानी।

स्वयं मदन मोहन कि तुममें
तन्मयता समा गयी
कल्याणी वाणी जन-जन के
हित में धूनी रमा गयी।

उन्होंने पत्थरों में जान डाल दी

■ *अखिलेश शुक्ल, भारत*

बनारस आध्यात्म, दर्शन, धर्म व ज्योतिष का विश्व प्रसिद्ध केन्द्र है. यह विश्व के प्राचीनतम नगरों में से एक है. इसके गंगा तट से लगे हुए विशाल व भव्य घाटों की श्रृंखला बरबस ही मन मोह लेती है. भागीरथ ऋषि के प्रयास का फल गंगा, जिसके किनारे यह नगर बसा है, उन्हें कौन नहीं जानता ? उनके प्रयासों के फलस्वरूप ही गंगा धरती पर अवतरित हुई थी. यह शिव की नगरी मुझे बहुत प्रिय है. कहा जाता है कि यहां कण-कण में शंकर बसते हैं. मैं इसी नगर का कंकर अर्थात पत्थर हूं जिसे शिव ने अपनाया था. इस प्राचीन नगर को काशी व वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है. एक पुरानी कहावत है - राड़, सांड़, सीढ़ी, सन्यासी. इनसे बचें तो सेवे काशी. यदि आप वाराणसी का असली आनंद लेना चाहते हैं तो इनसे बचकर चलिए अन्यथा मुसीबत में पड़े बिना नहीं रहेंगे.

इसी बनारस के आसपास फैले सैकड़ों पत्थरों में से मैं एक हूं. इस नगर से मेरा नाता प्राचीन काल से रहा है. गंगा के तट पर, मंदिरों व घरों के आसपास मेरे सगे संबंधी बिखरे पड़े हैं. उन्हें आते-जाते लोग कोसते रहते हैं. वे सोचते हैं कि हम उनकी राह की रुकावटें हैं. लेकिन हम नहीं होते तो शायद यह विशाल विश्वविद्यालय भी नहीं होता.

वैसे तो हमारे बिना दुनिया में किसी की भी गुजर संभव नहीं है. पाषाण युग का आदि मानव हमारे पूर्वजों का उपयोग हथियार बनाने में करता था. उस समय से ही हम मानव सभ्यता का एक अहम हिस्सा बने हुए हैं. लेकिन हम आभारी हैं उस महान आत्मा के, महामना के जिन्हें लोग पंडित मदनमोहन मालवीय के नाम से जानते हैं. हम नतमस्तक हैं उनके महान प्रयास के लिए. उन्होंने हम निर्जीवों में भी जान डाल दी थी.

वह समय बीसवीं सदी का प्रारंभ था. उस वक्त भारत में आजादी के प्रयास तेज हो गए थे. देशभर में क्रांतिकारी अपने अपने ढंग से ब्रिटिश शासन का विरोध कर रहे थे. समाज का प्रत्येक वर्ग अपने- अपने तरीके से इस विरोध को तीव्र करने में जुटा हुआ था. लेकिन विरोध इतना पुरजोर नहीं था कि अंग्रेज़ों को यह देश छोड़कर जाना पड़े. उसका सबसे बड़ा कारण था अशिक्षा. सामान्य जन अशिक्षा की वजह से आज़ादी का अर्थ नहीं समझ पा रहा था. उसे यह पता ही नहीं था कि क्या किया जाए जिससे आज़ादी हासिल हो सके.

लेकिन पंडित जी यह अच्छी तरह से जानते थे कि देश को शीघ्र आज़ाद कराना है तो जनसामान्य का शिक्षित होना आवश्यक है. लोग शिक्षित होंगे तो उनके मन में आज़ादी के लिए अरमान जगाना सरल हो जाएगा. मेरे उद्धारक मालवीयजी ने गरीबी में दिन गुजारते हुए बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की थी. उसके पश्चात 40 रुपए माहवार के वेतन पर अध्यापक हो गए थे. समाज सेवा, राजनीति, पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में चमत्कारिक सफलता प्राप्त की थी मेरे मदन मोहन जी ने. स्वयं का अंग्रेजी समाचार-पत्र निकालने और एल.एल.बी. कर वकालत करने जैसे विविधतापूर्ण कार्य भी किए थे उस महान आत्मा ने. उनके शानदार वक्तव्य और लोगों को प्रभावित करने की कला का हर कोई दीवाना था.

उन्होंने मेरे पूर्वजों पर बहुत उपकार किए थे. मेरे साथियों सगे संबंधियों को राहगीरों की ठोकर से बचाकर हम पर जो उपकार किए हैं उसे हम शायद ही कभी भूल पाएंगे. मेरे उस महामना को गांधीजी देश का नवरत्न कहा करते थे. वे भारतीय संस्कृति के समर्थक तो थे ही लेकिन अन्य धर्मों के प्रति भी उनके मन में समुचित आदर भाव था. उनके धार्मिक विचारों को शास्त्र की प्रामाणिकता तथा उदारवाद का मिश्रण कहा जा सकता है.

वे देश भर में भ्रमण किया करते थे. लोगों की सेवा करते हुए उन्हें धार्मिकता के साथ-साथ शिक्षा का महत्व भी बताया करते थे. वे एक बार भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए दरभंगा गए हुए थे. उन्होंने वहां देखा कि अशिक्षा और अज्ञानता से घिरे हुए लोग अपने तथा अपने परिजनों के लिए कुछ भी करने में असमर्थ हैं. देश के लोगों को आधुनिक तरीके से शिक्षित करना आवश्यक है. इसलिए उन्होंने अपने द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय में विशेष प्रयास भी किए थे.

वे अपनी कर्मस्थली बनारस में विश्वविद्यालय की स्थापना करने की मंशा से काशी नरेश से मिले थे. काशी नरेश ने उन्हें पर्याप्त सम्मान देते हुए देश में उच्च शिक्षा मंदिर

की स्थापना के लिए दान स्वरूप भूमि दी थी. भूमि प्राप्त होने पर देश में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने के लिए विश्वविद्यालय की स्थापना की कामना से वे देशभर में भ्रमण कर धन एकत्रित करते रहे. उनकी कार्यप्रणाली व उद्देश्य से प्रभावित होकर रामपुर और हैदराबाद की मुस्लिम रियासतों ने भी भरपूर सहयोग दिया था. उनके प्रयासों की सफलता के साथ-साथ मेरा भी देश में उच्च शिक्षा से जुड़ने का सपना अपरोक्ष रूप से साकार हुआ था.

मुझे अच्छी तरह याद है पिछली सदी का वह वर्ष सन् 1916 ही था. संक्रांति के पश्चात गुलाबी ठंड़ बनारस से जा चुकी थी. हम पत्थरों का भी भाग्य चमकने वाला था. वसंत पंचमी के शुभ दिन पंडित जी ने वाइसराय लार्ड हार्डिंग्ज़ को विश्वविद्यालय की नींव रखने के लिए आमंत्रित किया था. उसी दिन से हम भी विश्वविद्यालय की शोभा बनने लगे. उस समय से बनारस में शिक्षा का यह केन्द्र बनारस हिंदू विश्वविद्यालय कहलाया. लेकिन आप यह न समझें कि यह केवल हिन्दू धर्म व संस्कृति का प्रचार केन्द्र ही रहा है. पं. मदनमोहन मालवीय जी के अनुसार हिंदू शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है. वह शब्द धर्म से न जुड़ा होकर जीवन जीने की एक विशिष्ट शैली से संबंधित है. उसमें दया, सहिष्णुता, सर्वधर्म समभाव, एकता तथा भाई चारे की भावना के दर्शन होते हैं. यदि ऐसा नहीं होता तो वे क्यों मुस्लिम रियासतों से सहयोग लेते ? वे क्यों एक अंग्रेज वाइसराय से विश्वविद्यालय की नींव रखवाते ?

लगभग 3000 वर्ष पुराने इस नगर में शिक्षा का यह केन्द्र आज लगभग 1300 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है. यहां ज्योतिष, कला, विज्ञान के साथ-साथ अन्य अत्याधुनिक विषयों के अध्यापन की सुविधा है. इसका अपना स्वयं का विशाल खेल मैदान, ऑडीटोरियम, हवाई पट्टी, कला म्यूजियम है. दुनियाभर की प्रायः सभी महत्वपूर्ण भाषाओं, कला, संस्कृति के साथ-साथ कंम्प्यूटर जैसे बहुउपयोगी विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती है. यह विश्वविद्यालय एक छोटे-मोटे नगर के समान दिखाई देता है.

आज मालवीयजी का यह शिक्षा मंदिर विश्व में महत्वपूर्ण स्थान रखता है. जब मेरे जैसा साधारण पाषाण उनके इस महान स्वप्न को नहीं भूला तो फिर आप क्यों भूल रहे हैं ?

◆◆◆

BMS
graphics

Choose from a variety of
Birthday - Mundan - Janoi - Anniversary
Indian & western

Wedding Invitations
Choose your own language

शादी, मुंडन,सालगिरह, जनेऊ कोई भी हो शुभ संस्कार।
हर प्रकार के निमंत्रण के लिए हमारी सेवायें हैं सदा तैय्यार।।

21 Bradstone Square, Scarborough, (Toronto) Ontario M1B 1W1
Tel: 416.803.7949 416.292.7959 Fax: 416.292.7969
E-mail: bmsgraphics@rogers.com

श्रद्धा सुमन

महिमा मनोहर मदनमोहन
मोहिनी मोहित करे।
भव अखिल विभव आभावहर
प्रतिभाव में अनुभव भरे।।

स्फिलत अमित गौरववलित
अति ललित चरित सुअन जने।
बुध जन विबुध जन वंद्य
हिन्दू विश्वविद्यालय बने।।

- अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

भारत को अभिमान तुम्हारा,
तुम भारत के अभिमानी,
पूज्य पुरोहित थे हम सबके,
रहे सदैव समाधानी।
तुम्हें कुशल याचक कहते हैं,
किन्तु कौन तुमसा दानी,
अक्षय शिक्षा सत्र तुम्हारा हे ब्राह्मण-ब्रह्मज्ञानी।
स्वयं मदन-मोहन की
तुममें तन्मयता है समा गयी,
कल्याणी वाणी जन-जन के
हित में धूनी रमा गयी।

- मैथिली शरण गुप्त

महामना मदन मोहन मालवीय के प्रति दोहांजलि :

संजीव 'सलिल'

म - महक रहा यश-कीर्ति से, जिनकी भारत देश.
हा - हाड़-मांस के मनुज थे, हम से किन्तु विशेष..

म - मन-मन्दिर निर्मल बना, सरस्वती का वास.
ना - नाना कष्ट सहे किये, भागीरथी प्रयास..

म - मद न उन्हें किंचित हुआ, 'मदन' रहा बन दास.
द - दमन न उनकी नीति थी, संयत दीप उजास..

न - नमन करे जन-गण उन्हें, रख श्रृद्धा-विश्वास.
मो - मोह नहीं किंचित किया, 'मोहन' धवल हुलास..

ह - हरदम सेवा राष्ट्र की, था जीवन का ध्येय.
न - नहीं उन्हें यह चाह थी, मिले तनिक भी श्रेय..

मा - माल तिजोरी में सड़े, सेठों की है व्यर्थ.
ल - लगन लगी धन धनपति, दें जो धनी-समर्थ..

वी - वीर जूझ बाधाओं से, लेकर रोगी देह.
य - यज्ञ हेतु खुद चल पड़ा, तनिक न था संदेह..

अ - अनजानों का जीत मन, पूर्ण किया संकल्प.
म - मन ही मन सोचा नहीं, बेहतर कोई विकल्प..

र - रमा न रहना चाहिए, निज हित में इंसान.
हैं - हैं जिसमें शिक्षा वही, इंसां है भगवान..

विश्वनाथ के धाम में, दिया बुद्ध ने ज्ञान.
लिया न इस युग में उसे, हमने आया ध्यान..

शिक्षा पा मानव बने, श्रेष्ठ राष्ट्र-सन्तान.
दीनबन्धु हो हर युवा, सद्भावों की खान..

संस्कार ले सनातन, आदम हो इंसान.
पराधीनता से लड़े, तरुणाई गुणवान..

नरम नीति के पक्षधर, थे अरि-हीन विदेह.
संत सदृश वे विरागी, नहीं तनिक संदेह..

आता उन सा युग पुरुष, कल्प-कल्प के बाद.
सत्य सनातन मूल्य-हित, जो करता संवाद..

उनकी पावन प्रेरणा, हो जीवन-पाथेय.
हिन्दी जग-वाणी बने, रहे न सच अज्ञेय..

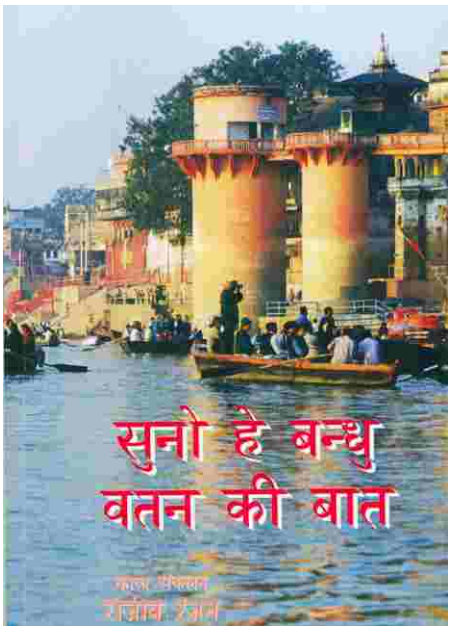

पुस्तकें मिलीं

सुनो हे बन्धु
वतन की बात

अल्बर्टा हिंदी परिषद,
एडमंटन द्वारा प्रकाशित
104, 3907-18, स्ट्रीट,
एडमंटन, अल्बर्टा, कनाडा
मुद्रक : बजट प्रिंटिंग, एडमंटन,
अल्बर्टा 15615-116 एवेन्यू,
एडमंटन, अल्बर्टा
मूल्य: 10 डालर

चित्रकाव्य-कार्यशाला

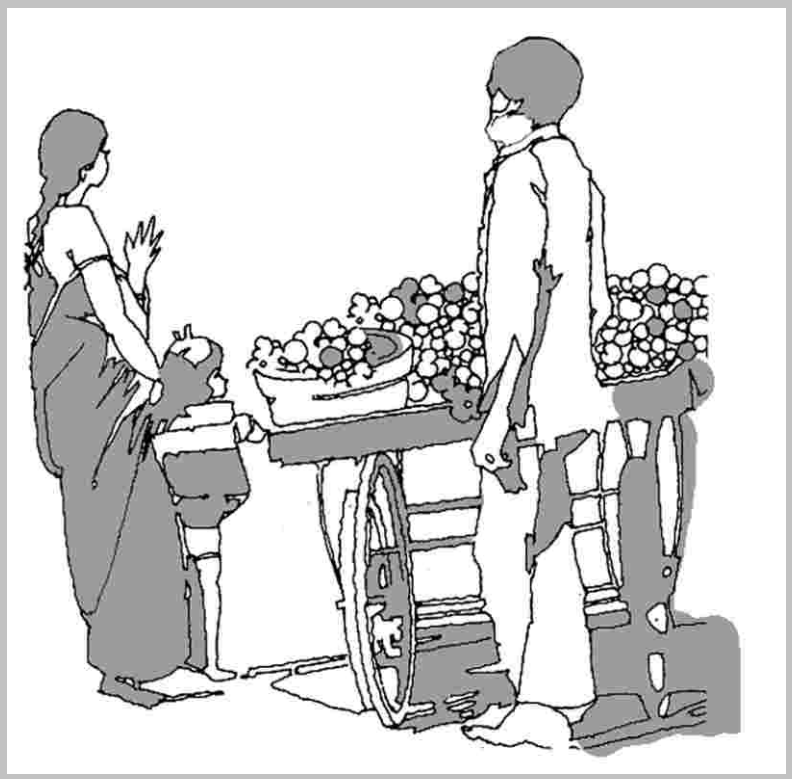

अगले अंक की सूचना के साथ

कहीं परिवार का, तो कहीं समाज का,
'बोझ' कहलाना, धर्म बन गया है मेरा,
कहीं विधवा, तो कहीं बाँझ बनकर,
'बोझ' उठाना, भाग्य बन गया है मेरा,
यह 'बोझ', बोझ नहीं है मेरे लिए,
'बोझ' तो, एक अंश बन गया है मेरा.

■ *डॉ. ग़ुलाम मुर्तजा शरीफ, अमेरिका*

चुन चुन के दिन पर दिन बीत गये सखी री
मेरे साजन ना, घर आये
पीर परबत-सी खड़ी डगरिया, कैसे जाऊं पार री
जीवन बोझ उठाये चलूँ,
संग जियरा में उतर गयी, तीखी कटार री सखी
मोरे साजन ना आये इस पार...

■ *लावण्या शाह, यू.एस.ए.*

बोझ है कन्धों पर मंजिल है दूर,
चलते रहना है सखी,जाना है दूर,
ढलता सूरज राह धुंधलाता जाए,
भूखे बच्चों का ख़याल,
दूरी मिटाता जाए.

■ *डॉ. ओम ढींगरा, यू.एस.ए*

दो औरतें चली आ रही
पीठ पे लादे हुए हैं घास
थकी-थकी सी सोच में डूबी
चेहरे हैं कितने उदास
दिन भर खेत में खोदी घास
शाम हुई तो चल दी घर
घर से खेत, खेत से घर
रोज़ ही चलती इसी डगर
जिस दिन टांगें थक जायेंगी
झुक जायेगी इनकी कमर
पायेंगी अवकाश तभी
भले हो जाए कितनी उम्र
अब मुश्किल से मिलती रोटी
काम न होगा तब क्या होगा
हे! ईश्वर तू सबका दाता
हम पर रखना अपनी मेहर
हर मजदूर की यही कहानी
लाख करे कोई अगर-मगर.

■ *सुरेन्द्र पाठक, कैनेडा*

Ashok Malik

Sales Representative

REALTOR® MLS MULTIPLE LISTING SERVICE®

NetPlus Realty Sales Inc., *Brokerage*

Independently Canadian Owned & Operated

Office: (416) 287-6888 Direct No: (647) 483-7075

5524A Lawrence Ave. E, Toronto, Ontario M1C 3B2

ashokmalik@rogers.com

Ask us about New Homes and Investment Properties.

THINKING OF SELLING OR BUYING?
FREE MARKET EVALUATION

FULL MLS SERVICE & FULL MARKETING = SOLD!

We Offer:

- No up-front fees
- We advertise your home for free
- We provide attractive yard sign
- Agents show your home by appointments to prospective buyers.
- We negotiate the purchace agreement
- We pre-qualify all buyers
- We help arrange financing and oversee the inspections
- We handle all the paperwork and supervise the closing

Whats's Your Home Worth?
Contact us for a free, no hassle
Market Evaluation of your home

"Bottom Line: "We provide Professional Full Services With local experience & knowledge."

not intended to solicit properties already listed for sale

ऐसे थे पंडितजी

■ *सीताराम चतुर्वेदी, भारत*

मुझे निरंतर 24 वर्ष तक महामना मालवीय जी का सानिध्य और उनकी नि:सीम कृपा प्राप्त करते रहने का सौभाग्य मिला है. यदपि मुझे महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम और कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर के शान्ति निकेतन में रहने का मधुर सुयोग प्राप्त नहीं हुआ, किन्तु महामना मालवीय जी के अत्यंत निष्कपट, निश्क्लशु और अछिद्र औदार्यपूर्ण जीवन से मैं सबसे अधिक प्रभावित हुआ. और क्यों ?

सन 1935 में जब मैं महामना मालवीय जी का जीवन चरित्र लिख रहा था. उन दिनों सौभाग्य से मालवीय जी महाराज के अनुज श्री श्याम सुंदर जी और उनकी बड़ी बहन यशोदा देवी जीवित थीं, जिनसे मालवीय जी के बाल जीवन और तरुण जीवन की बहुत सी घटनाएँ ज्ञात हो पाईं हैं. बहुत सी घटनाएँ स्वयं मालवीय जी ने बताईं. बहुत सी उनके मित्रों ने बताईं और बहुतों का मैं स्वयं साक्षी रहा. इनमें से कुछ घटनाएँ ऐसी भी थीं, जिन्हें मालवीय जी ने छापने की अनुमति नहीं दी थी. उनमें से एक-दो घटनाएँ अब प्रकट करने में कोई दोष नहीं है.

विश्वविद्यालय स्थापना का संकल्प

काशी विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए सारे भारत में आन्दोलन व्याप्त हो गया था, किन्तु मालवीय जी का संस्कार तो यह था कि दैवी सहायता के बिना यह सम्भव नहीं है, इसलिए उन्होंने त्रिवेणी तट पर बड़े हनुमान जी के मन्दिर में एक लाख गायत्री मन्त्र का पाठ किया. जब उनके पिता जी ने कहा कि वकालत के साथ हिन्दू विश्वविद्यालय का काम नहीं चल सकता तो उन्होंने तत्काल अपनी चमकती वकालत को लात मार दी. विश्वविद्यालय के लिए सबसे पहला 51 रुपये का दान उनके पिता जी ने ही दिया.

नगवा की भूमि में जब आर्ट्स कॉलेज का भवन बना तो उसके सभाभवन की छत में बड़ा विशाल सरस्वती का रंगीन चित्र बनवाया गया. चित्र बन जाने पर मूर्ति के अंग-प्रत्यंग बहुत बड़े होने के कारण बड़े अभद्र लगने लगे. यह देखकर यह चित्र मिटवा दिया गया जिसके बनवाने में लगभग साठ हज़ार रुपये लगे थे. उन दिनों हिंदी विश्वविद्यालय समिति की अध्यक्ष डॉ. एनीबेसेंट थीं. काशी के ही एक विशिष्ट नागरिक ने इस बात पर मालवीय जी पर अविश्वास का प्रस्ताव उपस्थित कर दिया. प्रस्ताव किये जाते ही डॉ. एनीबेसेंट ने अत्यंत मार्मिक शब्दों में कहा - भारत के जिस सपूत ने विश्वविद्यालय के लिए एक करोड़, बत्तीस लाख रुपये एकत्रित किये हैं और जिसकी निष्ठा तथा जिसके प्रयास पर हमें गर्व होना चाहिए, उस पर हम अविश्वास का प्रस्ताव लावें, इससे बड़ी कृतघ्नता और क्या हो सकती है. अत: अंत में अविश्वास प्रस्ताव की अनुज्ञा न देते हुए विश्वास का प्रस्ताव प्रस्तुत करती हूँ और यह विश्वास का प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ.

निर्धन, कमजोर छात्रों के हितैषी

जिन दिनों पंडित लज्जाशंकर झा काशी विश्वविद्यालय के ट्रेनिंग कॉलेज के प्राचार्य थे उन दिनों वे प्रथम श्रेणी के छात्रों को ही भर्ती करते थे. संयोग से श्री जुगल किशोर बिडला ने एक तृतीय श्रेणी के स्नातक को मनोनीत कर भेजा. झा जी ने उसे भर्ती नहीं किया. इस पर मालवीय जी ने उनसे कहा कि जब हम तृतीय श्रेणी में किसी छात्र को पास घोषित करते हैं तब हम उन्हें भर्ती होने से कैसे वंचित कर सकते हैं. और कभी-कभी प्रथम श्रेणी की अपेक्षा तृतीय श्रेणी के स्नातक अच्छे स्नातक सिद्ध हो सकते हैं. वह छात्र भर्ती कर लिया गया.

मुरादाबाद का एक सम्पन्न घराने का छात्र घर से प्राप्त धन का दुरुपयोग करता रहा. उसने कभी शुल्क नहीं दिया. जब परीक्षा में बैठने से उसे रोक लिया गया तब वह मालवीय जी की शरण में पहुंचा और कहा कि मैं गरीब हूँ, शुल्क नहीं दे सकता. उस छात्र के जानने वाले एक

अध्यापक ने मालवीय जी से कहा कि यह छात्र निर्धन नहीं है. इस पर मालवीय जी ने कहा - यह निर्धन भले ही न हो किन्तु यह शुल्क नहीं दे सकता. इसके माता-पिता ने इसे हमारे विश्वास पर यहाँ भेजा है. हमारा धर्म था कि हम इसकी गतिविधियों पर शुरू से ही ध्यान रखते और शुल्क देने के लिए प्रेरित करते, किन्तु हमने यह सब नहीं किया. नैतिक दृष्टि से अब हम इसे परीक्षा से वंचित नहीं कर सकते, हम इसके पिता को कौन सा मुंह दिखाएँगे. मालवीय जी ने उसे शुल्क से मुक्त कर दिया और उसे परीक्षा में बैठने की अनुमति दी.

सम्बन्धी की नियुक्ति नहीं

मालवीय जी ने अपने जीवनकाल में अपने किसी सम्बन्धी को नौकरी नहीं दी. एक बार पंडित रमा कान्त जी के एक अत्यंत सुयोग्य सम्बन्धी का चयन विश्वविद्यालय के एक सम्मानित पद पर हो गया. उस समय सर राधाकृष्णन कुलपति थे. मालवीय जी ने तत्काल पत्र लिखकर उस नियुक्ति का विरोध किया कि मेरे सम्बन्धी की नियुक्ति यहाँ नहीं हो सकती. सर राधाकृष्णन ने आकर पूछा कि आपका सम्बन्धी होना पाप है? इस पर बड़ी दृढ़ता से मालवीय जी ने कहा - हाँ, हिन्दू विश्वविद्यालय में नौकरी पाने के लिए मेरे सम्बन्धी होना अवश्य पाप है. आज जिस युग में लोग अपनी स्थापित की हुई संस्थाओं में केवल अपने सम्बन्धी लोगों को भरने की ताक में रहते हैं, वे क्या मालवीय जी से कोई शिक्षा नहीं ले सकते?

महामना मालवीय जी से बहुत लोगों ने कहा कि आप प्रयाग के होकर काशी में क्यों विश्वविद्यालय स्थापित करना चाहते हैं. इस पर उन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया था कि काशी विद्या का केंद्र है, वहीं विश्वविद्यालय स्थापित होना चाहिए.

इन्होंने क्या कहा...

मैं विश्वविद्यालय का छात्र रहा और मैंने मालवीय जी के सानिध्य में रहकर विद्याध्ययन किया. उनका मेरे प्रति अनन्य स्नेह रहा और मैंने वहीं प्राचीन भारतीय वांगमय का अध्ययन, अनुशीलन किया, जिसकी मेरे जीवन पर गहरी छाप पड़ी. यहीं से मैंने सामाजिक समता के लिए और आगे चलकर राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने का संकल्प लिया.

- जगजीवन राम

मालवीय जी का कार्य क्षेत्र केवल राजनीति ही नहीं था. समाज सेवा, शिक्षा, हिंदी प्रचार और प्रसार के क्षेत्रों में भी उनकी योग्यता असाधारण रूप से महत्वपूर्ण है. उनका व्यक्तित्व, जीवन चरित्र और सरलता हमारे लिए सदा प्रेरणादायी रही.

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

विनम्रता, शुचिता, राष्ट्रप्रेम तथा भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट निष्ठा के जिस महान आदर्श के प्रति महामना मालवीय जी का जीवन समर्पित था, उस आदर्श को हमें जीवन में आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए.

- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

राजनीति और शिक्षा दोनों क्षेत्रों में मालवीय जी ने युग परिवर्तन और युग प्रवर्तक का काम किया है. वे आदर्श मनुष्य थे और विद्यार्थियों तथा युवकों को एक आदर्श युवक बनाना चाहते थे, जिनमें विद्योपार्जन तथा बलोपार्जन के साथ वीरता, नैतिकता, त्याग, आत्मनियन्त्रण और धर्म की भावना हो.

- राजर्षि पुरुषोतम टंडन

ब्राह्मण शब्द में ऋषियों ने जितनी कल्पना भरी है उन सबकी अजीब अभिव्यक्ति मालवीय जी में व्यक्त हुई थी. उनकी जिह्वा पर सरस्वती का निवास था, हृदय में प्राणिमात्र की कल्याण-कल्पना के रूप में वह अद्वैत भक्ति और भावना विराजती थी जो मनुष्य को जीवन-मुक्ति प्रदान करती है. उनमें ज्ञान था, कर्म था, आदर्श के प्रति भक्ति और आत्मा के बल में विश्वास था. भावनाओं की उस त्रिवेणी में अवगाहन करके पूत हुआ उनका जीवन राष्ट्र को सदा अनुप्रणित करता रहा.

- कमलापति त्रिपाठी

कुछ कविताएँ

यश सुरभि

क्या बताएं आपसे क्या है बयाने मालवी?
हर तरफ फैली हुई है दास्ताने मालवी।।
ज़र्रा-ज़र्रा उस ज़मीने पाक का है अब गवाह।
देख लो काशी में तुम जाकर निशाने मालवी।।
चलने वाले जानते हैं यह कि क्या है मालवी।
मंजिलें-उल्फत का सच्चा रहनुमा है मालवी।।
मौजे ग़म में डूब सकती ही नहीं कश्ती-ए-कौम।
क्या खुदा की शान है अब नाखुदा है मालवी।।
चाहते हैं आप अगर दुनिया की दौलत हो जमा।
शर्त यह है बस कि हिल जाए जुबाने मालवी।।
क्यों न माथे में लगाऊं इसको बिस्मिल बार-बार?
कीमिया है मुझको खाके आस्ताने मालवी।।

- बिस्मिल इलाहाबादी

जी होता है मातृभूमि का, तुम्हें अचल अनुराग कहूँ।
जी होता है परम तपस्वी, का मैं तुमको त्याग कहूँ।।
जी होता है प्राण फूंकने, वाली, तुमको आग कहूँ।
इस अभागिनी भारत जननी, का तुमको सौभाग्य कहूँ।।
मिले तुम्हारी भक्ति देश को, यह जननी जयगान करे।
मिले तुम्हारी शक्ति देश को, वह नित नव उत्थान करे।।
मिले तुम्हारी आग देश को, आज़ादी आह्वान करे।
मिले तुम्हारा त्याग देश को, तन मन धन बलिदान करे।।

- सोहनलाल द्विवेदी

हुआ युगधर्म का बन्दा,
फिरा दर-दर किया चंदा।
खड़ा ही कर दिया उसने,
पुनः भारत का नालंदा।।
हमारे विश्वकर्मा की,
हमारे मालवी की जय।
हमारा विश्वविद्यालय,
हमारा विश्वविद्यालय।।

- शिव मंगल सिंह 'सुमन'

रोचक प्रसंग...

■ *श्रीकान्त कुलश्रेष्ठ*

एक दहेज ऐसा भी

एक बार महामना मदन मोहन मालवीय जी के पास एक धनी सेठ आए. वे अपनी बच्ची के विवाह के लिए निमंत्रण-पत्र देने आए थे. मालवीय जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण में ऐसे जुटे थे कि उनके सम्मुख कोई भी संपन्न व्यक्ति आता तो वे उससे धन प्राप्त करने की युक्ति निकालने लग जाते. यहाँ भी ऐसा ही हुआ.

संयोग से जिस लड़के के साथ लड़की का विवाह होना था, वह उसका शिष्य था. उन्होंने सेठ जी से कहना प्रारंभ किया, प्रभु की आप पर कृपा है. सुना है कि आप इस विवाह पर लाखों रुपये व्यय करने वाले हैं. वह धन प्रदर्शन में व्यर्थ ही चला जायेगा. क्या ही अच्छा हो कि वह राशि आप हमें ही दहेज में दे दें ताकि इससे हिंदी विश्वविद्यालय के निर्माण का शेष कार्य पूरा हो सके. लड़के का गुरू होने के नाते मैं यह दक्षिणा लोक-मंगल कार्य के लिए आप से माँग रहा हूँ.

मालवीय जी के इस कथन का उन सेठ पर ऐसा प्रभाव हुआ कि उन्होंने विवाह में व्यर्थ व्यय करने का अपना विचार बदल दिया. उन्होंने न केवल आदर्श विवाह किया अपितु अनेक भवन विश्वविद्यालय में बनवा दिए. लोगों ने भी कहा दहेज हो तो ऐसा हो.

परीक्षा

एक बार मालवीय जी मुंबई में प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रामेश्वरदास बिरला के भवन में ठहरे थे. रात को पं. रामपति मिश्र उनसे मिलने को आए. दोनों के बीच क्रोध पर काफी देर चर्चा हुई.

पं. रामपति मिश्र ने कहा कि उन्होंने अपने क्रोध पर विजय प्राप्त कर ली है. अब उन्हें क्रोद्ध नहीं आता. फिर बोले -मालवीय जी मुझे सौ गलियाँ देकर देखिये, मुझे तनिक भी क्रोध नहीं आएगा.

पंडित जी यह मुझसे न हो सकेगा. आपकी सहनशीलता की परीक्षा तो सौ गलियाँ देने के बाद होगी. पर मेरा मुंह तो मात्र एक ही गाली देने पर गन्दा हो जायेगा. मालवीय जी ने हँसकर उत्तर दिया.

समाधान

एक बार मालवीय जी से हिन्दू विश्वविद्यालय के कुछ छात्र स्नानगृह की संख्या बढ़ाये जाने की माँग लेकर आए. मालवीय जी ने धैर्य तथा शांति से उनकी बात सुनी और फिर बोले मैं अभी भ्रमण हेतु जा रहा हूँ, आप भी मेरे साथ चलिए. रास्ते में आप की समस्या पर चर्चा होती रहेगी. विद्यार्थी मालवीय जी के साथ चल पड़े. भ्रमण करते हुए सब लोग गंगा किनारे पहुँचे. मालवीय जी ने अपनी पगड़ी, अँगरखा और जूते उतारे. फिर गंगा मैया की जय का उद्घोष करते हुए गंगा में प्रवेश किया. गंगा स्त्रोत्र का उच्चारण करते हुए उन्होंने छात्रों को भी संकेत से बुलाया. छात्र भी जल में प्रविष्ट हुए. स्नान करने के पश्चात् छात्र बाहर आए तो मालवीय जी ने मुस्करा कर कहा इससे उत्तम प्राकृतिक स्नानगृह आप को कहाँ मिलेगा.

दूसरे दिन से छात्रों के झुण्ड गंगा-स्नान के लिए प्रतिदिन वहाँ आने लगे. छात्रों की समस्या का समाधान हो गया था.

◆◆◆

मालवीय जी के जीवन की कुछ झलकियाँ

प्रस्तुति : हरे कृष्ण मालवीय

1861 दिसम्बर 25 , पौष कृष्ण 8 बुधवार सम्वत 1918 वि. प्रयाग में जन्म.

1869 यज्ञोपवीत संस्कार

1977 मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण

1878 कुंदन देवी के साथ विवाह

1880 प्रयाग में हिन्दू समाज की स्थापना

1881 एफ.ए. की परीक्षा म्योर सेंट्रल कालेज, प्रयाग से उत्तीर्ण, स्वदेशी तिजारत कम्पनी प्रयाग में खोली, स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग व्रत.

1884 बी.ए. परीक्षा कलकत्ता से उत्तीर्ण.

1885 राजकीय हाईस्कूल में अध्यापक नियुक्त.

1886 25 वर्ष की आयु में पहली बार कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में सम्मिलित और ऐतिहासिक भाषण दिया.

1887 हिंदी दैनिक 'हिन्दोस्तान' का संपादन किया.

1889 भारती भवन पुस्तकालय, प्रयाग की स्थापना में सहयोग, इंडियन यूनियन के सम्पादक.

1891 एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण.

1893 इलाहबाद हाई कोर्ट में वकालत प्रारम्भ की.

1898 संयुक्त प्रांत (उ.प्र.) के ले. गवर्नर को हिंदी में ज्ञापन.

1900 प्रदेश के अधीनस्थ न्यायालयों में हिंदी का प्रयोग आरम्भ कराने की राजाज्ञा जारी कराई.

1901 इलाहाबाद नगर पालिका में वाईस चेयरमैन चुने गये, तीन वर्ष तक इस पद पर रहे तथा प्रयाग हिन्दू बोर्डिंग हॉउस की स्थापना की.

1902 प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा के सदस्य.

1903-12 प्रांतीय कौंसिल के सदस्य.

1906 कुम्भ के अवसर पर प्रयाग में सनातन धर्म सभा का अधिवेशन तथा काशी में भारतीय विश्वविद्यालय खोलने का निश्चय.

इंडियन नेशनल कांग्रेस के सभापति चुने गये.

1907 प्रयाग में दैनिक समाचार पत्र 'अभ्युदय' का सम्पादन.

1908 लखनऊ में प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन के सभापति हुए.

1909 इंडियन नेशनल कांग्रेस के सभापति चुने गये. प्रांतीय कौंसिल से बड़ी कौंसिल केन्द्रीय कौंसिल में चुने गय.

केन्द्रीय कौंसिल में प्रेस एक्ट का विरोध. डोमीनियन स्टेटस की मांग कांग्रेस में प्रथम बार उठाई. प्रयाग में विजयदशमी के दिन 'लीडर' अखबार प्रारंभ.

1910 प्रयाग से 'मर्यादा' पत्रिका को प्रकाशित किया. प्रथम हिंदी साहित्य सम्मेलन काशी के सभापति.

1910-20 भारतीय कौंसिल के सदस्य तथा योगदान.

1911 मिन्टोपार्क की स्थापना, पचास वर्ष की आयु में वकालत का त्याग.

1914 प्रयाग में सेवा समिति की स्थापना की तथा सभापति मनोनीत, हरिद्वार में गंगा की अविछिन्न धारा के लिए आन्दोलन.

1916 फरवरी 4, लार्ड हार्डिंग द्वारा काशी हिन्द विश्वविद्यालय का शिलान्यास.

1918 रौलट-बिल का जोरदार विरोध किया. अखिल भारतीय सेवा समिति ब्वाय्स स्काउट एसोसियेशन की स्थापना की, मालवीय जी चीफ स्काउट बने. इंडियन नेशनल कांग्रेस दिल्ली के सभापति चुने गये.

1919 इंडेम्निटी बिल के विरोध में कौंसिल में पांच घंटे भाषण दिया. काशी विश्वविद्यालय के वाईस चांसलर हुए. हिंदी साहित्य सम्मेलन के बम्बई अधिवेशन की अध्यक्षता की.

1920 केन्द्रीय कौंसिल से इस्तीफा.

1924 प्रांतीय सनातन धर्म सभा, रावलपिंडी के सभापति हुए. मालवीय जी और श्री मोहम्मद अली जिन्ना द्वारा इन्डिपेंडेंट पार्टी का गठन.

हिन्दुस्तान टाइम्स, दिल्ली का प्रबंध अपने हाथ में लिया. प्रयाग कुम्भ स्नान रोक पर विरोध, त्रिवेणी में कुम्भ स्नान आन्दोलन का सफल संचालन.

1925 अमृतसर में सिखों के सहयोग से दुर्ग्याणा मन्दिर सरोवर की स्थापना.

1926 लाला लाजपत राय के साथ नेशनलिस्ट पार्टी कायम की.

1927 काशी में अंत्यजों को मन्त्र दीक्षा, दशाश्वमेघ घाट पर.

1928 कलकत्ता में अंत्यजों को मन्त्र दीक्षा, विद्वानों से शास्त्रार्थ.

1930 असेम्बली से इस्तीफा.

1931 अगस्त 19, गोलमेज़ परिषद में भाग लेने के लिए विलायत गये.

1932 इंडियन नेशनल कांग्रेस के सभापति. हिन्दू विश्वविद्यालय से सनातन धर्म नमक साप्ताहिक पत्र निकला. अखिल भारतीय स्वदेशी संघ की स्थापना की और गिरफ्तारी दी.

1933 इलाहबाद में यूनिटी कांफ्रेंस की बैठक कराई. इंडियन नेशनल कांग्रेस के सभापति चुने गये.

1934 काशी में हरिजनोद्धार पर भाषण दिया.

1935 कांग्रेस के पचासवें वर्ष में स्मृति शिलालेख का मुम्बई में उदघाटन.

1936 सनातन धर्म महासभा के अधिवेशन में अन्त्यजोद्धार पर प्रस्ताव.

1938 कायाकल्प.

1939 काशी विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर पद से इस्तीफा दिया.

1939-46 हिन्दू काशी विश्व विद्यालय के रेक्टर रहे.

1940 पूर्ण स्वराज्य के लिए काशी में हरिहरात्मक महारुद्र यज्ञ.

1942 'अपने देश में अपना राज' का नारा देश को दिया.

1946 12 नवम्बर को देहावसान.

1961 25 दिसम्बर को देशभर में जन्मशती समारोह.

प्रस्तुतकर्ता : अवकाश प्राप्त
जिला विद्यालय निरीक्षक

उद्धृत पुस्तकें

1. महामना मदनमोहन मालवीय - जीवन और नेतृत्व, लाल, मुकुटबिहारी, पृष्ठ 690, मालवीय अध्ययन संस्थान, मालवीय भवन, का हि.वि.वि. (1978).

2 History of th Benaras Hindu University , Dar, S.L. and Somaskandan, S. Publcation Cell. B.H.U., (2007)

3. Mahatma Madn Mohn Malavyia, An Historical Biography, P.1162 (11 Volume), Permanand, B.H.U. (1985)

4. महामना मदन मोहन मालवीय की जीवनी, तिवारी वेंकटेश नारायण, पृष्ठ 238, का हि.वि.वि. (1965)

5. मदन मोहन मालवीय, मिश्र जगन्नाथ प्रसाद, पृष्ठ 97, जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस शताब्दी समिति, नई दिल्ली, (1987)

6. आधुनिक भाषा के निर्माता : मदनमोहन मालवीय, चतुर्वेदी सीताराम, पृष्ठ 133, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली-11001, चतुर्थ संस्करण, (1985)

7. महामना श्री पंडित मदनमोहन मालवीय के लेख और भाषण (भाग-1- धार्मिक) अग्रवाल, वासुदेव शरण, (1962)

वचनामृत

❖ ❖ ❖

पृथ्वी मंडल पर जो वस्तु मुझको सबसे अधिक प्यारी है, वह धर्म है और वह धर्म सनातन धर्म है.

❖ ❖ ❖

यह शरीर परमात्मा का मन्दिर है. ईश्वर को सदैव अपने भीतर अनुभव और इस मन्दिर को कभी अपवित्र न होने दो.

❖ ❖ ❖

इस पवित्र मन्दिर का रक्षक ब्रह्मचर्य है. ब्रह्मचर्य ही हमें वह आत्मबल देता है जिसके द्वारा हम संसार को जीत सकते हैं.

❖ ❖ ❖

डायरी लिखने से मनुष्य को उन्नति में बहुत सहायता मिलती है. डायरी में अपना हृदय खोलकर रख दो.

❖ ❖ ❖

सभी कार्यों में शीलवान बनो. शील ही से मनुष्य, मनुष्य बनता है. शीलमं परमं भूषण - शील ही पुरुष का सबसे उत्तम भूषण है.

❖ ❖ ❖

पढ़ते समय सारी दुनिया को एक ओर रख दो और पुस्तकों में, लेखक की विचारधारा में डूब जाओ. यही तुम्हारी समाधि है, यही तुम्हारी उपासना है और तुम्हारी पूजा है.

❖ ❖ ❖

हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना विद्यार्थी के भीतर शारीरिक बल के साथ धर्म की ज्योति और ज्ञान का बल भरने के लिए हुई है, इसे सदैव याद रखो.

❖ ❖ ❖

हिंदी भाषा को यदि मैं आपके सामने यह कह दूँ कि यही सब बहनों में माँ की अच्छी पहली पुत्री है, अपने माता-पिता की होनहार मूर्ति है, तो अतियुक्ति नहीं होगी.

❖ ❖ ❖

जब हिंदी का सब बहनों से सम्बन्ध है और ऐसी जब यह बड़ी बहन है, तब सबको मानकर यदि प्रांत-प्रांत की भाषाओं का सेवन किया जाय तो बहुत ही उपकार होगा.

❖ ❖ ❖

जहाँ तक हो हिंदी में हिन्दी ही रखी जाय.

❖ ❖ ❖

बिजली की रोशनी से रात्रि का कुछ अंधकार दूर हो सकता है, किन्तु सूर्य का काम बिजली नहीं कर सकती. इसी भांति हम विदेशी भाषा के द्वारा सूर्य का प्रकाश नहीं कर सकते. साहित्य और देश की उन्नति अपने देश की भाषा द्वारा ही हो सकती है.

❖ ❖ ❖

आपका भारतवर्ष धर्मप्रधान देश है. इसके चारों कोनों पर चार धाम हैं. अब आप ही सोचिये की धार्मिक सम्बन्ध से सारे भारतवर्ष में कौन-सी भाषा से काम चल सकता है. मेरी समझ में इसके लिए हिंदी का ज्ञान बहुत आवश्यक है.

❖ ❖ ❖

हमारे देश के भाइयों के मरने-जीने का न्याय हो, पर हो वह दूसरी भाषा में, यह कैसे आश्चर्य की बात है ? वास्तव में न्याय उस भाषा में होना चाहिए जिसका एक-एक शब्द उसकी समझ में आता हो, जिसके लिए न्याय हो रहा है.

❖ ❖ ❖

देवनागरी अक्षर संसार के सब अक्षरों से अधिक सरल और स्पष्ट हैं.

❖ ❖ ❖

आप उन्हीं को खरीदिये जिनके खरीदने से अपने गरीब भाइयों को कुछ पैसा मिले.

❖ ❖ ❖

आज भारत सन्तान 'वार आफ रोज़ेज़' पढ़ते है, अपने गौरव तथा इतिहास की चिंता नहीं करते.

❖ ❖ ❖

पीपल के वृक्ष की तरह हिन्दू सभ्यता की जड़ बहुत दूर तक फैली है. ऋषियों के तपोबल तथा वायु और जल के आहार पर की गयी उनकी तपस्या ने इसकी रक्षा की और इसी में यह कल्प-लता आज भी हरी है.

❖ ❖ ❖

हम धर्म को चरित्र-निर्माण का सीधा मार्ग और सांसारिक सुख का सच्चा द्वार समझते हैं. हम देशभक्ति को सर्वोतम शक्ति मानते हैं, जो मनुष्य को उच्चकोटि की निस्वार्थ सेवा करने की ओर प्रवर्त करती है.

❖ ❖ ❖

शिक्षा सारे सुधारों की जड़ है.

सबसे बड़ा स्मारक

हम मूर्तियाँ खड़ी करें, संस्थाएं बनाएं यह तो ठीक है, लेकिन आखिर में सबक सीखें उनकी ज़िन्दगी से, उनके काम से और सीखकर उसी रास्ते पर चलें, आजकल के ज़माने में उसको अपनाकर चलें और आगे बढ़ें, तो यही उनका सबसे बड़ा स्मारक हो सकता है.

ईश्वर-भक्ति और देश-भक्ति मालवीय जी के जीवन के दो मूलमंत्र थे. इन दोनों का उत्कृष्ट संश्लेषण, ईश्वर-भक्ति का देश-भक्ति में अवतरण तथा देश-भक्ति की ईश्वर-भक्ति में परिपक्वता उनके व्यक्तित्व के विशिष्ट सदगुण थे. उनकी धारणा थी कि मनुष्य के पशुत्व को ईश्वरत्व में परिणत करना ही धर्म है. मनुष्यत्व का विकास ही ईश्वरत्व और ईश्वर है और निष्काम भाव से प्राणिमात्र की सेवा ही ईश्वर की सच्ची आराधना है. वे सार्वजनिक कार्यों के लिए जीवन भर साधन जुटाते रहे और 'प्रिन्स एमंग बेगर्स' भिक्षुकों में राजकुमार कहलाए. वे महान देश-भक्त, सतित्व जीवन जीने वाले मनीषी, जनसाधारण के सेवक, करुणा, सद्भावना और दया की मूर्ति, विदग्ध और उच्चकोटि के वक्ता, प्राणिमात्र से प्रेम करने वाले, शील के पर्याय, ललित कलाओं के प्रेमी और आहार-विहार में सरलता एवं सात्विकता के प्रतीक थे.

गांधी जी का कहना था कि मालवीय जी के साथ देश-भक्ति में कौन मुकाबला कर सकता है. राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन के विचार में मालवीय जी आदर्श मनुष्य थे जिन्होंने राजनीति और शिक्षा दोनों क्षेत्रों में परिवर्तक, युगप्रवर्तक का काम किया. सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक सर प्रफुल्लचंद्र राय का विचार था कि गाँधी जी के बाद कोई दूसरा ऐसा मनुष्य मिलना कठिन है, जिसने इतना अधिक त्याग किया हो और बहुमुखी कार्यों को एक ऐसा प्रमाण प्रस्तुत किया हो जैसा कि मालवीय जी ने किया.

श्री सी.वाई. चिन्तामणि का विचार है कि मालवीय जी ही एक ऐसे व्यक्ति हैं जो साबरमती के मनीषी (गाँधीजी) को कोष्ठक में रखने योग्य हैं. पण्डित हृदयनाथ कुंजरु का विचार है कि गाँधी जी को छोड़कर उनसे बड़ा भारतीय कोई नहीं हुआ. इसीलिए सारे देश ने उन्हें 'महामना मालवीय' कहकर अपने दिलों में स्थान दिया. महामना की जन्मशताब्दी जयन्ती के अवसर पर प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा - ऐसे मौके पर जब याद करते हैं एक महापुरुष को, तो उनकी जीवनी से हम लाभ उठाएं, सीखें. बहुत कुछ हम सीख सकते हैं एक थाती में. दुनिया का इतिहास क्या है? बहुत बातें हैं दुनिया के इतिहास में, एक थाती में कहा जाय तो दुनिया का इतिहास दुनिया के जो बहुत ऊँचे तबके के लोग हैं, उनकी जीवनियाँ हैं, वही इतिहास है. एक थाती में यह सही बात है और बातें भी हैं, लेकिन असल में शायद सबसे ज़रूरी बात यही है. हमारे सामने तो मालवीय जी के जीवन की कई ऐसी मिसालें हैं, जिनसे हम सीख सकते हैं. उनके सामने जो लक्ष्य था, जैसे उन्होंने काम किया और सफलता पायी, इन सबसे हम सबक ले सकते हैं. हम मूर्तियाँ खड़ी करें, संस्थाएं बनाएं यह तो ठीक है, लेकिन आखिर में सबक सीखें उनकी ज़िन्दगी से, उनके काम से और सीखकर उसी रास्ते पर चलें, आजकल के ज़माने में उसको अपनाकर चलें और आगे बढ़ें, तो यही उनका सबसे बड़ा स्मारक हो सकता है. यह अच्छा है कि जब आज समय आया है उनकी शताब्दी मनाने का, तो पुराने और नये लोग फिर सोचें, विचार करें और सीखें कि वे क्या-क्या बातें थीं, जिससे मालवीय जी इतने ऊँचे महापुरुष हुए, कैसे उन्होंने भारत को आज़ादी के रास्ते में, अपनी संस्कृति का आदर करने के रास्ते में सबको आगे बढ़ाया और यह भी कि उनके बतलाए रास्ते पर चलकर भारत की सेवा हम किस तरह करें और आगे बढ़ें.

सौजन्य : प्रो. सिद्धांत उपाध्याय

विलोम चित्र काव्य शाला

इस चित्र का दृष्य देखिए, है किसी फौजी के घर का,
पति पत्नी दोनों खड़े है, जरा दूर है बैठा लड़का
कर रहे आपस में वादा, एक दूजे का पकड़ के हाथ
नज़रों से नज़रें मिली हुयी है, समझ रहे है दिल के जजवाद,
पति भारत की सेना में, लगा हुआ है कर्नल-मेजर,
कारगील पे दुश्मन ने किया अधिकार, जिसकी इसे है मिली ख़बर

समझौते की बाते कर कर, दुष्मन ने पीठ पर छुरी चलाई
जैसे पशु को बुलाये प्यार से, बध करने को कोई कसाई,
पत्नी और लड़के को छोड़, सरहद पर चला है लड़ने,
मातृभूमी की रक्षा हेतू, तन मन अपना अर्पण करने,

कह रहा है अपनी पत्नी से, आया तो जीत कर आऊंगा,
नही तो सीमा की मिट्टी को, सींच लहूं से मर जाऊंगा,
एक बार जो बढ़े कदम, फिर पीछे ना हठ पायेंगे,
हठ जायेंगे पीछे दुष्मन, या मेरे हाथों कट जायेंगे,
यदि तेरा सिंदूर मिट गया, सूना हो गया तेरा माथा,
अपनी संतान से कहते रहना, मेरी वीर गति की गाथा,
अपने फर्ज को करेगी पूरा, मेरी संतान मेरे बाद,
दुष्मन के हाथों से रखेगी, भारत का कश्मीर आजाद,
कभी ना पनपेंगे धरती पर, जो इन्सान हो धोकेबाज,
ऐसे लोग शांति के दुष्मन, नष्ट करेंगे अपना समाज!
चित्र उलटा कर के देखो, अब लड़ाई का तुम मैदान,
मशीन-गन ले कर खड़े हुए है, भारतीय सेना के तीन जवांन

एक जवान चला जा रहा, और दो जवान पीछे खड़े
क्या कारण जो इस जवान के, ये अब तक पीछे नही बढ़े?
दुष्मन बैठा चोटी के ऊपर, वहां तक पहुचना बडा ही मुश्किल
बर्फीली, नुकीली और ऊंची, फौजी चौकी है कारगिल
जो ''आगे बढो'' कह चल पड़ा, वो जवान है कौन बहादर
ये तो वही मेजर साहब है, जो घर से चला अलबिदा कह कर,
लड़ना फौजी का कर्तव्य, उसको भी है जान से प्यार,
उसके भी है बीबी बच्चे, उनका भी वो करे विचार,
जब देखा बढ रहा है मेजर, तो उनमें भी जागा उत्साह,
दौड़ पड़े फिर उसके पीछे, जान से हो कर बेपर्वाह,
तात्पर्य
मौतसे डर कर न आगे बढे, किसी फौज का जब कमांडर,
हार जाए फौज वो अकसर, भले कितने अच्छे दे वो ऑर्डर!!

एस.एस. राजपूताना के कैप्टेन, महामना को गोलमेज सम्मलेन में जाते समय समुद्र में कुछ दिखलाते हुए

गोलमेज सम्मेलन में जाते हुए महामना व गोविन्दजी

विश्व की दो विभूतियॉ महात्मा एवं महामना

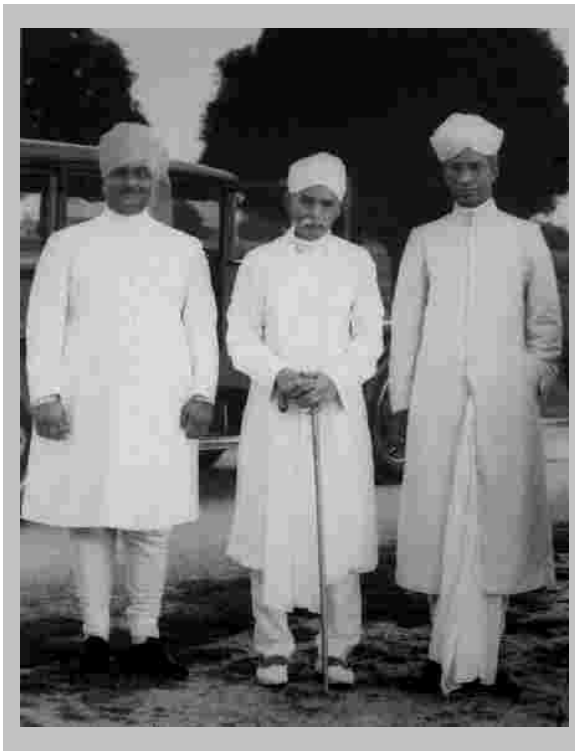

गोलमेज सम्मेलन में जाते हुए महामना व गोविन्दजी

जेल में संध्या करते हुए महामना

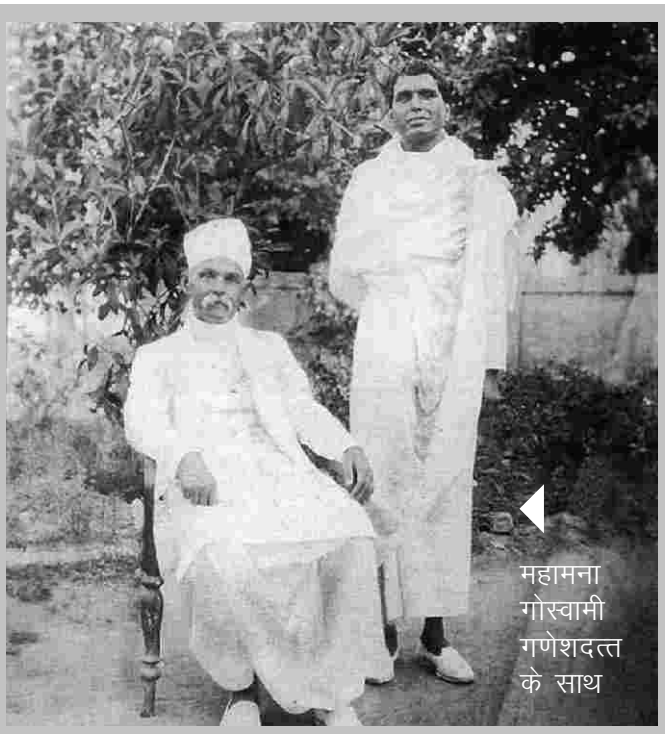

महामना गोस्वामी गणेशदत्त के साथ

1946 में अस्वस्थ महामना से महात्मा गॉधी भेंट करते हुए

महामना के गुरुवर
महामना के गुरु
पं. आदित्य रामभट्टाचार्य

महामना के माता–पिता
पं. ब्रजनाथ व्यास जी
श्रीमती मूनादेवी जी

महामना के राजनीतिक गुरु
पं. अयोध्या नाथ

महामना अपने पुत्रों के साथ बायीं ओर से मुकुन्द, रमाकान्त, पूज्य महामना,
राधाकान्त एवं गोविन्द और नीचे बैठे हैं श्रीधर रमाकान्त जी के पुत्र

8 फरवरी, 1916 को बसंत पंचमी के दिन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शिलान्यास स्थल पर भाषण देते महामना

महामना व बापू

वर्ष 1946 महामना व टंडन जी

BEST WAY CARPET & RUGS INC.

$50.00 Off All wall to wall Carpet with purchase up to 300 sq. ft.
10% Off all Area Rugs

Free delivery under pad Installation

• Residential • Commercial • Industrial • Motels & Restaurants

Free Shop at Home Service Call: (416) 748-6248

• Broadloom • Area Rugs • Runners • Vinyl & Hardwood • Blinds & Venetian Custom Rugs • All kind of Vacuums

Interest Free
6 months No Payment
OAC

7003, Steeles Ave. Unit 8
Etobicoke
ON M9W OA2
Ph: 416-748-6248
Fax: 416-748-6249

1 Select Ave, Unit 1
Scarborough
ON M1V 5J3
Ph: 416-321-6248
Fax: 416-321-0929

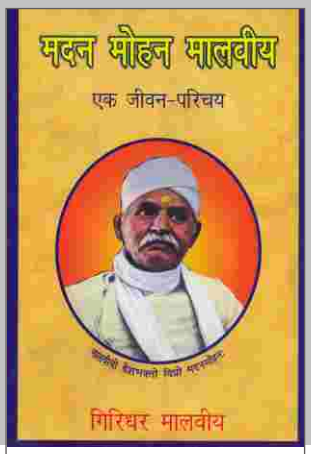

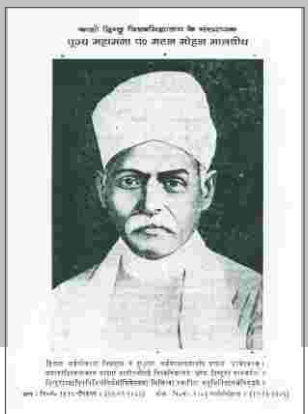

एक जीवन परिचय
गिरिधर मालवीय
संस्कृति एवं शोध
प्रकाशन प्रतिष्ठान
एन 8/190, बृज इनक्लेव
(मधुवन उपवन के सामने)
सुन्दुरपुर, वाराणसी
दिसम्बर, 2007

महामना चिन्तन आलोक
डॉ. विद्युत् वर्मा
प्रकाशक
महामना मालवीय मिशन
विवेक खंड-1 गोमती नगर,
लखनऊ -226010

महामना स्मारिका
मालवीय सभा, प्रयाग
प्रकाशक -
रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल
459 मालवीय नगर,
इलाहबाद - 211003

Pandit
Madan Mohan Malaiya
A Profile
Lok Sabha Secretatriat
New Delhi

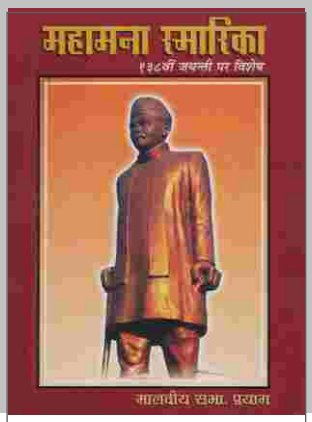

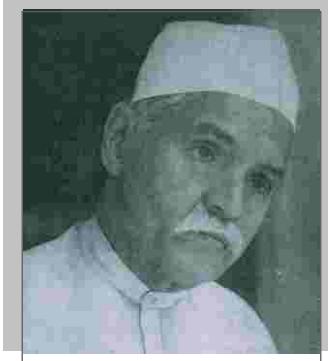

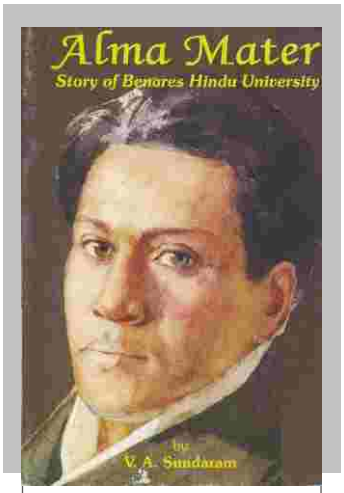

ALMA MATER
Story of Benaras
Hnindu University
by - V.A. Sundram
Printed at :
Haldankar Printers,
Pana Ji , Goa in 1940

यादों के झरोखों से
उषा मालवीय
2004
किताब महल
22-ए सरोजनी नायडू मार्ग
इलाहाबाद 211001

अमन की आशा

■ *डॉ. ग़ुलाम मुर्तजा शरीफ, अमेरिका*

पंडित मदन मोहन मालवीय जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए शब्द छोटे पड़ गए हैं. मेरे विचार में मैं आपके उस पक्ष की ओर प्रकाश डालने का प्रयत्न करूँ जिसकी इस युग को अत्यंत आवश्यकता है.

आजकल चर्चा का विषय 'अमन की आशा' है. पंडित मदन मोहन मालवीय जी हिंदी भाषा के सच्चे सपूत थे. आपने हिंदी भाषा को अंग्रेजों के दौर में स्थान दिलाया. भारत की तत्कालीन राजनीति और अपनी प्राचीन संस्कृति को विशिष्ट दिशा में ढालने में मालवीय जी का बहुत बड़ा हाथ रहा है. मालवीय जी न किसी भाषा के विरोधी थे और न किसी मत अथवा सम्प्रदाय के. उनका कहना था- 'भारतवर्ष केवल हिंदुओं का देश नहीं है. यह तो मुस्लिम, ईसाई और पारसियों का भी देश है. यह देश तभी समुन्नत और शक्तिशाली हो सकता है, जब भारतवर्ष की विभिन्न जातियाँ और यहाँ के विभिन्न संप्रदाय पारस्परिक सद्भावना और एकात्मकता के साथ रहें. जो भी लोग इस एकता को भंग करने का प्रयास करते हैं, वे केवल अपने देश के ही नहीं, वरन् अपनी जाति के भी शत्रु हैं.' कांग्रेस जब चुनाव लड़ रही थी तब पार्टी की सबसे बड़ी सफलता यह थी कि वह उन स्थानों पर भी जीत गई जो मुसलमानों के लिए आरक्षित थे. कुछ निर्दलीय सदस्यों तथा पंडित मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व वाली नेशनल पार्टी ने उन्हें समर्थन दिया. इस प्रकार पूर्ण बहुमत मिल गया. इस बात से मालवीय जी की महानता का जीता जागता सबूत मिलता है.

'भारतवर्ष केवल हिंदुओं का देश नहीं है. यह तो मुस्लिम, ईसाई और पारसियों का भी देश है. यह देश तभी समुन्नत और शक्तिशाली हो सकता है, जब भारतवर्ष की विभिन्न जातियाँ और यहाँ के विभिन्न संप्रदाय पारस्परिक सद्भावना और एकात्मकता के साथ रहें. जो भी लोग इस एकता को भंग करने का प्रयास करते हैं, वे केवल अपने देश के ही नहीं, वरन् अपनी जाति के भी शत्रु हैं.'

आज के इस युग में मानवता के शत्रु धर्म, जाति, वर्ण, भाषा तथा सीमाओं का अस्त्र-शस्त्र लिए अपने स्वार्थ के लिए शांति भंग कर रहे हैं. विश्व में आतंक फैला रहे हैं. यह समय है, समस्त संसार के बुद्धिजीवी आगे बढ़कर अपने बीच छुपे हुए मानवता के दुश्मनों का सामना करें, न ही अपने धर्म को छोड़ें और ना ही किसी के धर्म को छेड़ें. यदि हम 'अमन की आशा' को परवान चढ़ा सकें तो मेरे विचार से इससे बढ़कर पंडित मदन मोहन मालवीय जी को श्रद्धांजलि नहीं हो सकती.

◆◆◆

इस युग में मानवता के शत्रु धर्म, जाति, वर्ण, भाषा तथा सीमाओं का अस्त्र-शस्त्र लिए अपने स्वार्थ के लिए शांति भंग कर रहे हैं. विश्व में आतंक फैला रहे हैं. यह समय है, जब बुद्धिजीवी आगे बढ़े और मानवता के दुश्मनों का सामना करें. वे न अपना धर्म छोड़ें और न ही किसी के धर्म को छेड़ें.

हिन्दी के पितामह

महामना पं. मदन मोहन मालवीय

■ *महाकवि प्रो. हरिशंकर आदेश, कैनेडा*

मातृ-भूमि, मातृ-भाषा एवं मातृ-संस्कृति के स्तम्भ महामना पं. मदन मोहन मालवीय का नाम स्मरण आते ही दृष्टि-जगत के समक्ष एक ऐसी भव्य आकृति आकर उपस्थित हो जाती है, जो सौम्य भी है प्रखर भी; जो शांत भी है मुखर भी; जो धीर भी है गंभीर भी; जो अदम्य साहसी भी है वीर भी; जिसके नयनों से प्रकाश झरता है; जिसके आनन पर प्रभा है तथा मुखमण्डल के चतुर्दिक् एक विचित्र विभा विद्यमान है. जिसके शीश पर सुचारु रूप से बांधी गई पगड़ी शोभायमान है, स्कंधों पर स्कंधावरण है. पंडित मदन मोहन मालवीय संज्ञा है एक ऐसे व्यक्ति की जो अत्यन्त निर्भीक, दूरदर्शी एवं दृढ़ संकल्प का धनी था. एतदर्थ उन्हें मदन मोहन मालवीय न कह कर महामना पं. मदन मोहन मालवीय कहा जाता था. मेरे विचार में उन्हें व्यक्ति कहना उनकी गरिमा के अनुकूल नहीं होगा अतएव उन्हें महापुरुष कहना ही अधिक उपयुक्त होगा. वास्तव में वे केवल महापुरुष ही नहीं अपितु युगपुरुष भी थे. जहां महात्मा गांधी जैसे युगपुरुष ने भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता तथा सामाजिक विषमताओं के प्रति आन्दोलन किया वहीं महामना पं. मदन मोहन मालवीय ने उनका सहयोग करते हुए केवल राजनीतिक स्वतंत्रता एवं सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध ही विशद संघर्ष नहीं किया अपितु भारतीयों को विदेशियों की मानसिक दासता से मुक्त करने के आन्दोलन का भी संचालन किया. वह आन्दोलन था भाषा का, शिक्षा का. वे पूर्ण परिचित थे कि जिस जन-समुदाय, राष्ट तथा संस्कृति की भाषा नष्ट हो जाती है, वह जन-समुदाय, राष्ट्र तथा संस्कृति अधिक काल तक अपनी सांस्कृतिक अस्मिता की सुरक्षा नहीं कर सकता. अतएव उन्होंने भारत के अधिकाधिक जनों की भाषा हिन्दी के महत्व को समझा और उसकी सुरक्षा, प्रचार एवं प्रसार में प्राणपण से जुट गए.

प्रयाग की पावन भूमि पर जब सारा पाश्चात्य संसार ईसा का जन्म दिन बड़े समारोह पूर्वक मनाता है, उस दिन ही सन् १८६१ ई. में मदन मोहन मालवीय का भी पदार्पण इस संसार में हुआ था. प्रयाग के इस परम पावन पुत्र ने उच्च शिक्षा प्राप्त करके अपनी रुचि के अनुसार शिक्षण क्षेत्र में प्रवेश किया. वे अपने अध्यापन काल के मध्य में समय निकाल कर लेखन कार्य की ओर अग्रसर हुए. उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण लेख लिखे जो देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए. हिन्दी प्रदीप के सम्पादक पं. बालकृष्ण भट्ट मालवीय जी को निरन्तर लेखन की प्रेरणा देते रहे. हिन्दी प्रदीप में ही मालवीय जी के अधिक लेख प्रकाशित हुए. यही समय था जब उन्होंने अपने लेखों द्वारा हिन्दी के लिए जन-जागृति उत्पन्न की. अपने समकालीन समस्त वरिष्ठ नेताओं की भांति महामना मदन मोहन मालवीय जी का भी अटल विश्वास था हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा तथा संपर्क की भाषा बन सकती है.

> *प्रयाग के इस परम पावन पुत्र ने उच्च शिक्षा प्राप्त करके अपनी रुचि के अनुसार शिक्षण क्षेत्र में प्रवेश किया. वे अपने अध्यापन काल के मध्य में समय निकाल कर लेखन कार्य की ओर अग्रसर हुए.*

पं. मदन मोहन मालवीय अखिल भारतीय कांग्रेस के स्थाई सदस्य थे. कांग्रेस के द्वितीय अखिल भारतीय अधिवेशन १८८६ के समय वे कालाकांकर के राजा रामपाल सिंह के सम्पर्क में आए. राजा रामपाल सिंह मालवीय जी के व्यक्तित्व एवं प्रतिभा से इतने अधिक प्रभावित एवं आविर्भूत हुए कि उन्होंने पं. मदन

मोहन मालवीय जी से 'हिन्दुस्तान' नामक पत्र के संपादक का उत्तरदायित्व ग्रहण करने का प्रबल अनुरोध किया. मालवीय जी राजा जी के विश्वास एवं आग्रह के समक्ष नतमस्तक हो गए तथा उन्होंने हिन्दुस्तान के संपादक पद का भार ग्रहण कर लिया. प्रत्येक भारतीय परिचित है कि हिन्दुस्तान एक अत्यन्त लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित पत्र था. उसका संपादक होना बड़े गौरव का विषय था. मालवीय जी ने अपनी संपूर्ण योग्यता एवं क्षमता से कार्य किया तथा हिन्दुस्तान को अधिकाधिक लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित पत्र बनाया. इसी स्थल से मालवीय जी के जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण मोड़ आया और वे पत्रकारिता की दिशा में मुड़ गए.

मालवीय जी मूलत: एक शिक्षक थे, शिक्षाविद् थे. जिस प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने अनुभव किया था कि भारत की अधिकांश जनता भूखी है अत: प्रथम उसे भोजन मिलना चाहिए. इसीलिए उन्होंने कहा था कि रोटी ही भगवान है. इसी प्रकार महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी ने जन-जन का नैरक्षर्य देखकर निश्चय किया कि सर्वप्रथम जनता को शिक्षित होना चाहिए. उन्होंने अवलोकन किया कि भारत की अधिकांश जनता निरक्षर तथा गंवार है. जो पढ़-लिख सकते हैं, उन्हें उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त करने की कोई व्यवस्था एवं साधन उपलब्ध नहीं हैं. अत: उनके मस्तिष्क में एक विद्यालय स्थापित करने का विचार उत्पन्न हुआ. कालान्तर में इसी विचार ने विद्यालय से महाविद्यालय तथा महाविद्यालय से विश्व विद्यालय का रूप धारण कर लिया. इसी विद्यालय की स्थापना के लिए प्रचारार्थ उन्होंने 'अभ्युदय' नामक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया. अभ्युदय के प्रारंभिक काल में पं. मदन मोहन मालवीय स्वयं उसके संपादक थे. अभ्युदय पत्र दो वर्ष तक साप्ताहिक रूप में चलता रहा परन्तु दो वर्ष व्यतीत होते ही दैनिक पत्र बन गया. पत्रकारिता के क्षेत्र में मालवीय जी ने कई कीर्तिमान स्थापित किए. भारत के अत्यन्त लोकप्रिय दैनिक पत्रों में लीडर तथा हिन्दुस्तान टाइम्स की संस्थापना का श्रेय मालवीय जी को ही है.

महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी ने अपने स्वप्न को पूर्ण किया तथा १९१६ ई. में काशी हिन्दू विश्व विद्यालय की स्थापना की. जो आधुनिक भारत ही नहीं संपूर्ण एशिया का सर्वाधिक महत्वपूर्ण विश्व विद्यालय है, जिसकी गणना संसार के महान विश्व विद्यालयों में की जाती है. इस विश्व विद्यालय के लिए मालवीय जी ने क्या नहीं किया? इसका अपना एक पृथक इतिहास है. जिसके उल्लेख से लेख का कलेवर अधिकाधिक स्थूल होने का भय है. उनके हिन्दी प्रेम का एक उल्लेखनीय उदाहरण है कि वे काशी हिन्दू विश्व विद्यालय के कुलपति होकर भी दीक्षान्त समारोहों में अपना मूल भाषण हिन्दी भाषा में ही दिया करते थे. उन्हें अपने नाम से पूर्व डॉक्टर अथवा अन्य किसी उपाधि के स्थान पर पंडित संयुक्त करना अत्यन्त प्रिय था. उनकी मान्यता थी कि उनके लिए पंडित से अधिक गरिमामयी अन्य कोई उपाधि नहीं हो सकती.

अपने आरंभिक जीवन में वे सार्वजनिक जीवन से पृथक रहते थे. उनके सार्वजनिक जीवन में आने को दो प्रमुख कारण थे. प्रथम कारण था अंग्रेज़ी तथा उर्दू का प्रभुत्व तथा द्वितीय कारण था भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के मूल तत्वों की सुरक्षा करना एवं उन्हें प्रोत्साहन देना. पं. मदन मोहन मालवीय रूढ़िवादी हिन्दू थे. वे आचरण की पवित्रता तथा धार्मिक कर्मकाण्ड के प्रबल पक्षपाती थे. वे स्वामी दयानन्द तथा उनके आर्य समाज द्वारा चलाए गए हिन्दी भाषा आन्दोलन में सदा साथ रहे परन्तु धर्म के क्षेत्र में वे स्वामी दयानन्द के विचारों से सर्वथा असहमत थे. वे मूर्ति पूजन तथा अन्य परम्पराओ में पूर्ण विश्वास रखते थे. मालवीय जी भारतीय संस्कृति के महान समर्थक थे. वस्तुत: आर्य समाज की विचारधारा का विरोध करने के लिए उन्होंने जनमत-संग्रह करने का प्रयत्न किया. इसी संदर्भ में उन्होंने प्रथम भारत धर्म महामण्डल की स्थापना की तथा कालान्तर में अखिल भारतीय सनातन धर्म सभा का संस्थापन संभव हुआ. धर्म प्रचार के

वे काशी हिन्दू विश्व विद्यालय के कुलपति होकर भी दीक्षान्त समारोहों में अपना मूल भाषण हिन्दी भाषा में ही दिया करते थे. उन्हें अपने नाम से पूर्व डॉक्टर अथवा अन्य किसी उपाधि के स्थान पर पंडित संयुक्त करना अत्यन्त प्रिय था.

संदर्भ में ही उनकी प्रेरणा से मर्यादा सनातन धर्म तथा विश्वबंधु नामक पत्र की स्थापना हुई. उन्होंने सनातन धर्म संग्रह नामक एक ग्रंथ भी प्रकाशित करवाया परन्तु उसका स्तर सराहनीय नहीं था.

पं. मदन मोहन मालवीय हिन्दी के प्रथम वरिष्ठ नेता थे, जिन्होंने स्पष्ट रूप से हिन्दी-आन्दोलन का सूत्रापात किया तथा हिन्दी को उसका यथोचित स्थान दिलवाया. मालवीय जी की हिन्दी सेवाओं में जिस कार्य की सर्वोपरि गणना की जाती है वह है उत्तरप्रदेश के न्यायालयों तथा राजकीय कार्यालयों में हिन्दी को व्यावहारिक भाषा के रूप में स्वीकृत कराना है. मालवीय जी ने यह आन्दोलन १८९० ई. में चलाया. उन्होंने देखा कि न्यायालयों तथा राजकीय कार्यालयों में केवल उर्दू को ही मान्यता प्राप्त थी. उर्दू में ही सारा कार्य होता था. उन्होंने तत्कालीन गौरांग शासको को जन-संग्रह एकत्रित करके तर्कसहित एक पत्र लिखा कि पक्षिमोतर प्रदेश तथा अवध की प्रजा में शिक्षा का फैलना इस समय सबसे आवश्यक कार्य है और गुरुतर प्रमाणों से यह सिद्ध किया जा चुका है कि इस कार्य में सफलता तभी प्राप्त होगी, जब कचहरियों और सरकारी दफ्तरों में नागरी अक्षर जारी किये जायेंगे. अत्एव अब इस शुभ कार्य में बिलम्ब नहीं होना चाहिए. सन् १९०० ई. में उनका यह निवेदन तत्कालीन गवर्नर ने स्वीकार कर लिया और हिन्दी को न्यायालयों एवं राजकीय कार्यालयों में स्थान मिल गया. यह थी हिन्दी की प्रथम विजय.

मालवीय जी ने हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के लिए ठोस कार्य किए. वे हिन्दी सुरक्षा एवं प्रचार आन्दोलन के प्रथम नायक थे. उन्होंने ऐसी हिन्दी संस्थाओं की स्थापना में पूर्ण सहयोग दिया जो हिन्दी प्रचार के अतिरिक्त हिन्दी प्रकाशन का कार्य भी कर सकें.

हिन्दी को बाहरी उपकरणों अथवा शक्तियों से कदापि भय नहीं है, भय है तो स्वजनों से, जो हिन्दी के समर्थक है.

१८९३ ई. में महामना मालवीय जी के सहयोग से काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई. मालवीय जी काशी नागरी प्रचारिणी सभा के प्रवर्तकों में से एक थे. उन्होंने सभा को उसके हिन्दी-पुस्तकों के प्रकाशन, शोध कार्य तथा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार कार्य में पूर्ण सहयोग दिया. वे सभा के एक सुदृढ़ स्तम्भ माने जाते थे. वे यावज्जीवन काशी नागरी प्रचारिणी सभा का सुचारु मार्गदर्शन करते रहे.

यह उनके प्रयत्नों का ही फल था कि १९१० ई. में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की स्थापना हुई. साहित्य सम्मेलन का प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन काशी में आयोजित किया गया था. इस अधिवेशन के सभापति मालवीय जी ही थे. उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित हिन्दी तथा पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा प्रतिपादित हिन्दुस्तानी का डटकर विरोध किया. मालवीय जी विशुद्ध हिन्दी के समर्थक थे. उनका विश्वास था कि जब हिन्दी स्वयं में इतनी समृद्ध एवं स्वतंत्रता साथ रखती है तो उसके स्वरूप को विकृत क्यों किया जाए? आज भी यह समस्या अत्यन्त ज्वलंत रूप लेकर हिन्दी के समक्ष खड़ी हुई है. संप्रति लगभग हिन्दी का प्रत्येक लेखक, कवि, संपादक, समालोचक, निबंधकार, पत्रकार एवं व्याख्यानदाता हिन्दी में अन्य भाषाओं का अनमेल एवं अनावश्यक मिश्रण करके उसके वर्चस्व को प्रदूषित करने में अपना गौरव समझता है. वह विस्मरण कर बैठता हैं कि भाषा के अनेक रूप एवं स्तर होते हैं : आभिजात्य वर्ग की भाषा - अनभिजात्य वर्ग की भाषा, विद्वानों की भाषा - अविद्वानों की भाषा, जनसाधारण की भाषालोक भाषा तथा अनपढ़ गंवारों की भाषा है. आज केवल शासन तंत्र ही नहीं अपितु प्रबुद्ध साहित्यकार भी इन विभिन्न स्तरों को अनुपातहीन रूप में मिश्रित करके एक स्वादहीन खिचड़ी पकाने में संलग्न है. कतिपय जन भाषा को जितना भी विद्रूप कर सकें स्वयं उतना ही गौरवान्वित समझते हैं, हिन्दीवाला ही हिन्दी का शत्रु बनता जा रहा है. संप्रति हिन्दी को बाहरी उपकरणों अथवा शक्तियों से कदापि भय नहीं है, भय है तो स्वजनों से, जो हिन्दी के समर्थक हैं, जो हिन्दी के नायक हैं, उन्नायक हैं, हिन्दी के मठाधीश हैं. विशुद्ध हिन्दी का प्रतिपादक उपहास का केन्द्र बनता जा रहा है. उर्दू तो हिन्दुस्तान की पुत्री होने का लाभ उठा कर हिन्दी की धमनियों में प्रवाहित होने

वाले रक्त को प्रदूषित करती ही रही है, अधुना आंग्ल भाषा केवल हिन्दी ही नहीं अपितु संसार की प्रत्येक भाषा को चुनौती देकर अपना आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास कर रही है. आंग्ल भाषा के इस अवैध प्रवेश को मान्यता देने वाले हिन्दीवाले ही हैं. अधुना प्रत्येक हिन्दी भाषी जब कोई वाक्य बोलता है तो उसमें कोई न कोई अहिन्दी शब्द विशेषत: अंग्रेज़ी का शब्द अवश्य होता है. दिल्ली में बोली जानेवाली हिन्दी में तो प्राय: अस्सी प्रतिशत शब्द मुख्यत: आंग्ल भाषा अथवा अन्य भाषाओं के होते हैं. अस्तु, लगभग यही स्थिति थी महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी के समय में. मेरा शीश उनके प्रति श्रद्धा से नत हो जाता है, उन्होंने प्राणपण से विकृत हिंदी के स्थान पर विशुद्ध हिंदी का प्रतिपादन किया. अद्य हिंदी को आवश्यकता है ऐसे ही शूरवीर महनायक की.

शिक्षा के क्षेत्र में केवल विश्वविद्यालय की स्थापना करके ही वे शांत नहीं बैठ गए. मालवीय जी सनातन धर्म के महान नेता थे. उन्होंने भारत के अनेक नगरों में केवल सनातन धर्म की संस्थाएं ही स्थापित नहीं कीं अपितु सनातन धर्म कॉलेजों की स्थापना भी करवाई. इन महाविद्यालयों में कानपुर, लाहौर तथा अलीगढ़ के सनातन धर्म विद्यालय उल्लेखनीय हैं. कालान्तर में ये संस्थाएं भारत के नगर-नगर में स्थापित की गईं. जब श्रमिक आप्रवासी ट्रिनीडाड- टुबेगो, गयाना, सुरिनाम, मॉरीशस तथा फीजी आदि देशों में गए, वे वहां

> *मालवीय जी ने केवल शिक्षा का उद्घोष ही नहीं किया अपितु शिक्षा का माध्यम हिन्दी होना चाहिए का शंखनाद भी किया.*

भी ये संस्कार अपने साथ ले गए. वर्तमान समय में इन पांचों ही देशों के अतिरिक्त अमेरिका, कनाडा, इंगलैंड आदि अनेक देशों में सनातन धर्म सभा नामक संस्थाएं सराहनीय कार्य कर रही हैं. ट्रिनीडाड में सनातन धर्म विद्यालय भी सुचारु रूप से कार्य कर रहे हैं तथा महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं.

मालवीय जी ने केवल शिक्षा का उद्घोष ही नहीं किया अपितु शिक्षा का माध्यम हिन्दी होना चाहिए का शंखनाद भी किया. इस विषय में उनके विचार थे : भारतीय विद्यार्थियों के मार्ग में आनेवाली वर्तमान कठिनाइयों का कोई अन्त नहीं है. सब से बड़ी कठिनता यह है कि शिक्षा का माध्यम हमारी मातृभाषा न होकर एक अत्यन्त दुरूह विदेशी भाषा है. सभ्य संसार के किसी भी अन्य भाग में जन-समुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है.

मालवीय जी ने अनेक संपादकीय तथा अन्य लेख लिखे परन्तु दु:ख का विषय है कि वे उपलब्ध नहीं हैं. मेरी मान्यता है कि मालवीय जी ने भले ही अधिक लेख न लिखे हों, कविताएं नहीं रची हों, साहित्य का सृजन नहीं किया हो परन्तु उन्होंने सहस्रों लेखक, कवि, साहित्यकार तथा पत्रकार उत्पन्न कर दिए तथा आगामी पीढ़ियों के लिए भी साहित्य-सृजन एवं प्रकाशन का मार्ग प्रशस्त कर दिया. यह सत्य है कि उन्होंने विशाल ग्रंथों का प्रणयन नहीं किया, परन्तु उनके हिन्दी, पत्रकारिता एवं शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्य ही उनके स्मृति-स्तम्भ हैं. काशी हिन्दू विश्व विद्यालय, सनातन धर्म महाविद्यालयों, काशी नागरी प्रचारिणी सभा तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, लीडर तथा हिन्दुस्तान टाइम्स जैस पत्रों आदि उनकी सेवाओं, योगदान अथवा उपलब्धियों के कालजयी कार्यस्तम्भ अथवा शिलालेख हैं. हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान के प्रबल समर्थक एवं उद्घोषक महामना मालवीय जी का योगदान सकारात्मक और आत्मिक अधिक है. मदन मोहन मालवीय जैसे महापुरुष शताब्दियों में जन्म लेते हैं तथा समय की पुकार को स्वीकार कर नकारात्मक परिस्थितियों का मुख मोड़ कर जन साधारण का पथ-प्रदर्शन करते हैं.

महात्मा मोहनदास कर्मचंद गांधी, राजेन्द्र प्रसाद, पं. जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, वीर सावरकर तथा जयप्रकाश नारायण आदि नेताओं एवं महापुरुषों के युग में महामना पं. मदन मोहन मालवीय अपना एक विशेष स्थान रखते हैं. वे हिन्दी के प्रथम नायक थे, उद्धारक थे, जिन्होंने यावज्जीवन देश, धर्म तथा हिन्दी की सेवा की.

◆◆◆

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

संपादक
प्रेम जनमेजय

व्यंग्य की गंभीर सोच को समर्पित
देश-विदेश में प्रशंसित
पिछले छह वर्षों से निरंतर प्रकाशित पत्रिका

हर अंक विशिष्ट अंक

पहली बार 'तट की खोज' स्तंभ के अंतर्गत
व्यंग्य के ज्वलंत मुद्दों पर बहस का आरंभ

व्यंग्य के मनोविज्ञान, मिथकीय प्रयोग, व्यंग्य कविता, समकालीन परिदृश्य,
साहित्य में माफिया आदि अनछुए विषयों पर शीर्षस्थ विद्वानों के वैचारिक आलेख

त्रिकोणीय में
व्यंग्य कृति/व्यंग्यकार पर विभिन्न कोणों से चर्चा
विभिन्न भारतीय भाषाओं में व्यंग्य के परिदृश्य पर आलेख
रवींद्रनाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल, नरेंद्र कोहली पर विशेषांक प्रकाशित

साथ में हमारे समय की विसंगतियों पर प्रहार करती,
प्रखर, वैविध्यपूर्ण व्यंग्य रचनाएँ

संपर्क :
73 साक्षर अपार्टमेंट्स,
ए-3 पश्चिम विहार नई दिल्ली-110063

अपनी बात शुरू करने से पहले मैं भाई गजेन्द्र सोलंकी का आभार ज़रूर व्यक्त करना चाहती हूँ, जिन्होंने मुझे 'हिंदी चेतना' के मुख्य संपादक श्री श्याम त्रिपाठी जी से मिलवाया. उन दिनों मैं अपनी पत्रिका निकालना चाहती थी और उसका एक डेमो निकाल भी चुकी थी और वह कॉपी विज्ञापन कंपनियों को वितरण होने ही वाली थी कि गजेन्द्र भाई ने मुझे रोक लिया और कहा कि मैं त्रिपाठी जी के साथ मिल कर काम कर लूं... अलग-अलग पत्रिकाएँ निकालने से हिंदी प्रेमियों की ताकत बँटती है. मुझे गजेन्द्र जी की बात और श्याम भाई का स्वभाव पसंद आया. 'हिंदी चेतना' के साथ मैं जुड़ गई. अब तो कई वर्ष हो गए हैं. पर इतने वर्षों में मैंने श्याम भाई की आँखों में एक ही सपना देखा, महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी पर विशेषांक निकालना. किसी तरह वह विशेषांक टलता रहा. श्याम त्रिपाठी जी एक तरह से मालवीय जी के अनुयायी हैं, हिंदी प्रेमी, हिंदी भक्त और हिंदी के लिए जुनूनी. संसार के ऐसे जनपद में जहाँ हिंदी के नाम पर एक डॉलर इकट्ठा करना, पहाड़ खोद दूध की नदी बहाने जैसा है, वहाँ 12 वर्षों से हर चुनौती का सामना करते हुए 'हिंदी चेतना' पत्रिका निकाल रहे हैं.

दिसम्बर 2009 में मुझे 'हिंदी चेतना' का संपादक बनाया गया और जनवरी 2010 में मैंने कार्यभार सम्भाला तो सबसे पहले मैंने उनके सपने को साकार करने की सोची. पंडित मदनमोहन मालवीय विशेषांक की घोषणा कर दी. बाज़ारवादी सोच ने इसे बेवकूफी कहा. बहुत से साहित्यकारों ने इसे मेरी अनुभवहीनता और पत्रकारिता के मापदण्डों से अनभिज्ञता कहा. अन्य विषयों पर विशेषांक निकालने के विकल्प दिए गए. अधिकतर लेखक व्यस्त हो गए. मालवीय जी पर लिख कर वे अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहते थे. प्रसन्नता की बात यह है कि भारत और विदेशों से कई ऐसी प्रतिभाएँ आगे आईं जिनके बारे में हमने सोचा ना था और इस विशेषांक के साथ जुड़ गईं. कई वर्ष पहले काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सामने खड़े होकर देखा गया श्याम त्रिपाठी जी का सपना विशेषांक के रूप में आप के हाथों में है और आप की प्रतिक्रियाओं का इंतज़ार है. आपके द्वारा लिखा गया एक-एक शब्द हमारे लिए बेशकीमती है.

आपकी मित्र
सुधा ओम ढींगरा

CARPET PLUS

SAVE UP TO 70%
LUXURIOUS CARPETS
ORIENTAL RUGS

Commercial &
Residential
Installations

F ***•Installation***
R ***•Underpad***
E ***•Delivery***
E ***•Shop at Home***

Tel: (416) 661 4444
Tel: (416) 663-2222
Fax: (905) 264-0212

Vinyl Tiles

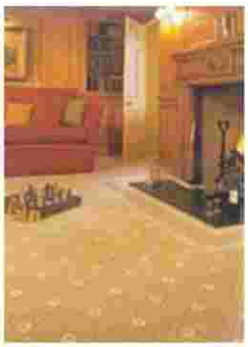

Broadloom

180 Winges Rd. Unit 17-19
Woodbridge,
Ontario L4L 6C6

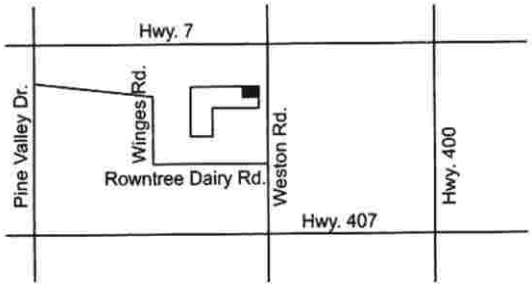

ॐ

"बिजली की रोशनी से रात्रि का कुछ अँधकार दूर हो सकता है, किन्तु सूर्य का काम बिजली नहीं कर सकती। इसी भाँति हम विदेशी भाषा के द्वारा सूर्य का प्रकाश नहीं कर सकते। साहित्य और देश की उन्नति अपने देश की भाषा द्वारा ही हो सकती है।"

– पंडित महामना मदनमोहन मालवीय

REPPA®
FLAGS & SOUVENIRS

A division of
FCA Group Canada Inc.

Exceptionally fine source of more then 600 titles of International, Canadian and Provincial Pins, Flags, Crests, Caps, etc.

QUALITY CUSTOM WORK AVAILABLE FOR ALL OF THE ABOVE

83, Queen Elizabeth Blvd.
Toronto, ON. Canada
M8Z 1M5

Phone : 416-599-FLAG (3524)
info@reppa.ca
www.reppa.ca